



जनवरी 2023

विक्रम



भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद
Physical Research Laboratory, Ahmedabad



भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्

ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



पीआरएल में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां

निदेशक की कलम से



हमारा देश भारत सदैव संस्कृति, कला तथा विज्ञान के क्षेत्र में समृद्ध राष्ट्र रहा है। हिंदी भारत की राजभाषा होने के साथ हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है।

हमारी विक्रम पत्रिका निःसंदेह संगठनपरक गतिविधियों की संवाहक है एवं यह विक्रम साराभाई द्वारा स्थापित ऐतिहासिक वैज्ञानिक संस्थान भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (पीआरएल) की छवि को प्रतिबिंबित करती है। साथियों, पीआरएल ने राजभाषा को प्रारंभ से ही पूर्ण हृदय के साथ अपनाया है एवं उसे अपनी कार्य-संस्कृति का अभिन्न अंग बनाया है। वर्ष 2021-22 के दौरान, भारत सरकार की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन स्तर पर पीआरएल को प्रथम पुरस्कार प्राप्त होना इस बात का प्रमाण है। हम अपने नगर राजभाषा समिति के सदस्य कार्यालयों से भी उतने ही हार्दिक रूप से जुड़े हुए हैं, और इस क्रम में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 79वीं बैठक पीआरएल में रखी गई, ताकि राजभाषा के कार्यान्वयन एवं संवैधानिक राजभाषा नीतियों के विषय में समिति के प्रचार-प्रसार के कार्य में एक लघु योगदान हमारी ओर से भी हो सके।

भारत सरकार के आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत "डिजिटल इंडिया सप्ताह" मनाया गया जिसमें पीआरएल के तकनीकी विशेषज्ञताएं एवं उनके उपयोग के विषय में सप्ताहव्यापी कार्यक्रम आयोजित किये गए थे। पीआरएल के विभिन्न परिसरों में डॉ. विक्रम साराभाई के अंतरिक्ष दर्शन की झलक देखने को मिलती है। थलतेज परिसर में हमारे ग्रहीय विज्ञान प्रभाग ने "एस्टेरॉयड (क्षुद्रग्रह) दिवस" मनाया एवं विज्ञान के इस बहुत ही अनोखे पहलू से पीआरएल स्टाफ एवं उनके परिवारजनों को भी अवगत कराया। "वाईपीओ गुजरात चैप्टर" द्वारा पीआरएल का परिभ्रमण, संस्थान के व्यवसायिक कुशलता की ओर एक कदम है। भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक एवं प्रख्यात अंतरिक्ष वैज्ञानिक "डॉ. विक्रम साराभाई की 102वीं जन्म जयंती" 12 अगस्त 2022 बहुत ही निष्ठा एवं श्रद्धा के साथ पालित हुई। इस महत्वपूर्ण अवसर पर "गुजरात राज्य स्तर पर आयोजित हिंदी निबंध प्रतियोगिता" के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। पीआरएल विज्ञान, राजभाषा, संस्कृति के साथ-साथ खेल-कूद को भी बढ़ावा देता है, एवं समय-समय पर खेलों का आयोजन भी करता है। "रस्सा कसी" प्रतियोगिता ऐसा ही एक आयोजन है, जिसमें बल के साथ-साथ टीम भावना का भी सृजन होता है, एवं सभी सदस्यों ने इस अंतर-प्रभाग खेल का आनंद उठाया। वर्ष 2022 से संपूर्ण राष्ट्र आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, इसी कड़ी में भारत सरकार के "हर-घर तिरंगा" अभियान के अंतर्गत सभी स्टाफ सदस्यों को राष्ट्र ध्वज वितरित किया गया। हमारे कार्यालय में "स्वतंत्रता दिवस" पूर्ण मर्यादा के साथ मनाया गया एवं इस दिन स्वतंत्रता सेनानियों की स्मृति में बच्चों के लिए "फैंसी ड्रेस कार्यक्रम" का भी आयोजन किया गया। पीआरएल में विज्ञान और राजभाषा के प्रोत्साहन के साथ पीआरएल सदस्यों के स्वास्थ्य संबंधी दायित्वों का भी निष्ठापूर्वक पालन किया। अगस्त-सितंबर 2022 के दौरान क्रमशः "कोविड टीकाकरण अमृत महोत्सव" एवं निःशुल्क बूस्टर डोज़ लगवाने की व्यवस्था की गई। हमारे कार्यालय में "हिंदी माह" के कार्यक्रम 16 सितंबर 2022 को प्रारंभ हुए एवं राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए इस दौरान अनेक हिंदी कार्यक्रम, प्रतियोगिताएँ, कविता पाठ, वैज्ञानिक प्रस्तुति, शब्दप्रश्नोत्तरी, वर्ग पहेली, हिंदी टिप्पण, आलेखन लघुनाटिका आदि जैसे कार्यक्रम मंचस्थ किये गए। इस वर्ष एक व्याख्यान का भी आयोजन किया गया जिसमें स्कूली बच्चों, विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राओं को आमंत्रित किया गया। पीआरएल के स्टाफ एवं उनके परिवार जनों ने एक अद्भुत, अविस्मरणीय शाम का आनंद उठाया जिसमें पीआरएल सदस्यों एवं उनके परिवारजनों ने अपने गायन कौशल का परिचय दिया। वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्र में "स्कॉप छात्र सम्मेलन" का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न संस्थानों से आए हुए शोधार्थियों ने विषय संबंधी प्रगति एवं उपलब्धियों के बारे में चर्चा की।

31 अक्टूबर को सरदार वल्लभभाई पटेल के जन्म जयंती के अवसर पर "एकता के लिए - साइक्लिंग, दौड़, पदयात्रा, प्रभातफेरी" का आयोजन किया गया। समय-समय पर पीआरएल द्वारा विभिन्न प्रकार के ओपन हाउस कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, एवं इस वर्ष "पीआरएल थलतेज में विज्ञान सुविधाओं और प्रायोगिक प्रदर्शनों के लिए ओपन हाउस" का आयोजन किया गया। पीआरएल को अंतरिक्ष विज्ञान का पालना भी कहा जाता है, एवं डॉ. विक्रम साराभाई द्वारा परिकल्पित अंतरिक्ष विज्ञान कार्यक्रम के एक महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में "ASPEX पेलोड (आदित्य-L1 मिशन)" के STEPS सबसिस्टम को 23 नवंबर 2022 को हरी झंडी दिखाई गई एवं अंतरिक्ष विभाग के केंद्र को आगे की तकनीकी प्रक्रिया के लिए सौंपा गया। इस महत्वपूर्ण अवसर पर पीआरएल प्रबंध परिषद के अध्यक्ष, श्री ए.एस. किरण कुमार जी के कर-कमलों द्वारा STEPS सबसिस्टम को हरी झंडी दिखाई गई। इसके एक और सबसिस्टम "SWIS-ASPEX" को 19 दिसंबर 2022 को रवाना किया गया। पीआरएल महिलाओं के उत्थान एवं उनके कल्याण तथा सुरक्षा के लिए बद्धपरिकर है, एवं इसी श्रृंखला में नवंबर तथा दिसंबर के महीने में क्रमशः "अंतरराष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन दिवस" एवं "कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम, 2013" संबंधी कार्यक्रम आयोजित किए गए।

आशा है विभिन्न साहित्यिक रचनाओं, कविताओं, महान व्यक्तियों के जीवन चरित्र, विज्ञान एवं विज्ञान से जुड़ी जानकारी, वर्ग पहेली एवं राजभाषा संबंधी विभिन्न विषयों से सुसज्जित विक्रम पत्रिका का यह अंक आपको रोचक लगेगा।

संपादक मंडल को उनके प्रयासों के लिए हार्दिक शुभकामना देते हुए, मैं विक्रम पत्रिका का यह अंक आप सभी को सादर प्रस्तुत करता हूँ!!

आनिल सारदा

अनिल भारद्वाज

संदेश



प्रिय पाठक

आज मुझे आप सभी के समक्ष, विक्रम पत्रिका का यह अंक प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है। इस पत्रिका से कार्यालय के सदस्यों को अपनी सृजनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त होता है। भाषा प्रांतों को जोड़ने का माध्यम है, और हमारी संस्कृति का प्रतीक है। हिंदी भाषा ने अपनी विकास यात्रा के एक हजार से अधिक वर्षों की अवधि में अनेक चुनौतियों और संघर्षों का सामना किया है। आज हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ता जा रहा है। हिंदी एक सर्वप्रिय वातावरण प्रभावी भाषा है जो एक प्रांत के लोगों को दूसरे प्रांत के लोगों से जुड़ने में सहायक है। विशेष रूप से इसकी झलक कार्यालय में विभिन्न प्रांतों से आए हुए सदस्यों के व्यक्तित्व में प्रतिविम्बित होता है। सभी किसी न किसी प्रकार से हिंदी भाषा के माध्यम से अपना कर्तव्य निष्पादन करने में सक्षम होती हैं।

हम हर बार ही यह प्रयास करते हैं कि विक्रम पत्रिका का अंक रोचक एवं ज्ञानवर्धक रहे और इसमें आप सभी हिंदी भाषा की उन्नति में सीधा योगदान दे रहे हैं। विक्रम पत्रिका का यह अंक भी बहुत सरल, एवं चित्ताकर्षक है। मैं आशा करता हूँ कि यह नवीन अंक आप सभी को हमारे कार्यालय में हो रही दैनंदिन गतिविधियों की एक झलक प्रस्तुत करेगा, एवं आपको इनके विषय में जानकर प्रसन्नता होगी। राजभाषा की दृष्टि से भी यह अंक सूचनापरक बनाया गया है।

हिंदी भाषा की उन्नति एवं प्रगति में यह कदम बहुत ही सराहनीय है और मैं विक्रम पत्रिका की सफलता के लिए सभी लेखकों एवं सम्पादन मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

धन्यवाद।

प्रो. आर.डी. देशपांडे
रजिस्ट्रार, पीआरएल



सोम कुमार शर्मा

संपादकीय

प्रिय पाठक गण

भारत बहुभाषिक एवं बहुसांस्कृतिक देश तो है ही, विश्व का महत्वपूर्ण गणतंत्र भी है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोने और स्वतंत्रता की लहर पूरे देश में प्रसारित करने में हिंदी भाषा की अहम भूमिका रही है। सरिता की भांति भाषा भी सहज होती है। सरिता जिस दिशा, जिस गांव, जिस देश बहती है, वहीं की मिट्टी उसमें समाहित हो जाती है और बहकर कहीं और चली जाती है। इसी तरह भाषाएं निरंतर प्रवाहित होती रहती हैं, समाज भाषाओं के लिए आधार मात्र का काम करता है। चूंकि देश के अधिकांश हिस्सों में हिंदी बोली और समझी जाती है, इसलिए हिंदी भाषा राजभाषा के रूप में स्थापित की गई है। यह मात्र सम्मान नहीं वरन् इस बात का प्रमाण है कि हिंदी न केवल बहुसंख्यक भारतीयों की भाषा है बल्कि यह अन्य भाषा समुदायों को जोड़ने वाली अनिवार्य कड़ी है जो देश के सामासिक व सामूहिक रूप को साकार करती है, अर्थ व मूल्य देती है।

भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (पीआरएल) में सभी बहु संस्कृति में विश्वास रखते हैं एवं यही कारण है कि यहाँ हिंदी को प्रत्येक सदस्य द्वारा ससम्मान अपनाया जाता है। हिंदी के साथ क्षेत्रीय भाषाओं को भी सम्मान दिया जाता है। हिंदी में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता/कार्यक्रम एवं उनमें सदस्यों की उत्साही प्रतिभागिता, राजभाषा के प्रति सकारात्मक भावना की द्योतक हैं। इससे कार्यालय में सरल एवं सहज हिंदी भाषा का विकास होता है।

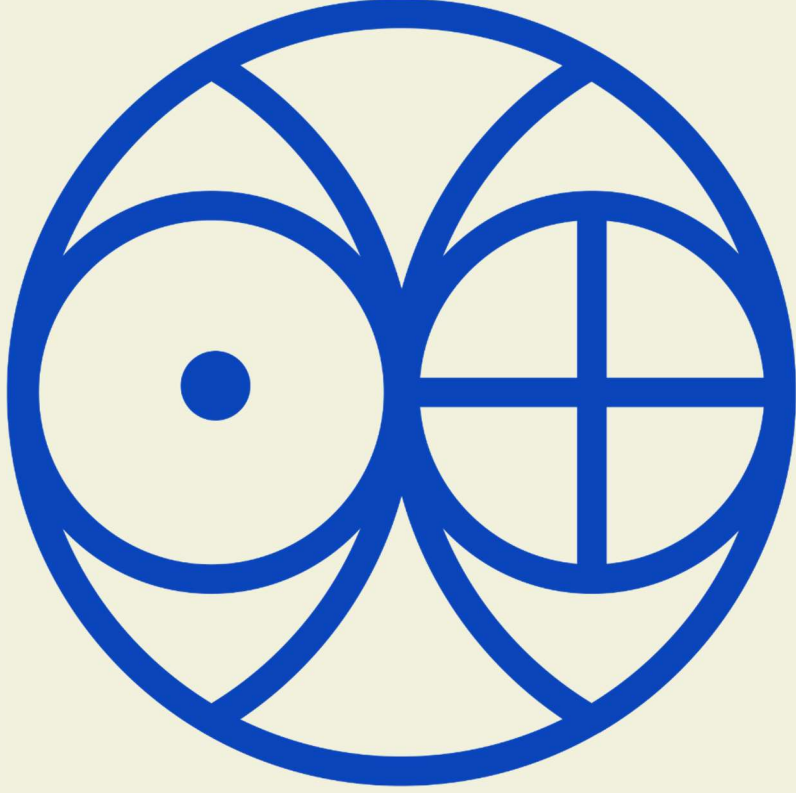
विक्रम पत्रिका के इस अंक में वैज्ञानिक, साहित्यिक, दार्शनिक, रोचक एवं जनोपयोगी स्वरचित कृतियों का समावेश किया गया है। यह पत्रिका पी.आर.एल. सदस्यों के परिवारजनों के विचार, लेखन एवं चित्र कला इत्यादि का भी उन्मुक्त हृदय से आवाहन करती है। इसमें कार्यालय के प्रायः सभी कार्यक्रमों की झलकियां प्रस्तुत की गई हैं जिसके माध्यम से हम अपनी धरोहर एवं संस्कृति को सभी के साथ साझा करते हैं।

हमें विश्वास है कि विक्रम पत्रिका का यह अंक पाठकों को अत्यंत पसंद आएगा। पत्रिका के आगामी अंकों को और आकर्षक, उपयोगी एवं रोचक बनाने के लिए आप सभी के विचार, प्रतिक्रियाएं एवं सुझाव सदैव आमंत्रित हैं। इसी आशा के साथ विक्रम पत्रिका का वर्तमान अंक आप सभी को सादर प्रेषित है।

भवदीय

प्रो. सोम कुमार शर्मा (प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, विक्रम पत्रिका संपादन समिति)

पीआरएल का प्रतीक चिह्न



पीआरएल के	PRL research
अनुसंधान क्षेत्र में	encompasses
समाविष्ट हैं	the Earth
पृथ्वी एवं	the Sun
सूर्य	immersed in the fields
जो निमीलित हैं	and radiations
चुम्बकीय क्षेत्र एवं विकिरण में	reaching from and to
अनंत से अनंत तक	infinity
जिन्हें प्रकट कर सकती है	all that man's curiosity
मानव की जिज्ञासा एवं विचार शक्ति	and intellect can reveal

इस अंक में

क्रमांक	विषय सूची	लेखक	पेज संख्या
1	यूरेनियम की उत्सर्जन रेखाओं द्वारा पारस स्पेक्ट्रोग्राफ का परिशुद्ध तरंगदैर्घ्य अंशांकन	ऋषिकेश शर्मा	1-8
2	पीआरएल का अमृत व्याख्यान	सौजन्य: लोकेश कुमार साहू	9-15
3	साइबर सुरक्षा जागरूकता - अनजान मैसेज या कॉल	सौजन्य: जिगर ए. रावल एवं संगणक केंद्र सदस्य	16
4	हॉट सीट तक का मेरा सफर: कौन बनेगा करोड़पति 2022	स्नेहा नायर	17-22
5	भालू से एक मुलाकात	जूना शील	23-24
6	चित्र कला	मलिका सिंघल	25
7	गुजरात राज्य स्तरीय हिंदी निबंध प्रतियोगिता के परिणाम	सौजन्य: हिंदी अनुभाग	26-27
8	राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम रिपोर्ट	सौजन्य: रुमकी दत्ता	28
9	हर घर तिरंगा	सौजन्य: अभिषेक	29-30
10	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	सौजन्य: रुमकी दत्ता	31
11	रस्साकसी	सौजन्य: आ.का.अ.म. स.	32-33
12	103वीं विक्रम साराभाई जयंती	सौजन्य: रुमकी दत्ता	34
13	स्वतंत्रता दिवस समारोह	सौजन्य: आ.का.अ.म. स.	35
14	उदयपुर सौर वेधशाला में आयोजित ट्रेज़र हंट प्रतियोगिता	सौजन्य: आ.का.अ.म. स.	36
15	कोविड टीकाकरण अमृत महोत्सव	सौजन्य: दिव्यांग जी अड्यालकर	37
16	पीआरएल में हिंदी माह कार्यक्रम - एक सिंहावलोकन	सौजन्य: रुमकी दत्ता	38-39
17	उदयपुर सौर वेधशाला में आयोजित हिंदी पखवाड़ा समारोह	सौजन्य: अभिषेक	40-41

18	शुक्र ग्रह-विज्ञान सम्मेलन	सौजन्य: जयेश पबारी	42-44
19	पीआरएल परिसरों में स्वच्छता अभियान	सौजन्य: आ.का.अ.म. स.	45-46
20	राष्ट्रीय एकता दिवस	सौजन्य: आ.का.अ.म. स.	47-48
21	ASPEX पेलोड के प्रणालियों का प्रस्थान	सौजन्य: दिब्बेंदु चक्रवर्ती	49-50
22	कंठस्थ अनुवाद टूल कार्यशाला	सौजन्य: रुमकी दत्ता	51
23	अंतर्राष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन दिवस	सौजन्य: नंदिनी राव	52-53
24	संविधान दिवस	सौजन्य: हर्षा परमार	54
25	हिंदी दिवस	सौजन्य: रुमकी दत्ता	54
26	स्वर्गीय प्रो. विक्रम ए साराभाई और स्वर्गीय प्रो. के.आर. रामनाथन की पुण्यतिथि	सौजन्य: हर्षा परमार	55
27	विश्व हिंदी दिवस	सौजन्य: रुमकी दत्ता	56
28	थलतेज परिसर में आज़ादी का अमृत महोत्सव समिति पुस्तक प्रदर्शनी	सौजन्य: आ.का.अ.म. स.	57
29	पीआरएल में आयोजित ट्रेज़र हंट प्रतियोगिता	सौजन्य: आ.का.अ.म. स.	58-59
30	शहीद दिवस	सौजन्य: हर्षा परमार	60
31	सतर्कता जागरूकता सप्ताह	सौजन्य: रुमकी दत्ता	60
32	फुटबॉल टूर्नामेंट 2023	सौजन्य: चन्दन कुमार	61
33	कार्यशाला "खगोल रसायन और सौर मंडल में गर्त" और एस्टेरॉयड डे	बालामुरुगन शिवरामन और विजयन एस.	62-64
34	राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक	सौजन्य: रुमकी दत्ता	65
35	हिंदी में कार्य करने के लिए अंतरिक्ष राजभाषा कार्यान्वयन योजना (सोलिस) पुरस्कार	सौजन्य: रुमकी दत्ता	66-67
36	चित्र कला	वृंदा रस्तोगी	68

37	हिंदी साहित्य लेखन का एक महत्वपूर्ण भाग - अलंकार	सौजन्य: रुमकी दत्ता	69
38	लीला: हिंदी भाषा शिक्षण टूल	सौजन्य: राजभाषा वेबसाइट	70
39	बधाई संदेश	सौजन्य: विविध	71
40	हिंदी शिक्षण योजना/हिंदी टंकण	सौजन्य: रुमकी दत्ता	72
41	ऑनलाइन हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी	सौजन्य: रुमकी दत्ता	73
42	स्मृति आधारित अनुवाद टूल (कंठस्थ) सॉफ्टवेयर	सौजन्य: रुमकी दत्ता	73
43	पंचम वर्ण लुप्त क्यों हो रहा है?	सौजन्य: रुमकी दत्ता	74-75
44	किसान	अनीशा कुल्हारी	76
45	मेरा गाँव	ज्योति लिम्बात	77-78
46	मेरी चिड़िया	हर्षा परमार	79
47	मेरा ईश्वर मेरे पास है	नम्रता हेमल शाह	80
48	जीवनसंगिनी	नीरज रस्तोगी	81
49	उन दिनों की बात	संदीप भगवानदास मंगलानी	82-83
50	भेद न हो नर-नारी का	निर्भय उपाध्याय	84
51	पीआरएल द्वारा आयोजित गुजरात राज्यस्तरीय निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं द्वारा दिया गया फीडबैक	सौजन्य: रुमकी दत्ता	85-86
52	पी.आर.एल. परिवार	सौजन्य: प्रशासन अनुभाग	87-88





ऋषिकेश शर्मा

यूरेनियम की उत्सर्जन रेखाओं द्वारा पारस स्पेक्ट्रोग्राफ का परिशुद्ध तरंगदैर्घ्य अंशांकन

प्रस्तावना:-

पारस, एक उच्च विभेदनशील खगोलीय स्पेक्ट्रोग्राफ है, जो कि दृश्य बैंड में कार्य करता है तथा इसका प्राथमिक वैज्ञानिक उद्देश्य बाह्य ग्रहों की खोज करना है। इस तरह के खोज कार्य के लिए सितारों के रेडियल वेग के अति परिशुद्ध मापन की आवश्यकता होती है, तथा यह उस उपकरण के तरंग दैर्घ्य अंशांकन पर निर्भर करती है। अतएव, पारस जैसे उपकरणों में उनका परिशुद्ध तरंग दैर्घ्य अंशांकन बहुत ही महत्वपूर्ण एवं चुनौतीपूर्ण होता है। आज के दौर में इसकी तकनीक शुरुआती समय से उपयोग होने वाली आयोडीन सेल तथा होलो कैथोड लैम्प्स (एचसीएल) से अति उन्नत लेज़र फ्रीक्वेंसी कोंब तक पहुंच गयी है। इसके बावजूद एचसीएल का उपयोग उनके अपेक्षाकृत लंबे जीवन, आसान हैंडलिंग, सरल संरचना और कम रखरखाव के कारण खगोलीय स्पेक्ट्रोग्राफ में व्यापक रूप से किया जाता है। किसी तत्व के एचसीएल से उत्सर्जित रेखाओं के माध्यम से इसका तरंग दैर्घ्य अंशांकन एक सरलतम तकनीक है। सामान्यतः इस कार्य के लिए थोरियम-ऑर्गन (थार) एचसीएल का उपयोग किया जाता रहा है। थोरियम धातु एकल समस्थानिक है, जिसमें संकीर्ण रेखाएँ और एक सघन स्पेक्ट्रम होता है, जिसके कारण इसका उपयोग उच्च विभेदनशील खगोलीय स्पेक्ट्रोग्राफ के तरंग दैर्घ्य अंशांकन के लिए किया जाता है। इसके उपयोग से पूर्व में पारस द्वारा 1 मी./से. की दीर्घकालिक स्थिरता दर्शायी गयी है। लेकिन पिछले कुछ समय से 99.99% शुद्ध थोरियम के लैम्पों का उत्पादन बंद हो गया है, तथा इनके स्थान पर थोरियम-ऑक्साइड मिश्रण के लैंप बाज़ार में उपलब्ध हैं। थोरियम-ऑक्साइड के कारण लैंप से थोरियम के साथ साथ ऑक्साइड के बैंड भी उत्सर्जित होते हैं, जिसकी वजह से पारस एवं इसके जैसे स्पेक्ट्रोग्राफों का परिशुद्ध तरंग दैर्घ्य अंशांकन करना असंभव हो गया है, और अंततः इससे स्पेक्ट्रोग्राफ की त्रैज्यिक वेग परिशुद्धता कम हो जाती है। इस समस्या के समाधान के लिए हमने आवर्त सारणी की ऐक्टिनाइड श्रृंखला के अध्ययन से पाया कि यूरेनियम, थोरियम के सबसे करीब तत्व है, तथा शुद्ध प्राकृतिक यूरेनियम से बने हुए यूरेनियम-ऑर्गन (यूआर) एचसीएल, बाजार में सरलता से उपलब्ध हैं। अतः हमने थार लैंप के स्थान पर यू आर लैंप का उपयोग करने का निर्णय लिया। हालांकि इस कार्य से पहले सरमिंटो एवं साथी ने 2018 में यह प्रकाशित किया था की दृश्य बैंड में थोरियम की जगह यूरेनियम का उपयोग किया जा सकता है, लेकिन उनके द्वारा पहचान की गयी यूरेनियम की उत्सर्जन रेखाएँ पूर्णतः पारस स्पेक्ट्रोग्राफ में प्रसारित नहीं होती है। साथ ही, यूरेनियम रेखाओं द्वारा कभी भी किसी उच्च विभेदनशील स्पेक्ट्रोग्राफ की दीर्घकालिक स्थिरता की जांच नहीं की गई है। इस कार्य का मुख्य उद्देश्य तरंग दैर्घ्य क्षेत्र 3809 - 6833 ऐंग्स्ट्रॉम में यूरेनियम उत्सर्जन रेखाओं की पहचान करना एवं उनके माध्यम से पारस स्पेक्ट्रोग्राफ के परिशुद्ध अंशांकन के द्वारा 1 -3 मीटर प्रति सेकंड की रेडियल वेग स्थिरता को स्थापित करना है (शर्मा एवं चक्रवर्ती 2021)।

प्रयोगात्मक सेटअप:-

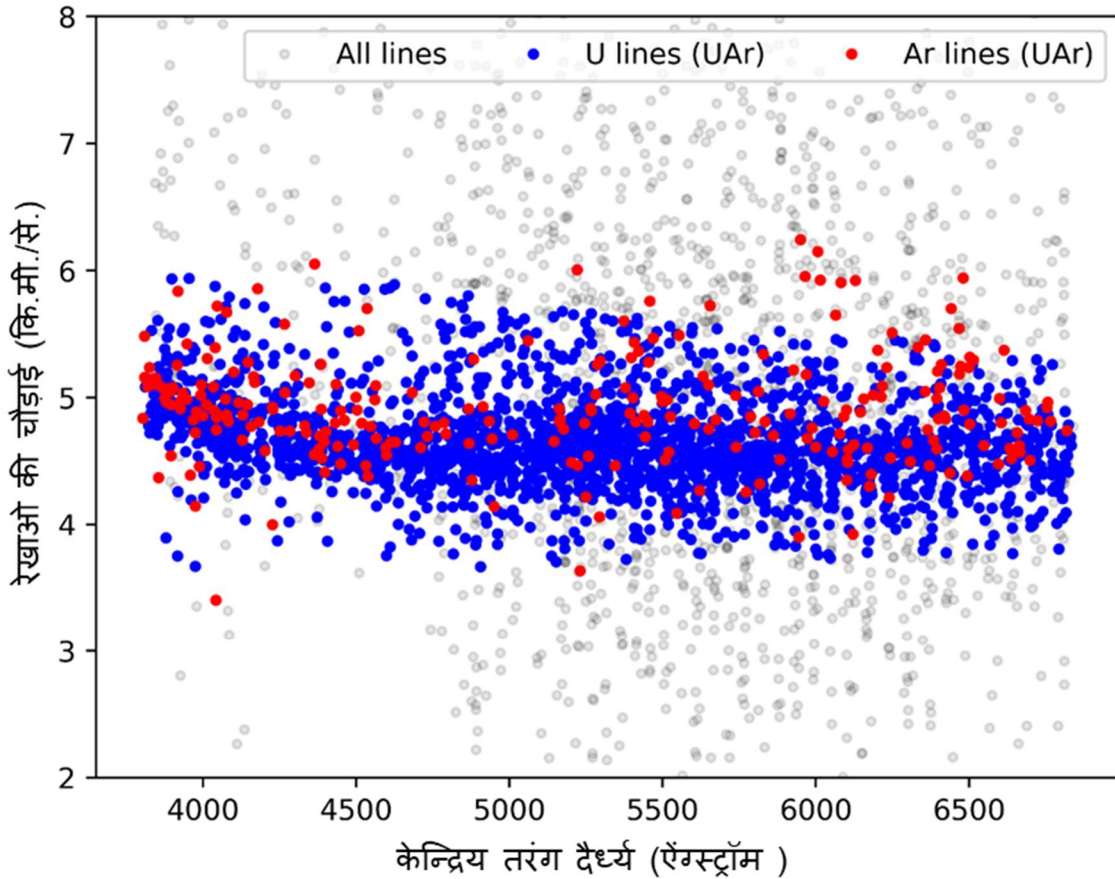
हमने इस पूरे प्रयोग के लिए पीआरएल की गुरुशिखर वेधशाला, माउंट आबू में 1.2 मीटर व्यास की दूरबीन से युग्मित पारस स्पेक्ट्रोग्राफ तथा PHOTRAN PTY LTD. द्वारा निर्मित यूआर एचसीएल का उपयोग किया। पारस एक तंतु-भारित स्पेक्ट्रोग्राफ जो कि एक ऊष्म नियंत्रित वातावरण (एक निर्वात कक्ष) में रखा हुआ है जिसकी प्रायिकतम विभेदनशीलता लगभग 67000 है। स्पेक्ट्रोग्राफ को दो तंतुओं द्वारा एक साथ प्रकाशित किया जा सकता है (अ तथा ब तंतु)। निर्वात कक्ष के भीतर, दोनों तंतुओं से आने वाली प्रकाश किरणों को एक ऑफ-एक्सिस परवलयिक दर्पण द्वारा समांतर किया जाता है, फिर एक इशेल ग्रेटिंग द्वारा विवर्तित जाता है। इस विवर्तित प्रकाश की किरणों को पुनः एक प्रिज्म द्वारा अनुप्रस्थ विवर्तित किया जाता है। अंत में अनुप्रस्थ विवर्तित किरणों को 4000 X 4000 चित्रांशों के संसूचक व्यूह (सीसीडी) पर पुनः-बिम्बित किया जाता है, जिसके एक चित्रांश का भौतिक आकार 15 माइक्रोन है एवं वह लगभग 1145 मी./से. वेग के संगत होता है। पारस के बारे में अधिक जानकारी चक्रवर्ती एवं साथी (2014) से प्राप्त की जा सकती है।

यूरेनियम उत्सर्जन रेखाओं की पहचान एवं उनका चयन:-

हमने यूरेनियम की उत्सर्जन रेखाओं की पहचान करने के लिए पहले एक यू आर लैंप का स्पेक्ट्रम पारस से अधिग्रहित किया और उसे पहले से ही अंशांकित किये हुए थार लैंप के स्पेक्ट्रम से अंशांकित किया। इस प्रयोग के दौरान अधिग्रहित किये गए सभी द्विविमीय बिम्बो को पारस पाइप लाइन कोड का उपयोग करके एक विमीय स्पेक्ट्रम में परिवर्तित किया गया है। सर्वप्रथम, यू आर स्पेक्ट्रम में उपस्थित सभी उत्सर्जन रेखाओं जैसे लक्षणों को स्पेक्ट्रम के प्रत्येक बिंदु के स्लोप के आधार पर चिन्हित किया। इस प्रक्रिया के लिए हमने केवल उन ही लक्षणों पर विचार किया जिनका संकेत-रव अनुपात 30 से अधिक था, ताकि केंद्रीय तरंग दैर्ध्य के आकलन में अनिश्चितता को 1 मिली एंग्स्ट्रॉम (मि. ऐं.) से कम रखा जा सके। इन सभी चिन्हित लक्षणों को गॉसियन फलन से फिट करके इन के सभी प्राचल जैसे इनकी चौड़ाई, केंद्र आदि निर्धारित किये। इस तरह कुल 4500 के आसपास उत्सर्जन जैसे लक्षण हमें पूरे स्पेक्ट्रम में मिले। इन लक्षणों में से विशेषतः यूरेनियम से संबंधित लक्षणों की छंटनी के लिए हमने विभिन्न गुण धर्मों का उपयोग किया, जिनका उल्लेख इस प्रकार है :-

1. चूँकि ये सभी लक्षण यूरेनियम के साथ साथ लैंप में भरी हुई बफर गैस आर्गन के भी हो सकते हैं तथा यह पूर्व विदित है कि ऑर्गन की रेखाएं परिशुद्ध तरंग दैर्ध्य अंशांकन के लिए उपयुक्त नहीं हैं, इसलिए उनको हटाना आवश्यक था। हमने लोवीस एवं पेपे (2007) की आर्गन रेखाओं की सूची से तुलना करने से कुल 4500 लक्षणों में से 270 लक्षण आर्गन के निर्धारित किये तथा ऐसे लक्षणों को हटा दिया।

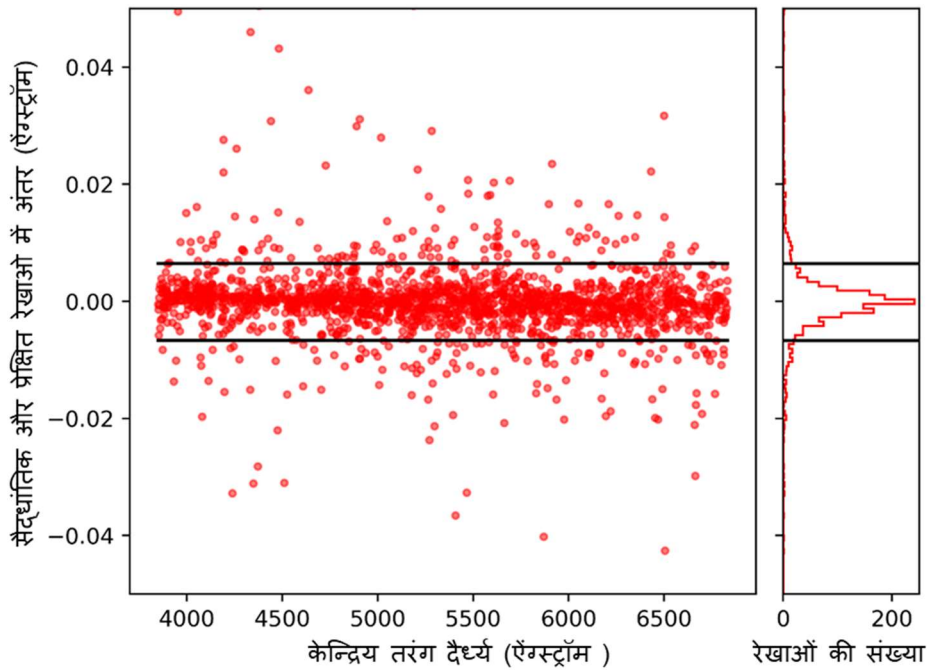
2. यू आर स्पेक्ट्रम में मौजूद सम्मिश्रित (ब्लेंडेड) रेखाएं, रेखाओं के केंद्र के मापन में प्राप्त अनिश्चितताओं से अधिक केंद्र में विस्थापन उत्पन्न कर सकती हैं। इसलिए, ऐसे लक्षणों की पहचान करके उनको सूची से हटाना बेहतर था। इसके लिए हमने रेखाओं की चौड़ाई (एफडब्ल्यूएचएम) का उपयोग किया। चूँकि पारस स्पेक्ट्रोग्राफ एक निर्धारित विभेदन (67000, 4.5 कि.मी./से.) पर कार्य करता है, इसलिए हमने उन ही रेखाओं का चयन किया जिनकी चौड़ाई पारस की निर्धारित विभेदन क्षमता के इर्द-गिर्द हो (यानी [3.75 - 6.0] कि.मी./से.)। इस परास से अधिक चौड़ाई वाली रेखाएं सम्मिश्रित तथा कम चौड़ाई वाली रेखाएं, वास्तविक पारगमन न होकर संसूचक व्यूह के आर्टिफिक्ट्स के कारण हो सकती हैं। चित्र 1 में, हमने सभी 4500 रेखाओं के साथ के साथ साथ आर्गन तथा इस सोपान में चयनित रेखाओं क्रमशः लाल व नीले रंग से प्रदर्शित किया है।



चित्र 1 :- सभी 4500 रेखाओं की चौड़ाई (एफडब्ल्यूएचएम)

3. इसके अलावा, चूंकि इस कार्य का मुख्य उद्देश्य यू आर स्पेक्ट्रम का उपयोग करके पारस स्पेक्ट्रोग्राफ का सटीक तरंग दैर्घ्य अंशांकन करना था, इसलिए हम उन ही रेखाओं पर सख्ती से विचार किया जो अपने निकटतम रेखाओं से उचित तरह से पृथक है तथा जिनको आसानी से एकल-शिखर एक-आयामी गॉसियन फंक्शन फिट किया जा सके। इसका तात्पर्य उन रेखाओं से है जिनके निकटतम रेखा कम से कम 2-विभेदन अंश (2 गुना एफडब्ल्यूएचएम) दूर हो। इस प्रक्रम तक छंटनी करने के पश्चात हमारे पास केवल 1815 रेखाएं शेष रही, जो संभवतः यूरेनियम से ही उत्सर्जित थी।

4. फिर भी, अंतिम चरण में हमने साहित्य में पहले से प्रकाशित यूरेनियम के ऊर्जा स्तरों का उपयोग करते हुए, इसके संभावित पारगमनों की गणना की और इसे सूचीबद्ध करके सैद्धांतिक यूरेनियम सूची तैयार की। पिछले सोपान तक शेष 1815 रेखाओं की इस सैद्धांतिक सूची से तुलना करके प्रेक्षित रेखाओं और उनके समकक्ष सैद्धांतिक रेखाओं के बीच अंतर ज्ञात किया, जिसे चित्र 2 में दर्शाया गया है। इस अंतर के वितरण का माध्य -0.15 मि. ऐं. तथा मानक विचलन (सिग्मा) 2.1 मि. ऐं. आकलित किया। अंतिम यूरेनियम सूची के लिए हमने उन रेखाओं का ही चयन किया जिनका उनके समकक्ष सैद्धांतिक रेखा से अंतर, इस वितरण 3-सिग्मा यानी -0.15 ± 2.1 मि. ऐं. के भीतर पाया गया।



चित्र-2 :- सैद्धांतिक और प्रेक्षित यूरेनियम के 1815 रेखाओं के अंतर का वितरण।
दायीं पट्टिका में चित्रित आयतचित्र भी इसी वितरण को दर्शा रहा है।
दो कृष्ण वर्णीय रेखाएं वितरण की 3-सिग्मा सीमा को प्रदर्शित कर रहे हैं।

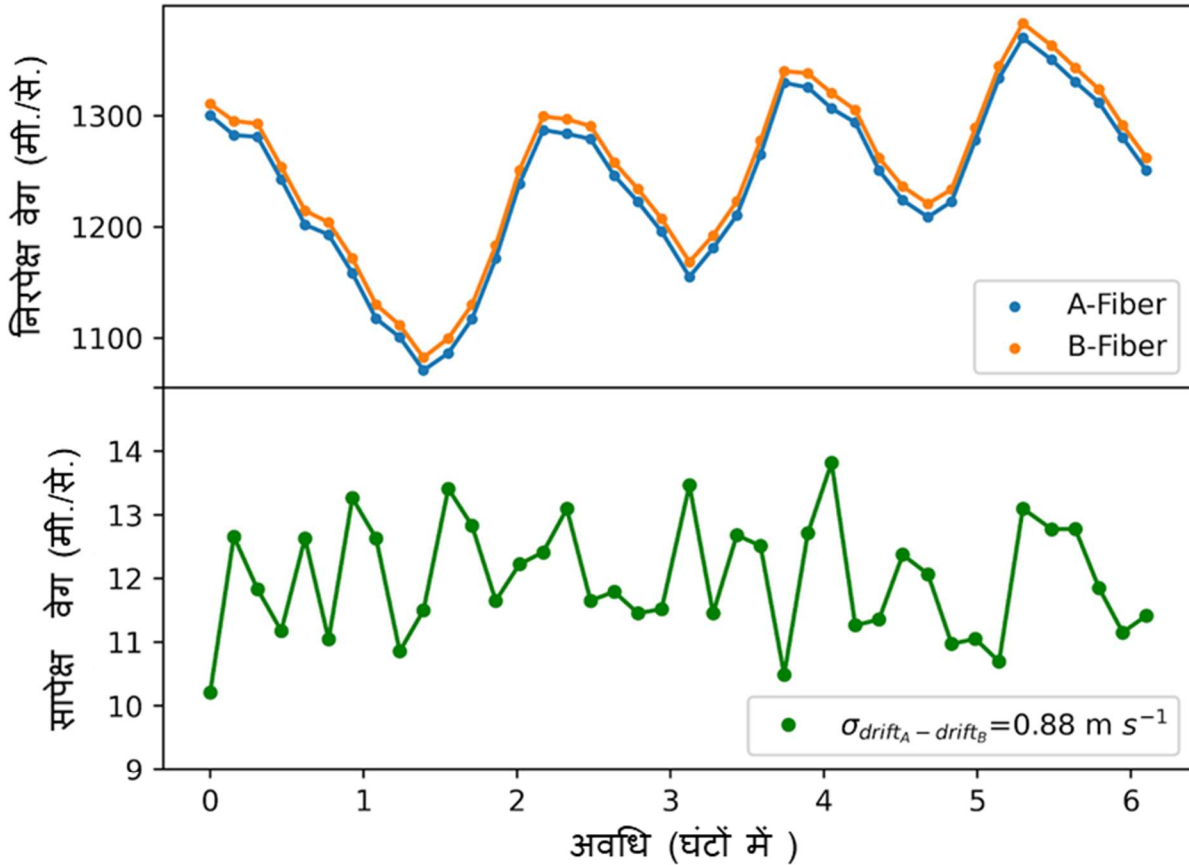
इस प्रकार से पारस स्पेक्ट्रोग्राफ से प्राप्त यू आर स्पेक्ट्रम में कुल 1540 यूरेनियम की उत्सर्जन रेखाएं पहचानी गयी, जिन्हें सूचीबद्ध करके अंतिम यूरेनियम सूची तैयार की गयी, इस सूची को शर्मा एवं चक्रवर्ती 2021 से एक्सेस किया जा सकता है। इस अंतिम सूची में सूचीबद्ध रेखाओं की अनिश्चितता 0.02 - 0.9 मि. ऐं. , क्रमशः सबसे दीप्त एवं सबसे मंद उत्सर्जनों के लिए मापी गयी । इसकी औसत माप की अनिश्चितता लगभग 0.28 मि. ऐं. (0.013 चित्रांश या 15 मी./से.) रही। प्रत्येक रेखा के केन्द्रक निर्धारण की माप अनिश्चितता में दो तत्वों का अहम योगदान है:- प्रथम, फिटिंग नॉइस एवं द्वितीय फोटोन शॉट नॉइस। पाल्मार 1980 द्वारा भी पूर्व में दी गयी यूरेनियम उत्सर्जनों की सूची एवं इस कार्य में प्रस्तुत सूची के तुलनात्मक अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि हमारी नयी सूची में रेखाओं को 7 गुना बेहतर सटीकता से मापा गया है।

परिणाम और चर्चा:-

इस तरह हमने नए यूरेनियम उत्सर्जनों का उपयोग करके पहले पारस स्पेक्ट्रोग्राफ से प्राप्त स्पेक्ट्रा का तरंगदैर्घ्य अंशांकन किया तत्पश्चात इन्हीं रेखाओं से स्पेक्ट्रोग्राफ की स्थायित्व की जांच की ([शर्मा एवं चक्रवर्ती 2021](#)) ।

हमने पहले लगभग 6.5 घंटों तक में लगातार 400 - 400 सेकंड के क्रमिक यू आर - यू आर प्रेक्षण किये, जिसमें पारस स्पेक्ट्रोग्राफ के दोनों तंतुओं को यूआर लैंप से प्रकाशित किया। इसका उपयोग सामान्यतः स्पेक्ट्रोग्राफ की अपवाह वेग की गणना करने के लिये किया जाता है जो कि उपकरण की आंतरिक स्थिरता को दर्शाता है। इस तरह अधिग्रहित स्पेक्ट्रा को नवीन यूरेनियम की रेखाओं द्वारा तरंगदैर्घ्य अंशांकित किया, जिसके लिए यूरेनियम रेखाओं की सूची को उनके समकक्ष पारस सीसीडी में संगत चित्रांश संख्या के साथ सूचीबद्ध करके एक टेम्पलेट बनाया गया और उसे पारस के तरंगदैर्घ्य अंशांकन के लिए उपयुक्त सॉफ्टवेयर में समावेशित किया। संक्षिप्त में, एक कोटि के स्पेक्ट्रम के लिए, उस विशिष्ट कोटि से संबंधित प्रत्येक यूरेनियम रेखा की नई चित्रांश स्थिति का अनुमान लगाया जाता है और फिर इन नए स्थितियों और टेम्पलेट में लाइनों के केंद्रीय तरंगदैर्घ्य पर एक तृतीयक घात बहुपद फिट किया जाता है। फिर उस बहुपद हल को पूरे कोटि के स्पेक्ट्रम पर लागू किया जाता है। सभी 70 कोटि के स्पेक्ट्रम के लिए यह प्रक्रिया दोहराई जाती है और उस तरह तरंग दैर्घ्य अंशांकन की प्रक्रिया संपन्न होती है। इसके पश्चात इन अंशांकित स्पेक्ट्रा से स्पेक्ट्रोग्राफ के अपवाह वेग की गणना की गयी, जिसके लिए हमने सभी यू आर स्पेक्ट्रम को यूरेनियम रेखाओं के द्वि-आधारी मास्क के साथ व्यक्ति-सह सम्बंधित किया। एक द्वि-आधारी मास्क एक तरह का टेम्पलेट स्पेक्ट्रम होता है जिसमें अनेक बॉक्स-आकृति के फलन समावेशित होते हैं, जो रेखाओं के केन्द्रक एवं उसके इर्द गिर्द एक विशेष विस्तार तक नियत मान एवं अन्य सभी जगह शून्य मान रखते हैं। इस तरह दोनों तंतुओं से प्राप्त निरपेक्ष अपवाह वेग एवं एक दूसरे के सापेक्ष अपवाह वेग को चित्र 3 में प्रदर्शित किया गया है। दोनों तंतुओं से प्राप्त निरपेक्ष अपवाह वेग का मान लगभग एक जैसा पाया गया तथा उनका १-सिग्मा प्रकीर्ण

~ 75 मी./से. था। लेकिन किसी भी खगोलीय स्पेक्ट्रोग्राफ की सीमान्त परिशुद्धता का आकलन निरपेक्ष अपवाह वेग के बजाए दोनों तंतुओं के परस्पर सापेक्ष अपवाह वेग (यानी (अ - ब)) से करना ज्यादा सटीक होता है ।

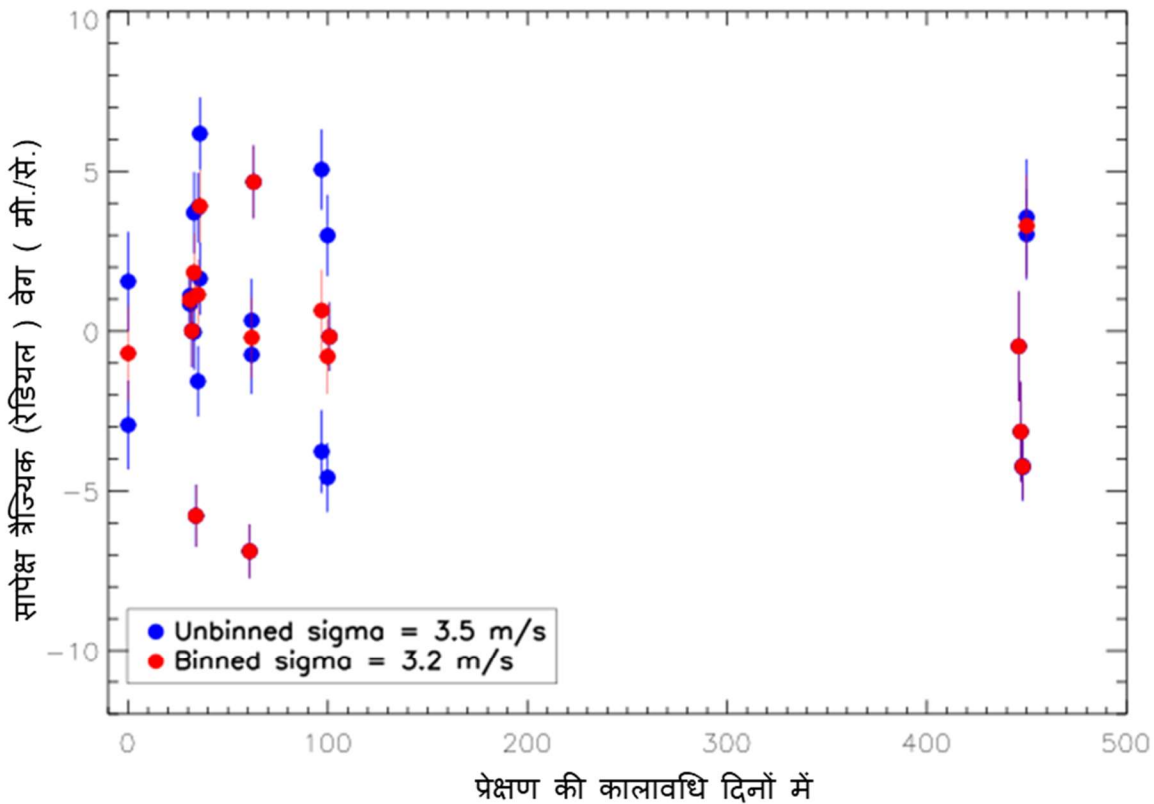


चित्र-3 :- यूरेनियम रेखाओ द्वारा आकलित निरपेक्ष (ऊपरी पट्टिका में) एवं सापेक्ष अपवाह वेग का मान। निरपेक्ष अपवाह वेग का दोनों तंतुओं में परिक्षेपण ~ 75 मी./से. तथा सापेक्ष वेग का परिक्षेपण ~ 88 से.मी./से. है।

इस सापेक्ष वेग का १-सिग्मा प्रकीर्णन हमने 88 से.मी./से. ज्ञात किया, जो कि मूलतः तरंग दैर्ध्य अंशांकन की अनिश्चितताओं को दर्शा रहा है । यह परिणाम पूर्व में पारस के लिए थार लैंप से आकलित मान से सुमेलित

होता है, और दर्शाता है कि थार लैंप से उत्सर्जित थोरियम रेखाओं के स्थान पर यू आर लैंप से उत्सर्जित यूरेनियम रेखाओं का उपयोग किया जा सकता है।

इसके अलावा हमने एक रेडियल वेग मानक सितारे (एच डी 55575) का लगभग 450 दिनों तक प्रेक्षण किया, जिसमें कुल 27 स्पेक्ट्रा अधिग्रहित किये। इस तरह के प्रेक्षण में एक तंतु को सितारे तथा समकालिक दूसरे तंतु को यू आर लैंप से प्रकाशित किया। इस सितारे पर 118 दिनों के दौरान सोफी द्वारा 3.4 मी./से. एवं पारस द्वारा थोरियम रेखाओं के उपयोग से 420 दिनों के लिए 3.1 मी./से. का रेडियल वेग परिक्षेपण प्राप्त किया है। इस सितारे के स्पेक्ट्रा को समकालिक अधिग्रहित यू आर स्पेक्ट्रा से तरंग दैर्ध्य अंशांकित



चित्र-4 :- मानक सितारे एचडी 55575 का 450 दिनों तक पारस स्पेक्ट्रोग्राफ से प्रेक्षित एवं मापन किया हुआ सापेक्ष रेडियल वेग। नीले डेटा बिंदु यूएआर स्पेक्ट्रा के साथ अंशांकित किए गए प्रत्येक स्पेक्ट्रा से मापित रेडियल वेग को, जबकि लाल डेटा बिंदु प्रत्येक प्रेक्षण की रात्रि के लिए औसत रेडियल वेग को दर्शाता है जिनका परिक्षेपण क्रमशः 3.5 और 3.2 मी./से. हैं।

किया गया। इस सितारे के त्रैज्यिक वेग की गणना एक जी2 जैसे सितारे के टेम्पलेट मास्क के साथ व्यक्ति सहसंबंध प्रक्रिया से की गयी। इस तरह प्राप्त सापेक्ष रेडियल वेगों को चित्र 4 में प्रदर्शित किया गया है। इस पूरे डाटा सेट के लिए यानी 450 दिन के त्रैज्यिक वेग परिक्षेपण 3.2 मी./से. प्राप्त हुआ, जो कि पूर्व में पारस के लिए थार लैंप से आकलित मान से सुमेलित होता है।

इस प्रकार से हमने इस कार्य में पारस स्पेक्ट्रोग्राफ से लिए गए यू आर लैंप के स्पेक्ट्रम से पहले यूरेनियम उत्सर्जनों की एक सूची तैयार की तथा उन उत्सर्जनों की सहायता से पारस स्पेक्ट्रोग्राफ प्राप्त स्पेक्ट्रा का तरंगदैर्घ्य अंशांकन किया। तत्पश्चात इन्हीं रेखाओं से स्पेक्ट्रोग्राफ की स्थायित्व की जांच की और यह दर्शाया की यूरेनियम रेखाओं से भी पारस जैसे स्पेक्ट्रोग्राफों में 1 -3 मी./से. या उससे बेहतर परिशुद्धता प्राप्त की जा सकती है। यह लेख SPIE-JATIS पत्रिका में प्रकाशित शोध पत्र [शर्मा एवं चक्रवर्ती 2021](#) पर आधारित है।





पीआरएल का अमृत व्याख्यान



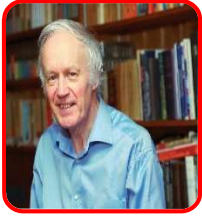

सौजन्य: लोकेश कुमार साहू



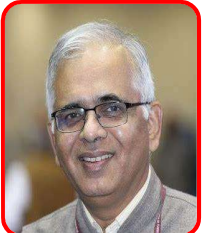

पी.आर.एल. के प्लेटिनम जयंती के उपलक्ष्य में एवं स्वतंत्रता के 75 वर्ष के अमृत महोत्सव पर हमारे संस्थान ने 04 अगस्त 2021 को 'पीआरएल का अमृत व्याख्यान' श्रृंखला का शुभारम्भ किया है। इस व्याख्यान श्रृंखला में देश-विदेश के ख्यातिप्राप्त वक्ताओं एवं वैज्ञानिकों द्वारा व्याख्यान दिए जा रहे हैं। ये व्याख्यान श्रृंखला ज्ञान-विज्ञान के साथ-साथ समसामयिक साहित्य, खेल-कूद, व्यवसाय, विधि, कला, साहित्य एवं संस्कृति, इत्यादि क्षेत्रों को सम्मिलित करती है। इस अंक में अगस्त 2022 – जनवरी 2023 तक प्रस्तुत हुए व्याख्यान के शीर्षक, तिथि, वक्ता एवं वक्ता के संबंधन के बारे में विवरण सम्मिलित की गई हैं।



क्रम संख्या	शीर्षक एवं तिथि Title & Date	वक्ता Speaker	संबंधन Affiliation	फ़ोटो Photo
1.	क्वांटम सिद्धांत का विकास और बेल असमानता की एक सरल व्युत्पत्ति Evolution of quantum theory & a simple derivation of bells inequality (03/08/2022)	प्रो. अजय घटक Prof. Ajoy Ghatak	राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, प्रयागराज, भारत और ऑप्टिक्स और फोटोनिक्स केंद्र, आईआईटी दिल्ली The National Academy of Sciences India, Prayagraj & Optics & Photonics Centre, IIT Delhi	
2.	विज्ञान और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियाँ Science and the Challenges of Climate Change (10/08/2022)	श्री कार्तिकेय साराभाई Mr. Kartikeya Sarabhai	निदेशक, पर्यावरण शिक्षा केंद्र, अहमदाबाद Director, Centre for Environment Education, Ahmedabad	
3.	समावेशी विज्ञान और रचनात्मक समाज को जोड़ने में नेतृत्व: शिक्षार्थियों के लिए पाठ Leadership in bridging inclusive science and creative society: lessons for learners (17/08/2022)	प्रो. अनिल गुप्ता Prof. Anil Gupta	संस्थापक, हनीबी नेटवर्क, एसआरआईएसटीआई, जीआईएन और एनआईएफ, विजिटिंग संकाय, आईआईएमए और आईआईटीबी और अकादमी प्रोफेसर, एसीएसआईआर Founder, Honey Bee Network, SRISTI, GIAN & NIF, Visiting Faculty, IIMA & IITB and Academy Professor, AcSIR	

4.	भूकंपीय अनुसंधान और गुजरात की पहल Seismological Research and Gujarat's Initiative (24/08/2022)	डॉ. सुमेर चोपड़ा Dr. Sumer Chopra	निदेशक, भूकंपीय अनुसंधान संस्थान, गांधीनगर Director, Institute of Seismological Research, Gandhinagar	
5.	सरस्वती नदी और सिंधु सभ्यता The Sarasvati River and the Indus civilization (31/08/2022)	प्रो. मिशेल डैनियो Prof. Michel Danino	अतिथि प्रोफेसर, मानविकी और सामाजिक विज्ञान, आईआईटी गांधीनगर Visiting Professor, Humanities and Social Sciences, IIT Gandhinagar	
6.	महासागर विज्ञान से ब्लू इकोनॉमी तक From Ocean Science to Blue Economy (07/09/2022)	डॉ. शैलेश नायक Dr. Shailesh Nayak	निदेशक, राष्ट्रीय प्रगत अध्ययन संस्थान, बेंगलुरु Director, National Institute of Advanced Studies, Bengaluru	
7.	ब्रह्मांड में अन्य संसार? हमारी पृथ्वी जैसे ग्रहों की खोज और... शायद जीवन को आश्रय देना! Other Worlds in the Cosmos? The Search for Planets Similar to our Earth and... perhaps Sheltering Life! (14/09/2022)	प्रो. मिशेल मेयर Prof. Michel Mayor	एमेरिटस प्रोफेसर, जिनेवा विश्वविद्यालय, स्विट्जरलैंड Emeritus Professor, University of Geneva, Switzerland	

8.	<p>सूर्य और अति-प्रज्वाल का खतरा Threat of the Sun and Superflares (21/09/2022)</p>	<p>प्रो. कजुनारी शिबाता Prof. Kazunari Shibata</p>	<p>एमेरिटस प्रोफेसर-क्योटो विश्वविद्यालय, और विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर-दोशिश विश्वविद्यालय Emeritus Professor-Kyoto University, and Distinguished Visiting Professor-Doshisha University</p>	
9.	<p>अंतरिक्ष: कम अन्वेषित प्रकाश आयाम Space: the less explored dimension of light (28/09/2022)</p>	<p>प्रो. सिद्धार्थ रामचंद्रन Prof. Siddharth Ramachandran</p>	<p>विशिष्ट प्रोफेसर, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, भौतिकी और पदार्थ विज्ञान, बोस्टन विश्वविद्यालय, बोस्टन, एमए, यूएसए Distinguished Professor, Electrical Engineering, Physics & Materials Science, Boston University, Boston, MA, USA</p>	
10.	<p>सूर्य पृथ्वी प्रणाली और अंतरिक्ष मौसम: एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण-भौतिकी SUN EARTH SYSTEM AND SPACE WEATHER: a historical approach-Physics (06/10/2022)</p>	<p>डॉ. क्रिस्टीन एमोरी-मज़ौडियर Dr. Christine Amory-Mazaudier</p>	<p>सोरबोन यूनिवर्सिटी, इकोले पॉलीटेक्निक, इंस्टीट्यूट पॉलीटेक्निक डी पेरिस, यूनिवर्सिटी पेरिस सैकले, ऑब्जर्वेटोएरे डी पेरिस, सीएनआरएस, लेबरटोएरे डी फिजिक डेस प्लास्मास, पेरिस, फ्रांस Sorbonne Université, Ecole polytechnique, Institut Polytechnique de Paris, Université Paris Saclay, Observatoire de Paris, CNRS, Laboratoire de Physique des Plasmas, Paris, France</p>	

11.	<p>परमाणु संलयन: भारतीय कार्यक्रम, आईटीईआर परियोजना और उससे परे</p> <p>Nuclear Fusion: Indian Program, ITER Project & Beyond (12/10/2022)</p>	<p>प्रो. शिशिर देशपांडे</p> <p>Prof. Shishir Deshpande</p>	<p>वरिष्ठ प्रोफेसर और प्रधान, फ्यूजन इंटरडिसिप्लिनरी साइंस प्रभाग, प्लाज्मा अनुसंधान संस्थान, गांधीनगर</p> <p>Sr. Professor and Head, Fusion Interdisciplinary Science Division, Institute for Plasma Research, Gandhinagar</p>	
12.	<p>ट्रेन 18/वंदे भारत परियोजना, आत्मनिर्भर भारत की भावना का कैसे लाभ उठाएं!</p> <p>Train 18/Vande Bharat Project, How to exploit the spirit of Atmanirbhar Bharat! (19/10/2022)</p>	<p>श्री सुधांशु मणि</p> <p>Shri Sudhanshu Mani</p>	<p>इंडियन रेलवे सर्विस ऑफ मैकेनिकल इंजीनियर्स (सेवानिवृत्त), फेलो, इंस्टीट्यूट ऑफ मैकेनिकल इंजीनियर्स, लंदन</p> <p>Indian Railway Service of Mechanical Engineers (Retd.), Fellow of Institute of Mechanical Engineers, London</p>	
13.	<p>हम क्वांटम तरल के साथ क्या कर सकते हैं?</p> <p>What Can We Do With a Quantum Liquid? (26/10/2022)</p>	<p>प्रो. एंथनी जे. लेगेट</p> <p>Prof. Anthony J. Leggett</p>	<p>(नोबेल पुरस्कार विजेता), इलिनोइस विश्वविद्यालय, अर्बाना-शैपेन</p> <p>(Nobel Laureate), University of Illinois at Urbana-Champaign</p>	
14.	<p>कानूनी दायरे में प्रौद्योगिकी और विज्ञान</p> <p>Technology & Science in Legal Realm (02/11/2022)</p>	<p>जस्टिस विक्रम नाथ</p> <p>Justice Vikram Nath</p>	<p>न्यायाधीश, भारत का उच्चतम न्यायालय, नई दिल्ली</p> <p>Judge, Supreme Court of India, New Delhi</p>	

15.	<p>भारत में संलयन और प्लाज्मा अनुसंधान: हम कहाँ हैं, हम कहाँ जा रहे हैं?</p> <p>Fusion and Plasma Research in India: Where are we, where are we going? (09/11/2022)</p>	<p>डॉ. शशांक चतुर्वेदी</p> <p>Dr. Shashank Chaturvedi</p>	<p>निदेशक, प्लाज्मा अनुसंधान संस्थान, गांधीनगर</p> <p>Director, Institute for Plasma Research, Gandhinagar</p>	
16.	<p>सूर्य के अंदर एक रहस्यपूर्ण द्रव प्रवाह: भूमध्य रेखा परिसंचरण</p> <p>An enigmatic fluid flow inside the Sun: the Meridional Circulation (16/11/2022)</p>	<p>प्रो. अर्नब राय चौधरी</p> <p>Prof. Arnab Rai Choudhuri</p>	<p>भौतिकी विभाग, भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर</p> <p>Department of Physics, Indian Institute of Science, Bangalore</p>	
17.	<p>स्वतंत्र भारत में विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के माध्यम से भारतीय सामाजिक समस्याओं को संबोधित करना</p> <p>Addressing Indian Societal problems through Science, Technology and Innovation in post-Independent India (22/11/2022)</p>	<p>डॉ. शेखर सी. मांडे</p> <p>Dr. Shekhar C. Mande</p>	<p>विशिष्ट प्रोफेसर, जैव सूचना विज्ञान केंद्र, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे और मानद विशिष्ट वैज्ञानिक, राष्ट्रीय कोशिका विज्ञान केंद्र, पुणे</p> <p>Distinguished Professor, Bioinformatics Centre, Savitribai Phule Pune University, Pune and Honorary Distinguished Scientist, National Centre for Cell Science, Pune</p>	
18.	<p>अंटार्कटिका में दक्षिण गंगोत्री का निर्माण: एक चमत्कार</p> <p>Building Dakshin Gangotri at Antarctica: A Miracle (30/11/2022)</p>	<p>डॉ. हर्ष के. गुप्ता</p> <p>Dr. Harsh K. Gupta</p>	<p>अध्यक्ष, भारतीय भूवैज्ञानिक सोसायटी</p> <p>President, Geological Society of India</p>	

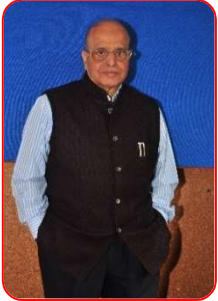
19.	हाइड्रोजन अनुबद्ध अंतःक्रियाएं: आणविक शतरंज के खेल में प्यादे Hydrogen bonded interactions: Pawns in the Game of Molecular Chess (08/12/2022)	प्रो. के.एस. विश्वनाथन Prof. K. S. Viswanathan	अतिथि प्रोफेसर, क्रिया विश्वविद्यालय, श्रीसिटी Visiting Professor, Krea University, SriCity	
20.	अन्वेषणों द्वारा प्रेरित: गुरुत्वीय तरंग विज्ञान Propelled by quests: Gravitational wave science (14/12/2022)	प्रो. तरुण सौरदीप Prof. Tarun Souradeep	निदेशक, रामन अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरु Director, Raman Research Institute, Bangalore	
21.	आकाशगंगा विकास: परमाणु हाइड्रोजन परिप्रेक्ष्य Galaxy evolution: The atomic hydrogen perspective (21/12/2022)	प्रो. जयराम चेंगलूर Prof. Jayaram Chengalur	विशिष्ट प्रोफेसर एवं निदेशक, टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान, मुंबई Distinguished Professor & Director, Tata Institute of Fundamental Research, Mumbai	
22.	रामन स्पेक्ट्रोस्कोपी: भौतिकी से चिकित्सा तक Raman spectroscopy: from Physics to Medicine (28/12/2022)	प्रो. शिव उमापति Prof. Siva Umapathy	भारतीय विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान, भोपाल Indian Institute of Science education and Research, Bhopal	

23.	<p>विक्रम साराभाई और भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम</p> <p>Vikram Sarabhai and Indian space programme (05/01/2023)</p>	<p>श्री ए.एस. किरण कुमार</p> <p>Shri A S Kiran Kumar</p>	<p>अध्यक्ष, पीआरएल प्रबंध परिषद, विक्रम साराभाई प्रोफेसर, इसरो, बेंगलुरु, सदस्य, अंतरिक्ष आयोग, भारत सरकार</p> <p>Chairman, PRL Council of Management, Vikram Sarabhai Professor, ISRO, Bengaluru, Member, Space Commission, Govt. of India</p>	
-----	---	--	---	---

पीआरएल का अमृत व्याख्यान श्रृंखला-2

'पीआरएल का अमृत व्याख्यान' श्रृंखला-2 का शुभारम्भ जनवरी 2023 में किया गया, जिसमें प्रति माह एक व्याख्यान का आयोजन किया जायेगा।

इस व्याख्यान श्रृंखला के प्रथम वक्ता डॉ. के कस्तूरीरंगन (मानद विशिष्ट सलाहकार, इसरो, पूर्व अध्यक्ष, इसरो एवं सचिव, अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार, एवं अध्यक्ष, नयी शिक्षा नीति, भारत सरकार) जी थे।

1.	<p>मेरे व्यावसायिक प्रयास- जनता, चुनौतियाँ और किस्से"</p> <p>My Professional Forays - People, Challenges & Anecdotes"</p> <p>(30/01/2023)</p>	<p>डॉ. के कस्तूरीरंगन</p> <p>Dr. K Kasturirangan</p>	<p>मानद विशिष्ट सलाहकार, इसरो, पूर्व अध्यक्ष, इसरो एवं सचिव, अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार</p> <p>Honorary Distinguished Advisor, ISRO, Former Chairman, ISRO & Secretary, Dept. Of Space, Govt. of India</p>	
----	---	--	--	---

साइबर सुरक्षा जागरूकता - अनजान मैसेज या कॉल

सौजन्य: जिगर ए. रावल एवं संगणक केंद्र सदस्य

 साइबर सुरक्षा जागरूकता - अनजान मैसेज या कॉल 
जिगर रावल, प्रधान, सीएनआईटी, पी.आर.एल.

 कोई अनजान मैसेज या कॉल 

 लालच दिखा रहा हो  तत्काल और समयबद्ध हो  सधिगधजनक हो  नकारात्मक परिणाम का डर दिखाता हो

 **कभी घबराए नहीं एवं विचलित न हो** 

 रुकिए  सोचिए  आगे बढ़िये

★ इस तरह के फ्रॉड से कैसे बचें ? ★

- ✓ किसी भी अनजान कॉल या मैसेज पर विश्वास न करें एवं अपना ओटिपी या पासवर्ड या युपिआई पिन या ऐटीएम पिन या क्रेडिट कार्ड पिन या सीवीवी नंबर/कोड सांझा न करे।
- ✓ किसी भी अनजान नंबर से आये मिस्ड वीडियो कॉल का जवाब न दे। धोखेबाज वीडियो कॉल रिकॉर्ड कर के ब्लैकमेल करते हैं और पैसे मांगते हैं।
- ✓ शोर्ट युआरेल (लिंक) को जांचे एवं किसी भी अनजान ऐप को डाउनलोड और इनस्टॉल न करे।
- ✓ किसी भी ऐसे मैसेज या कॉल से घबराए नहीं। सायबर क्राइम पुलिस की मदद लें।

★ सतर्क रहें, सुरक्षित रहें ★



स्नेहा नायर

हॉट सीट तक का मेरा सफर: कौन बनेगा करोड़पति 2022

आज से 22 साल पहले जब कौन बनेगा करोड़पति पहली बार प्रसारित हुआ था, इसने टेलिविज़न जगत में एक क्रांति सी ला दी थी। ब्रिटेन के गेम शो 'हू वांट्स टू बी अ मिलियनेयर' की तर्ज पर बने इस आइकॉनिक शो ने दर्शकों को रोज़ाना एक घंटे तक टेलिविज़न से जोड़े रखा। वे दिन थे जब इंटरनेट उत्तर खोजने के लिए पर्याप्त तेज़ नहीं था, और अपने लिविंग रूम से प्रतियोगियों को जज करना एक दैनिक गतिविधि थी। प्रतियोगियों के बोलने से पहले दर्शक चिल्लाकर जवाब देते। केबीसी भारत में एक घरेलू नाम बन गया। मुझे बिग बी के लोकप्रिय "लेट्स प्ले कौन बनेगा करोड़पति", "लॉक किया जाए", "कंप्यूटरजी / ज्ञाननाथजी" वाक्यांश याद हैं। यह आपको तुरंत बॉलीवुड के OG एंग्री यंग मैन, श्री अमिताभ बच्चन जी के बोलने के अंदाज़ की याद दिलाते हैं। मैं अपने बचपन की यादों के झरोखे से उस समय को याद कर सकती हूँ।

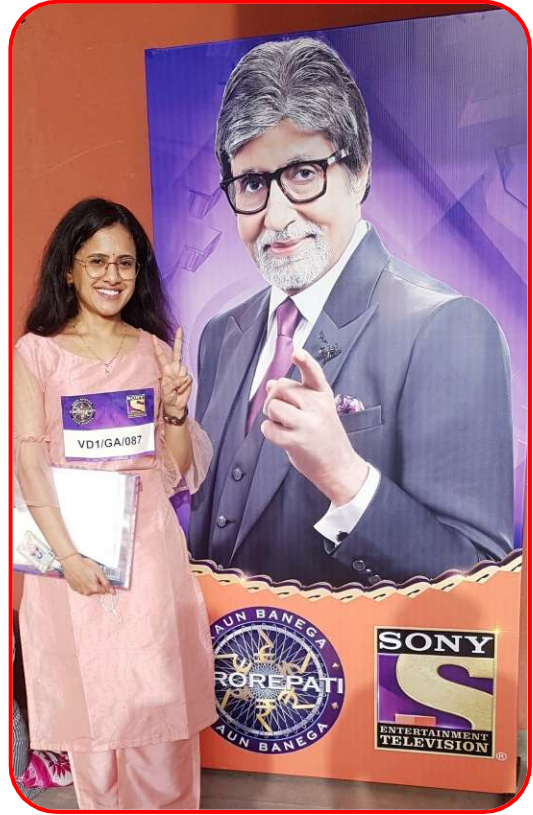
मेरी माँ श्री बच्चन जी की बहुत बड़ी प्रशंसक थीं और हैं। अन्य परिवार की तरह हम सब भी अपना काम निबटा लेते और रात 9:00 बजे टीवी से जुड़ जाते। यह माँ के श्री बच्चन जी का प्रशंसक होने के कारण एक दैनिक पारिवारिक कार्यक्रम जैसा था। मेरी मां के कारण ही मुझे शो में भाग लेने के लिए खूब प्रेरणा मिली, ताकि वे श्री बच्चन जी से मिलने के अपने सपने को पूरा कर सकें। यहीं से केबीसी की मेरी वास्तविक यात्रा शुरू हुई थी।

केबीसी में प्रवेश करने का मेरा पहला कदम था, जब केबीसी के लिए रजिस्ट्रेशन अप्रैल 2022 के पहले सप्ताह में शुरू हुआ। इस शो में यह मेरा पहला प्रयास था। यह सब सरल सामान्य ज्ञान प्रश्नों के साथ शुरू हुआ जो हर दिन पूछे जाते थे जिनका उत्तर SonyLIV App या एसएमएस के माध्यम से दिया जा सकता था। आप SonyLIV App में अपने विवरण के साथ पंजीकरण करें, पंजीकरण खुलने तक दिन के प्रश्न का उत्तर दें और अगले दौर के लिए आपको चुनने के लिए रैंडमाइज़र के लिए आशा करें। इसलिए, मैंने बस अपना फोन उठाया और करोड़पति बनने की दिशा में अपना पहला कदम बढ़ा दिया! अगले दौर के लिए चुने जाने पर, ऑटोमेटेड रेस्पोंडर ने जल्दी से तीन प्रश्न दिए जिनका उत्तर कुछ ही सेकंड में देना था। असल में, कहीं और झाँक कर उत्तर देखने का समय नहीं होता! आप जानते हों या नहीं जानते- उत्तर झट से देना पड़ता है।

मैं भाग्यशाली थी कि मुझे वडोदरा में ग्राउंड ऑडिशन के लिए शॉर्टलिस्ट किया गया (2.5 करोड़ पंजीकरणों में से, 8000 प्रतिभागियों का चयन किया गया था और मैं उन 0.00032% में से एक थी!)। ग्राउंड ऑडिशन में दो भाग शामिल थे: पहला, एक MCQ प्रश्नोत्तरी और प्रश्न बेहद सामान्य थे: करंट अफेयर्स, इतिहास, भूगोल, विज्ञान, सिनेमा, खेल-कूद, कला और संस्कृति, आदि। मूल रूप से जो भी हमारे चारों ओर होता है! दूसरा भाग पर्सनल इंटरव्यू का दौर था जहां मुझे शीर्ष 4000 उम्मीदवारों में शामिल होने के लिए चुना गया था।

मैं बचपन से ही जिज्ञासु रही हूँ और सामान्य ज्ञान में मेरी गहरी रुचि रही है। मैंने अपने बचपन में विभिन्न प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं में भाग लिया है जैसे: बोर्नविटा क्विज़ प्रतियोगिता, TERA, संयुक्त राष्ट्र के क्विज़ कार्यक्रम, इत्यादि। ऑडिशन की तैयारी करते समय मुझे एहसास हुआ कि यह एक किताब या लगभग 15 दिन/1 महीने की तैयारी के बारे में नहीं है जिसे आप पढ़ेंगे और शो को क्रैक करेंगे, यह इस बारे में है कि आपने अपने जीवन में क्या सीखा है।

ग्राउंड ऑडिशन के बाद, केबीसी टीम से आगे कोई संपर्क नहीं हो पाया। वास्तव में, शो का प्रसारण शुरू हो गया था और मुझे यकीन हो गया था कि मेरा चयन नहीं हुआ है। इस प्रकार, मैं इसके बारे में पूरी तरह से भूल गयी। और फिर, अगस्त के अंतिम सप्ताह में मुझे "फास्टेस्ट फिंगर फर्स्ट" राउंड में जगह बनाने के लिए जादुई फोन कॉल आया। मंच पर आते हुए श्री अमिताभ बच्चन जी की छवि, उनके चारों ओर विशाल केबीसी के लोगो का वह प्रकाश, और परिचित धुन मेरे मन में बजने लगी।



वडोदरा, गुजरात में ग्राउंड ऑडिशन।

आंखें चौड़ी और अचंभित, हम मुंबई में "कौन बनेगा करोड़पति" के हाई-टेक सेट पर पहुंचे। हर कोने में एलईडी और लेज़र लाइटें थीं, ड्रोन कैमरे, कंप्यूटर नियंत्रित लाइटें और पूरा सेट इतना अत्याधुनिक लग रहा था। मैं पहले से ही एक सेलिब्रिटी की तरह महसूस कर रही थी। फिल्म सिटी में होना अपने आप में एक सौभाग्य की बात है क्योंकि वहां आपको सिनेमा की जगमग दुनिया की एक झलक मिलती है। केबीसी प्रोडक्शंस द्वारा पूरे व्यवस्था का बहुत अच्छी तरह से ख्याल रखा गया था। केबीसी के अत्यधिक उत्साही और ऊर्जावान दल प्रशंसा के पात्र हैं।

श्री अमिताभ बच्चन जी अपनी जानी-पहचानी लाइन - "देवियों और सज्जनों" से दर्शकों का अभिवादन करते हैं और बाकी की पंक्तियाँ मुझे पता थी। उन्हें सेट पर एबी के नाम से भी जाना जाता है। मैं उनकी भव्यता और विनम्रता से अभिभूत थी। मेरे लिए इसे शब्दों में बयां करना बहुत मुश्किल है क्योंकि मैंने अपनी पीढ़ी के और अपने से पहले के सभी लोगों को देखा है जिन्होंने श्री अमिताभ बच्चन जी को अपना आदर्श माना है। मैं उनकी फिल्में देखते हुए बड़ी हुई हूँ। 80 और 90 के दशक के बच्चे मेगास्टार श्री अमिताभ बच्चन जी को उनके प्रतिष्ठित स्क्रीन चरित्रों के लिए याद करते हैं। उनकी ऐसी फिल्में हैं जिन्हें मैंने दस से भी ज्यादा बार देखा है। आज भी टीवी चैनल बदलते समय अभिमान, शोले, चुपके चुपके, डॉन जैसी कोई फिल्म मेरे सामने आती है तो मैं उसे बार-बार देखती हूँ। और उन्हें साक्षात् अपने सामने देखना एक सपने के सच होने जैसा था। इसे विश्वास करने में थोड़ा समय लगता है कि वे आपके सामने हैं। मैं खुद को भाग्यशाली मानती हूँ कि मुझे ऐसे पल को जीने का मौका मिला। शो में होने का मेरा पसंदीदा हिस्सा मेरी मां की आंखों में गर्व का भाव देखना था। "फास्टेस्ट फिंगर फर्स्ट" और उसके बाद पूछे जाने वाले प्रश्न सभी वास्तविक समय में पूछे जाते हैं और ठीक उसी समय सीमा में शूट किए जाते हैं जैसे टीवी पर दिखाया जाता है। हॉट सीट पर पहुंचना मेरे लिए आसान नहीं था। बहुचर्चित हॉट सीट पर पहुंचने से पहले मुझे 3 दिन और कई फास्टेस्ट फिंगर फर्स्ट राउंड लग गये। ऐसा लगा जैसे पहाड़ पर चढ़ गए हो और जैसा कि कहा जाता है "सबसे कठिन चढ़ाई के बाद सर्वोत्तम दृश्य देखने को मिलता है"! उपलब्धि की एक अविश्वसनीय भावना।

भारत के सबसे लोकप्रिय, सबसे लंबे समय तक चलने वाले ज्ञान आधारित शो में हॉट सीट पर होना एक रोमांचक और अविस्मरणीय अनुभव था। शो में एबी सर के साथ मेरी बातचीत के दौरान, मैंने "पीआरएल" का प्रतिनिधित्व किया, "इसरो", "अंतरिक्ष विभाग" और इसकी गतिविधियों के बारे में बातचीत की। यह मेरे लिए डॉ. विक्रम साराभाई की स्मृति और हमारे राष्ट्र के लिए उनके अपार योगदान को स्मरण करने, सम्मान देने और उसे मनाने का एक बड़ा अवसर था। मैंने डॉ. विक्रम साराभाई और डॉ. होमी भाभा के बारे में बात की, जो महान वैज्ञानिक के साथ साथ महान दूरदर्शी भी थे। साथ ही भारतीय शास्त्रीय नृत्य कला भरतनाट्यम,



केबीसी के हॉट सीट पर

टेनिकोइट, बॉल बैडमिंटन के बारे में भी बात की। एबी सर हिंदी में मेरी प्रवीणता से काफी प्रभावित थे। एक बार जब मैंने खेल खेलना शुरू किया, तो यह पहला पड़ाव तक आसानी से चलता रहा। बाद में, मैंने अपनी लाइफ लाइन का उपयोग दूसरा पड़ाव तक पहुँचने के लिए किया और मैं "गोवर्धन घी साल भर का भंडार" पाकर बहुत खुश हो गई थी!

आश्चर्य होने वाली बात है कि, मुझे राष्ट्रीय टूर्नामेंट खेलने के लिए टेनिकोइट एसोसिएशन के महासचिव द्वारा संपर्क किया गया था। मुझे यूएसए के TEDx स्पीकर से लेकर पीआरएल के सेवानिवृत्त फैकल्टी और इसरो केंद्रों के वैज्ञानिकों तक ईमेल, संदेशों आदि के माध्यम से सराहना मिली। इसके अलावा, सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन ने मेरे लिए एक हैशटैग बनाया और मुझे "रॉकेट गर्ल" नाम दिया! मुझे "हॉटसीट की प्रतिभा" भी कहा जाता है। एबी सर के हस्ताक्षर वाला चेक प्राप्त करना सोने पर सुहागा था।

कुल मिलाकर, यह एक समृद्ध अनुभव था जिसे मैं जीवन भर संजो कर रखूंगी। मुझे इस शो के माध्यम से बहुत पहचान, सम्मान, उपलब्धि और प्रशंसा मिली है। दुनिया भर से सभी आयु वर्ग के लोग; छोटे बच्चों से लेकर प्रोफेशनल्स तक, वे सभी मुझे सोशल मीडिया पर फॉलो कर रहे हैं, मुझसे संपर्क करते हैं, सेल्फी ले रहे हैं, सोशल मीडिया पर मेरा प्रोमो वीडियो शेयर कर रहे हैं, समाचार पत्रों में लेख प्रकाशित कर रहे हैं, विभिन्न माध्यमों से मुझे बधाई दे रहे हैं, यह सब मुझे बहुत अच्छा लग रहा है और मैं हार्दिक आभारी हूँ। सफलता प्राप्ति के लिए, ज्ञान के पीछे जाने के लिए बच्चों और युवाओं को प्रेरित करके, मुझे लगता है कि शो में आने का मेरा उद्देश्य पूरा हो गया है। खैर, मैं बस इतना कह सकती हूँ कि कड़ी मेहनत करो, अपनी गलतियों से सीखो, अपने आप पर यकीन रखो और याद रखो कि हर दिन मायने रखता है। और यकीन मानिए अनुशासन आपको बहुत आगे ले कर जाता है!

अंत में एक और महत्वपूर्ण बात, मेरे इस सफर में मेरे साथ रहने वाले सभी की मैं हार्दिक आभारी और कृतज्ञ हूँ। यह उपलब्धि मेरे परिवार, दोस्तों, पीआरएल सदस्यों से लेकर मेरे प्रथम शिक्षकों को समर्पित है, जिन्होंने मुझे मेरे सर्वोत्तम व्यक्तित्व बनने में विश्वास, समर्थन, प्रोत्साहन और मार्गदर्शन दिया।

मुझे यह भरोसा दिलाने के लिए कि वह जादुई फोन कॉल वास्तव में केबीसी का ही है, मैं सुश्री जलधी और श्री सूरज के प्रति आभारी हूँ। जलधी मेरी इस पूरी यात्रा में एक स्तंभ की तरह रही है जिससे मुझे लगातार मदद मिलती रही। मैं प्रो. एस. रामचंद्रन जो बिग बी और केबीसी के ज़बरदस्त प्रशंसक हैं, की आभारी हूँ कि वे मेरे वीडियो कॉल-ए-फ्रेंड लाइफलाइन के ज़रिए मेरी सहायता के लिए सहमत हुए। मैं प्रो. अनिल भारद्वाज के प्रति उनके निरंतर समर्थन और प्रोत्साहन के लिए हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। मैं प्रो. डी. पल्लमराजू को उनके मार्गदर्शन और मुझे कई सुअवसर प्रदान करने के लिए धन्यवाद देती हूँ। प्रो. आर. डी. देशपांडे बहुत बड़े मोटिवेटर रहे हैं, मैं उनके प्रति आभारी हूँ। इन सभी वैज्ञानिकों का ज्ञान और दृष्टिकोण मुझे हर दिन प्रेरित करता है! मैं प्रो. अभिजीत चक्रवर्ती और श्री कपिल के प्रति आभारी हूँ। प्रो. सोम कुमार शर्मा एवं मुझे हिंदी में काम करने में प्रोत्साहित करने के लिए हिंदी समिति के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहती हूँ। एसपीए-एससी डिवीजन के सभी सदस्यों जिन्होंने मेरे आज के व्यक्तित्व को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, उन सभी के प्रति मैं आभारी हूँ।

मेरे एपिसोड के लिए यूट्यूब लिंक:

<https://www.youtube.com/watch?v=m57nzMzYB8w>



केबीसी के मंच पर मैं, मेरी मां और श्री अमिताभ बच्चन जी

भालू से एक मुलाकात

जूना शील

(विवाहित : प्रो. वरुण शील)

अहमदाबाद स्थित इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट में 1998 में नियुक्ति के दौरान मुझे भालूओं पर शोध करने का कार्यभार सौंपा गया। कार्यक्षेत्र उत्तर गुजरात के दो अभ्यारण निश्चित हुए, जो जेसोर स्लोथ बियर व बालाराम अंबाजी अभ्यारण के नाम से जाने जाते हैं। इस खोज के अंतर्गत मुझे और मेरे एक साथी को इन अभ्यारणों में रहकर वहाँ के निवासियों से भालूओं संबंधित जानकारी प्राप्त करनी थी। काफी जानकारी एकत्रित करने के उपरांत भी हम दोनों में से कोई भी भालू को नहीं देख पाया था। वहाँ के स्थायी लोगों से पता चला कि ये रात को कुछ ही स्थानों पर विचरण करने आते हैं। इसलिए हमें एक ऐसे तजुर्बेकार व्यक्ति के साथ जंगल में जाने की सलाह दी गई जो न केवल जंगल के रास्तों से भलिभाँति अवगत थे अपितु ऐसे प्राणी के आचरण से भी। ऐसे एक साहसी व्यक्ति थे, करीमभाई, जो व्यावसायिक तौर पर वैध थे।



दो अप्रैल, 1999 को दोपहर में ही कारीमभाई से रात में जंगल जाने का कार्यक्रम निश्चित कर लिया गया। रात को मैं और मेरा साथी उत्सुकता से घर के बाहर सड़क पर उनका इंतज़ार करने लगे। रात ठीक दस बजे सामने से एक रोशनी आती दिखाई दी। ये थे करीमभाई जो हमें ले जाने आए थे। पर वह मुझे ले जाने में संकोच कर रहे थे, शायद उन्होंने मुझे जंगल के खतरों के समक्ष नाजुक पाया परंतु मेरे हठी स्वभाव को देखकर उन्हें मुझे अपने साथ ले चलने की हामी भरनी पड़ी। हम जीप में हाथीद्रा नामक गाँव की ओर रवाना हो गए। इस गाँव के आसपास भालू दिखाई देने की संभावना और जगहों के बनिस्पत अधिक होती है। हमारे अलावा जीप में पाँच आदिवासी व्यक्ति भी थे जो कि साधारण देसी कट्टे, तीर कमान व भालों से लैस थे। साथ में एक टॉर्च व पानी की बोतल भी रख ली गई थी।

हाथीद्रा गाँव की सीमा पर पहुँचते ही हम सब जीप से उतर गए और पैदल चलने लगे। पहले खेत और फिर जंगल के अजीब से सन्नाटे ने हमें घेर लिया। कोई किसी से बात नहीं कर रहा था और यदि कोई आवाज़ भी आती थी तो वो थी झिंगुरों की चिक चिक या फिर मेढ़कों की टरटराहट की। नीचे पड़े सूखे पत्तों पर पड़ते कदमों से निकलती आवाज़ें भी उस समय अत्यंत डरावनी प्रतीत होती थी। चाँदनी रात में चाँद हमारा मार्ग दर्शन कर रहा था। हम सभी एक पंक्ति में चल रहे थे, सबसे आगे साहसी करीमभाई। सहसा उन्हें भालू की उपस्थिति का आभास हुआ। वे हम दोनों को एक तरफ ले गए और इशारे से हमारे साथ आए लोगों को भालू को हमारे सामने से भगाने का आदेश दिया। वहाँ पर एक नहीं बल्कि दो भालू थे। वे दोनों भालू उन लोगों पर हमला करने ही वाले थे कि उनमें से एक व्यक्ति ने हवा में देसी कट्टा चलाया। पहाड़ों के बीच जब इस धमाके की आवाज़ गूँजी तो ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो हवा में न जाने कितनी ही गोलियाँ एक के बाद एक दागी गई हों। जंगल के सन्नाटे को चीरती हुई इन आवाज़ों ने एक ऐसी असमंजसीय परिस्थिति पैदा कर दी थी कि कुछ क्षणों के लिए भालू भागने के लिए अपना रास्ता न भेद सकें और फिर अचानक तीव्रता से भागते हुए हमारे सामने से गुज़रे और जंगल के अँधेरों में लुप्त हो गए। मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ, ये एक अनोखा अनुभव था। आज तक तो भालू सिर्फ़ चिड़ियाघर में ही देखे थे! अब रात बहुत हो चुकी थी, घर लौटने का व्यक्त आ गया था। जीप में चर्चा का विषय था 'भालू'। इन घटनाओं को सोचते हुए रात भर नींद नहीं आई और फिर हम तड़के अहमदाबाद के लिए रवाना हो गए। रास्ता बहुत उबड़-खाबड़ था और अब तक शरीर दर्द से बुरी तरह टूट चुका था पर इन सबके बावजूद भी हमारे हिस्से का आनंद कम न हुआ था।



चित्र कला

मलिका सिंघल



गुजरात राज्य स्तरीय हिंदी निबंध प्रतियोगिता के परिणाम

सौजन्य: हिंदी अनुभाग

भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद द्वारा "आजादी का अमृत महोत्सव" समारोह के भाग के रूप में, गुजरात राज्य में स्थित सभी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों (नराकास) के अंतर्गत केंद्रीय सरकारी कार्यालयों के सेवारत नियमित कर्मचारियों के लिए 05 जून 2022 गुजरात राज्य स्तरीय हिंदी निबंध प्रतियोगिता का ऑनलाइन माध्यम से आयोजन किया गया था।

निबंध का विषय: आज के आत्मनिर्भर भारत में हिंदी का महत्व

उपरोक्त निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं की सूची निम्नानुसार है:

क्रमांक	कर्मचारी/ अधिकारी	कार्यालय/संस्थान	भाषा क्षेत्र	पुरस्कार
1.	राजदीप	केंद्रीय नमक एवं समुद्री एवं रसायन अनुसंधान संस्थान, भावनगर	क	प्रथम
2.	जगदम्बा प्रसाद सिंह	अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद	क	द्वितीय
3.	मनिता	प्रधान आयुक्त कार्यालय, सीमा शुल्क, अहमदाबाद	क	तृतीय
4.	अंकिता पटेल	भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद	क	तृतीय
5.	कपिल कुमार भारद्वाज	भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद	क	सांत्वना

क्रमांक	कर्मचारी/ अधिकारी	कार्यालय/संस्थान	भाषा क्षेत्र	पुरस्कार
1.	रुकसाना घांची	आइसीएमआर-नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ऑक्यूपेशनल हेल्थ, अहमदाबाद	ख	प्रथम
2.	विवेक जटनिया	न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, पोरबंदर	ख	द्वितीय
3.	भावेश वाघेला	आइसीएमआर-नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ऑक्यूपेशनल हेल्थ, अहमदाबाद	ख	तृतीय
4.	विधि जटनिया	कैनरा बैंक, राजकोट	ख	सांत्वना
5.	धर्मेन्द्र भट्ट	पश्चिम रेलवे, साबरमती	ख	सांत्वना

क्रमांक	कर्मचारी/ अधिकारी	कार्यालय/संस्थान	भाषा क्षेत्र	पुरस्कार
1.	बी.एन. शर्मा	अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद	ग	प्रथम
2.	स्नेहा नायर	भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद	ग	द्वितीय
3.	तनुश्री बैनर्जी	न्यू इंडिया एशयोरेंस कंपनी लिमिटेड, अहमदाबाद	ग	तृतीय
4.	इंद्रनील मिश्रा	अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद	ग	सांत्वना
5.	विजिता नायर	भारतीय प्रबंध संस्थान, अहमदाबाद	ग	सांत्वना



समारोह की कुछ झलकियां

राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम रिपोर्ट

सौजन्य: रुमकी दत्ता

इस वर्ष दिनांक 22-24 जून 2022 के दौरान समानव अंतरिक्ष उड़ान केंद्र (एच.एस.एफ.सी.), बेंगलूरु द्वारा अं.वि./इसरो के सभी केंद्रों/यूनिटों के राजभाषा कार्मिकों के लिए आयोजित राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम में मुझे नामित किया गया था। उक्त तीन दिवसीय कार्यक्रम में प्रशिक्षण का आयोजन किया गया:

उद्घाटन - दिनांक 22.06.2022 को 1600 बजे

- उद्घाटन सत्र का आयोजन किया गया जिसमें दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना की गई एवं निदेशक, एचएसएफसी, नियंत्रक, एचएसएफसी एवं अन्य मंचासीनों ने प्रतिभागियों को संबोधित किया। अंतरिक्ष विभाग के सभी केंद्रों एवं यूनिटों से आए प्रतिभागियों ने अपना परिचय दिया।
- इसके बाद कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें कुछ सदस्यों ने अपनी कविताएं प्रस्तुत की।

दिनांक : 23.06.2022 (दो सत्र)

पूर्वाहन सत्र:

- MS Word में हिंदी के प्रयोग से संबंधित अद्यतन जानकारी – इसमें वक्ता श्री ओम प्रकाश अग्रवाल ने वर्ड में नोटिंग, ड्राफ्टिंग, टेम्प्लेट आदि तैयार करने की जानकारी दी। यह बहुत ही चर्चात्मक एवं सूचनापरक सत्र था।

अपराहन सत्र:

- इसरो की सुविधाओं का दौरा – इस सत्र में सभी प्रतिभागियों को यूआरएससी, बेंगलूरु परिसर का दौरा कराया गया एवं वहां प्रदर्शनी में विभिन्न उपग्रहों एवं अन्य उपकरणों के बारे में जानकारी दी गई। क्लीन रूम भी बाहर से दिखाया गया।

दिनांक: 24.06.2022 (दो सत्र)

- पूर्वाहन सत्र में राजभाषा कार्यान्वयन एवं संवर्ग की चुनौतियों पर डॉ. शंकर कुमार, संयुक्त निदेशक (रा.भा.), अं.वि., शा.स., नई दिल्ली द्वारा परिचर्चा सत्र को संबोधित किया गया।
- अपराहन सत्र में, श्री इम्तियाज़ अली खान, निदेशक, डी.एच.एस.पी., इसरो मुख्यालय ने समानव अंतरिक्ष उड़ान केंद्र के बारे में प्रस्तुति के माध्यम से जानकारी दी। उन्होंने इस कार्यक्रम के विषय में काफी रोचक जानकारियां प्रदान कीं। अंत में समापन समारोह में सभी प्रतिभागियों को प्रतिभागिता प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया।

उपरोक्त कार्यक्रम में प्रतिभागिता का अवसर प्रदान करने के लिए मैं, निदेशक पीआरएल, पीआरएल प्रशासन के सभी वरिष्ठ अधिकारियों एवं सहकर्मियों के प्रति अपना आभार प्रकट करती हूं।

हर घर तिरंगा

सौजन्य: अभिषेक

'हर घर तिरंगा' लोगों में स्वामित्व की भावना जगाने और जन भागीदारी की भावना से आजादी का अमृत महोत्सव मनाने की एक पहल है। हर घर तिरंगा 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तत्वावधान में एक अभियान है, जो लोगों को तिरंगा घर लाने और भारत की आजादी के 75वें वर्ष को चिह्नित करने के लिए इसे फहराने के लिए प्रोत्साहित करता है। स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में एक राष्ट्र के रूप में सामूहिक रूप से ध्वज घर लाना इस प्रकार न केवल व्यक्तिगत संबंध का एक कार्य है बल्कि राष्ट्र निर्माण के प्रति प्रतिबद्धता का एक प्रतीक बन जाता है। इस पहल के पीछे लोगों के दिलों में देशभक्ति की भावना जगाना और भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देना है।

गृह सचिव, भारत सरकार के डी.ओ. पत्र संख्या 2/01/2020-सार्वजनिक (भाग- III) दिनांक 20.07.2022 और DOS पृष्ठांकन संख्या A.27012/8/2021-V दिनांक 28.07.2022 और सचिव, DOS / अध्यक्ष, इसरो, से अपील दिनांक 27.07.2022 "हर घर तिरंगा कार्यक्रम को लागू करने" के लिए यह कार्यक्रम पीआरएल में आयोजित किया गया था। यह आजादी का अमृत महोत्सव का एक हिस्सा था।

भारत की स्वतंत्रता के 76वें वर्ष और भौतिक अनुसंधान संस्थान (पीआरएल) की स्थापना की 75वीं वर्षगांठ होने के कारण इसे एक यादगार अभियान के रूप में चिह्नित करने के लिए अभियान की शुरुआत के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया गया था। लगभग 750 राष्ट्रीय ध्वज और लकड़ी की छड़ें कर्मचारियों, अनुसंधान विद्वानों, प्रशिक्षुओं, संविदा कर्मियों आदि को वितरित की गईं। पीआरएल के निदेशक डॉ. अनिल भारद्वाज ने पीआरएल सदस्यों को राष्ट्रीय ध्वज वितरित किए। पीआरएल सदस्यों के बीच देशभक्ति को बढ़ावा देने के लिए, मुख्य परिसर के माध्यम से निदेशक और डीन पीआरएल द्वारा एक वॉकथॉन का नेतृत्व भी किया गया एवं ग्रुप फोटो लिए गए। इसके अलावा, एक अधिसूचना भी प्रसारित की गई जिसके माध्यम से पीआरएल के सदस्यों से उनके परिसर में राष्ट्रीय ध्वज फहराने का अनुरोध किया गया और उन्हें "हर घर तिरंगा" अभियान के बारे में जागरूक किया गया। राष्ट्रीय ध्वज फहराने के संबंध में "क्या करें और क्या न करें" का विधिवत उल्लेख करते हुए हैंडआउट भी प्रसारित किया गया।

पीआरएल के सदस्यों को www.harghartirang.com पर तिरंगे के साथ सेल्फी लेने और अपलोड करने और प्रमाणपत्र डाउनलोड करने के लिए प्रोत्साहित किया गया था।



पीआरएल में हर घर तिरंगा अभियान की झलकियां



भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्

ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

सौजन्य: रुमकी दत्ता

नगर राजभाषा कार्यान्वयन स्तर पर 2021-22 के दौरान भारत सरकार की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में इस पुरस्कार के लिए निदेशक, पीआरएल, डॉ. अनिल भारद्वाज को ट्रॉफी तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया। साथ ही सहायक निदेशक (रा.भा.), को ट्रॉफी तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया।

नराकास द्वारा वर्ष 2022 की 79वीं छमाही बैठक 28 जुलाई 2022 को भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद (पीआरएल) में आयोजित की गई। नराकास के तत्कालीन अध्यक्ष, एवं प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त गुजरात, डॉ. रवीन्द्र कुमार सहित सभी गणमान्य समिति सदस्य पीआरएल में पधारे थे। लगभग 60 सदस्य कार्यालयों से प्रतिनिधियों ने पीआरएल में आयोजित बैठक में भाग लिया। सभी कार्यालयाध्यक्ष अपने कार्यालय के राजभाषा अधिकारी सहित आए थे। निदेशक, पीआरएल के नेतृत्व में, कार्यालय ने केवल एक सप्ताह की सूचना में बैठक का आयोजन बखूबी कर लिया था। प्रत्येक अनुभाग एवं प्रभाग ने तत्काल आवश्यकता के आधार पर बैठक की व्यवस्था कराई। सभी सदस्य कार्यालयों ने बैठक के आयोजन एवं व्यवस्था की प्रशंसा की इसके लिए पीआरएल का प्रत्येक सदस्य बधाई के पात्र हैं। पीआरएल की ओर से नगर राजभाषा कार्यान्वयन में अपना यथासंभव योगदान दिया जाता रहा है।



रस्साकसी

सौजन्य: आ.का.अ.म. स.

रस्साकसी एक ऐसा खेल है जो दो टीमों को बल, टीम-वर्क और समन्वय की परीक्षा में एक-दूसरे के सामने लाता है। इसमें विरोधी टीम एक दूसरे के बल को निरस्त करने के लिए, सामने वाले के बल के विरुद्ध रस्सी को एक दिशा में एक निश्चित दूरी पर लाने के लक्ष्य के साथ रस्सी के छोरों को खींचती है।

पीआरएल में 12 अगस्त, 2022 (शुक्रवार) को विक्रम जयंती समारोह पर, आजादी का अमृत महोत्सव समारोह के अंतर्गत पीआरएल लाइब्रेरी लॉन में एक अंतर प्रभाग/क्षेत्र रस्साकशी प्रतियोगिता आयोजित की गई। क्षेत्रवार/प्रभागवार 8 सदस्यों की टीम गठित की गई। टीमों को खेल के नियमों की जानकारी दी गई। पीआरएल के निदेशक डॉ. अनिल भारद्वाज ने प्रत्येक खिलाड़ी से मुलाकात की और उन्हें खेल में अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस प्रतियोगिता का आयोजन नॉकआउट आधार पर किया गया। इस खेल के रेफरी डॉ. रवि भूषण और श्री पी.के. शिवदासन थे। प्रत्येक टीम ने खेल को जीतने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया। दर्शकों ने प्रत्येक टीम को उत्साहित किया और उनकी ऊर्जा को बढ़ाया। फाइनल राउंड के अंत में, टीम सर्विसेज ने पहला पुरस्कार जीता, और टीम जीएसडीएन ने दूसरा। टीम एडमिनिस्ट्रेशन ने तीसरा पुरस्कार जीता।

इसके अलावा, चार टीमों, टीम अहिल्या, टीम उषा, टीम टेरेसा और टीम लक्ष्मी का भी गठन किया गया, जिसमें महिला स्टाफ सदस्य शामिल थे। इन टीमों ने सराहनीय बल और उत्साह के साथ भाग लिया। पहले राउंड में ही माहौल जोश से भर गया। चार मैचों के अंत में टीम अहिल्या ने प्रथम विजेता और टीम उषा उपविजेता रही। टीम टेरेसा और टीम लक्ष्मी दोनों तीसरे स्थान पर रहीं।

सभी पीआरएल सदस्यों ने इस कार्यक्रम का पूरा आनंद लिया। यह शानदार कार्यक्रम था, जहां सभी पीआरएल सदस्य अपने पसंदीदा खिलाड़ियों को उत्साहित कर रहे थे।





रस्साकसी प्रतियोगिता की झलकियां



103वीं विक्रम साराभाई जयंती

सौजन्य: रुमकी दत्ता

शुक्रवार, 12 अगस्त, 2022 को भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक और पीआरएल के संस्थापक डॉ. विक्रम साराभाई की 103वीं जयंती मनाने के लिए पीआरएल के परिसरों में उनकी स्मृति में एक समारोह आयोजित किया गया था। इस अवसर पर प्रो. विक्रम साराभाई के परिवार के सदस्यों तथा अहमदाबाद के प्रमुख कार्यालयों के प्रधान को परिसर में आमंत्रित किया गया था। समारोह की शुरुआत साराभाई परिवार के सदस्यों के साथ-साथ आमंत्रित गणमान्य व्यक्तियों और पीआरएल के अन्य सदस्यों द्वारा डॉ. विक्रम साराभाई को माल्यार्पण के साथ हुई।

प्रो. विक्रम साराभाई जयंती को चिह्नित करने के लिए उनके परिवार के सदस्यों तथा पीआरएल के सदस्यों द्वारा वृक्षारोपण किया गया था। इस दिन सभी पीआरएल सदस्यों के लिए मध्याह्नभोज का आयोजन किया गया था।



समारोह की कुछ झलकियां

स्वतंत्रता दिवस समारोह

सौजन्य: आ.का.अ.म. स.

पीआरएल में 15 अगस्त 2022 (सोमवार) को 'आजादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत 76वां स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। पीआरएल के निदेशक डॉ. अनिल भारद्वाज द्वारा ध्वजारोहण किया गया, एवं राष्ट्रगान हुआ। नियमों के अनुसार, सीआईएसएफ, पीआरएल द्वारा एक परेड की गई, जो कार्यप्रणाली और दृढ़ता को दर्शाता है। डॉ. अनिल भारद्वाज ने वर्ष के दौरान पीआरएल की वैज्ञानिक और अन्य गतिविधियों का उल्लेख करते हुए दर्शकों के लिए एक समृद्ध और देशभक्तिपूर्ण संभाषण दिया था। इसके बाद सीआईएसएफ कैडेटों को योग्यता और सेवा पुरस्कार प्रदान किया गया। हमारे राष्ट्रनायकों और स्वतंत्रता सेनानियों की याद में, जिन्होंने देश के लिए अपना बलिदान दिया, हमें स्वतंत्रता, शांति और आनंद प्रदान किया, पीआरएल सदस्यों के बच्चों के द्वारा एक फैंसी ड्रेस कार्यक्रम आयोजित किया गया। आयु वर्ग 2-17 वर्ष था, जिसमें कई बच्चों ने महात्मा गांधीजी, रानी लक्ष्मी बाई, सुभाष चंद्र बोस, डॉ. बी आर. अम्बेडकर, भगत सिंह, रानी वेलु नचियार, सरदार वल्लभभाई पटेल, पंडित जवाहरलाल नेहरू की तरह वेश-भूषा बनाकर तैयार हुए थे। उनके द्वारा चित्रित राष्ट्रीय नायकों के बारे में एक संक्षिप्त भाषण भी दिया। पीआरएल के निदेशक डॉ. अनिल भारद्वाज ने सभी बच्चों को ट्रॉफी और चॉकलेट देकर उनका उत्साहवर्धन किया। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर बच्चों ने तिरंगे गुब्बारे भी छोड़े। पर्यावरण के प्रति योगदान देने के लिए, पीआरएल सदस्यों और उनके परिवार के बच्चों द्वारा वृक्षारोपण किया गया।



समारोह की कुछ झलकियां

उदयपुर सौर वेधशाला में आयोजित ट्रेज़र हंट प्रतियोगिता

सौजन्य: आ.का.अ.म. स.

74वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत उदयपुर सौर वेधशाला/भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, उदयपुर में सभी स्थायी कर्मचारी एवं उनके परिवारजनों, शोध छात्र, पोस्ट डॉक्टरल फेलो एवं प्रशिक्षुओं के लिये ट्रेज़र हंट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत सभी प्रतिभागियों को छोटे-छोटे समूहों (टीमों) में विभाजित किया गया। कार्यक्रम में टीमों के चयन में संतुलन बनाए रखने हेतु प्रत्येक टीम में समान संख्या में स्टाफ सदस्य एवं परिवारजन, शोध छात्र / पोस्ट डॉक्टरल फेलो एवं प्रशिक्षुओं को रखा गया ताकि तकनीकी एवं सामान्य संकेतों अथवा शब्दों को समझने व पहचानने में टीम के सभी सदस्य समान प्रतिभागिता ले सकें।

प्रत्येक टीम को अलग अलग संकेत (क्लू) दिये गए। प्रत्येक संकेत (क्लू) आपस में परस्पर रूप से इस प्रकार जुड़े हुए थे की प्रथम संकेत (क्लू) सुलझाने पर दूसरे संकेत (क्लू) तक पहुंचा जा सकता था। प्रत्येक संकेत (क्लू) के साथ – साथ कुछ खाने-पीने की वस्तुएँ एवं अन्य स्मृति चिन्ह रखे गए, जिससे प्रतियोगिता के दौरान उनका मनोरंजन हो सके एवं साथ ही साथ उनकी जिज्ञासा बनी रहे। कार्यक्रम के अंत में सभी संकेत (क्लू) को ढूंढते हुए प्रत्येक टीम को कैंटीन में पहुंचना था जहाँ जलपान की व्यवस्था रखी गयी थी। सभी संकेतों (क्लू) को ढूंढते हुए सबसे पहले कैंटीन पहुंची तीन (3) टीमों को उनके द्वारा लिए गए समय के अनुरूप क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय विजेता घोषित किया गया एवं उनके पुरस्कार भविष्य में आयोजित किसी कार्यक्रम के दौरान प्रदान किये जायेंगे।



ट्रेज़र हंट प्रतियोगिता की झलकियां

कोविड टीकाकरण अमृत महोत्सव

सौजन्य: दिव्यांग जी अड्यालकर

स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव समारोह के एक भाग के रूप में, अंतरिक्ष विभाग ने उसके सभी केंद्रों को भारत सरकार के दिशानिर्देशों के अनुसार सभी उपयुक्त कर्मचारियों और उनके आश्रितों के लिए कोविड के खिलाफ मुफ्त एहतियाती खुराक की व्यवस्था करने के लिए सूचित किया है। इस संबंध में, चिकित्सालय और मेडिकल सेल भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला द्वारा अहमदाबाद नगर निगम के सहयोग से 16 अगस्त, 2022 (मंगलवार) के दिन चिकित्सालय, नवरंगपुरा परिसर में और 26 सितम्बर, 2022 (सोमवार) को चिकित्सालय, थलतेज परिसर में कोविड टीकाकरण शिविर का आयोजन किया गया था।

पूर्व पंजीकरण के लिए गूगल फॉर्म लिंक बनाया गया था और ऑल्यूजर ईमेल के माध्यम से प्रसारित किया गया था। 16 अगस्त, 2022 और 26 सितम्बर, 2022 को आयोजित टीकाकरण शिविर के लिए क्रमशः 148 और 61 लाभार्थियों ने अपना नाम दर्ज कराया था। शिविर में सामूहिक भीड़-भाड़ को रोकने के लिए सभी पंजीकृत लाभार्थियों को कोविड टीकाकरण के लिए अलग-अलग समय स्लॉट आवंटित किया गया था और इसके बारे में ईमेल के माध्यम से पूर्व सूचना दी गई थी। शिविर के दौरान क्रमशः 163 और 75 पात्र कर्मचारियों और उनके आश्रितों को कोविड वैक्सीन की एहतियाती खुराक दी गई। इस शिविर गतिविधि को सफल बनाने के लिए चिकित्सालय एवं मेडिकल सेल पीआरएल सभी को धन्यवाद देता है।



कोविड टीकाकरण की कुछ झलकियां

पीआरएल में हिंदी माह कार्यक्रम – एक सिंहावलोकन

सौजन्य: रुमकी दत्ता

राजभाषा हिंदी और हिंदी दिवस के महत्व को ध्यान में रखते हुए तथा गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग एवं अंतरिक्ष विभाग के निर्देशानुसार, भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद के मुख्य परिसर सहित अन्य तीनों परिसरों थलतेज, माउंट आबू अवरक्त वेधशाला, उदयपुर सौर वेधशाला में, सितंबर माह के दौरान, हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु हिंदी माह के आयोजन की व्यवस्था की गई थी।

इस वर्ष 16 सितंबर 2022 से 14 अक्टूबर 2022 के दौरान हिंदी माह मनाया गया तथा हिंदी माह कार्यक्रमों/प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिंदी माह कार्यक्रमों/प्रतियोगिताओं में भारत की स्वतंत्रता के गौरवपूर्ण 75 वर्ष के आजादी का अमृत महोत्सव को भी सम्मिलित किया गया। साथ ही विश्व अंतरिक्ष सप्ताह भी मनाया गया। हिंदी माह प्रारंभ होने से पूर्व, निदेशक, पी.आर.एल. द्वारा सभी स्टाफ सदस्यों को अधिकाधिक कार्यालयीन काम-काज हिंदी में करने की अपील की गई।

इस वर्ष हिंदी दिवस की शुरुआत सूरत, गुजरात से द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के माध्यम से हुई जिसकी अध्यक्षता स्वयं गृहमंत्री, भारत सरकार ने की। देशभर के कार्यालयों से राजभाषा के प्रतिनिधियों ने सूरत के सम्मेलन में पहुंच कर अपने-अपने कार्यालयों का प्रतिनिधित्व किया। पीआरएल अहमदाबाद के मुख्य परिसर, माउंट आबू अवरक्त वेधशाला एवं उदयपुर सौर वेधशाला से कुल छह सदस्यों ने इस सम्मेलन में प्रतिनिधित्व किया।

हिंदी पखवाड़ा समिति ने उपरोक्त संयोगों एवं उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए, पीआरएल में इस वर्ष हिंदी माह के आयोजन का निर्णय लिया एवं विभिन्न रोचक कार्यक्रमों का आयोजन किया। इस बात का विशेष ध्यान रखा गया कि सभी भाषा-भाषी एवं कर्मचारी वर्ग इन प्रतियोगिताओं में भाग ले सकें। इनमें से अधिकांश प्रतियोगिताओं में हिंदी भाषा के उपयोग पर विशेष बल दिया गया।

हिंदी माह समारोह का उद्घाटन कार्यक्रम 16 सितंबर, 2022 को किया गया जिसमें सर्वप्रथम मंचासीन महानुभवों ने दीप प्रज्वलन करके कार्यक्रम की शुरुआत की एवं हिंदी माह समिति अध्यक्ष ने सम्पूर्ण हिंदी माह कार्यक्रम की रूपरेखा बताई।

इस कार्यक्रम में डॉ. आर.जे. सुराणी, व्यवसायिक काउंसलर, विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने “आपसी संबंधों में प्रतिक्रिया का कारोबार” विषय पर हिंदी में बहुत ही सरल सहज व्याख्यान दिया।

हिंदी माह के दौरान आयोजित कार्यक्रम:

तिथि	कार्यक्रमों का विवरण
16 सितंबर, 2022	उद्घाटन कार्यक्रम एवं हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी
19 सितंबर, 2022	हिंदी टंकण प्रतियोगिता
20 सितंबर, 2022	सुलेख प्रतियोगिता
27 सितंबर, 2022	आशुलेखन प्रतियोगिता
30 सितंबर, 2022	व्याख्यान: "जावर : जिक उत्पादन का प्राचीनतम केंद्र"
03 अक्टूबर, 2022	वर्ग पहेली, टिप्पण, एवं आलेखन
07 अक्टूबर, 2022	'हमारा कार्य' प्रतियोगिता
8 अक्टूबर, 2022	हिंदी गायन कार्यक्रम
10 अक्टूबर, 2022	शब्द प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता
11 अक्टूबर, 2022	लघुनाटिका एवं पुरस्कार वितरण

इन कार्यक्रमों में पीआरएल के सदस्यों एवं परिवार जनों ने काफी संख्या में उत्साह पूर्वक हिस्सा लिया। हिंदी माह प्रतियोगिताओं के पुरस्कार के लिए निदेशक महोदय द्वारा प्रत्येक प्रतियोगिता के वर्ग में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान के लिए पुरस्कार प्रदान किया गया।



कार्यक्रमों की कुछ झलकियां

उदयपुर सौर वेधशाला में आयोजित हिंदी पखवाड़ा समारोह

सौजन्य: अभिषेक

उदयपुर सौर वेधशाला/भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, उदयपुर में 14 से 30 सितम्बर 2022 के मध्य हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया। भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद के कार्यक्रमों में सहभागिता के साथ साथ उदयपुर सौर वेधशाला, उदयपुर में निम्नलिखित 5 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

1. प्रतियोगिता का शीर्षक- मेरा कार्य

आयोजन तिथि: 20 सितम्बर, 2022

हिंदी पखवाड़ा समारोह का आगाज उद्घाटन कार्यक्रम से हुआ। इसके उपरान्त मेरा कार्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में उदयपुर सौर वेधशाला के सदस्यों ने अपने क्षेत्र में किये गए महत्वपूर्ण कार्यों का विवरण हिंदी भाषा में प्रस्तुत किया।

2. प्रतियोगिता का शीर्षक- स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायकों की विचारधारा

आयोजन तिथि: 22 सितम्बर, 2022

स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायकों की विचारधारा प्रतियोगिता में प्रतिभागी स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम योद्धाओं के जीवन व उनकी विचारधारा पर विचार प्रकट कर उनके जीवन दर्शन को भी प्रस्तुत किया।

3. प्रतियोगिता का शीर्षक- हिंदी शब्द प्रश्नोत्तरी

आयोजन तिथि: 22 सितम्बर, 2022

हिंदी शब्द प्रश्नोत्तरी में हिंदी भाषा ज्ञान, वर्ग पहली, सामान्य ज्ञान तथा मुहावरों आदि से सम्बंधित प्रश्नों का संकलन था।

4. कार्यक्रम का शीर्षक- अतिथि व्याख्यान (विषय: जावर: जिक उत्पादन का प्राचीनतम केंद्र)

आयोजन तिथि: 30 सितम्बर, 2022

दिनांक 30 सितम्बर, 2022 को साय 4 बजे एक व्याख्यान, "जावर: जिक उत्पादन का प्राचीनतम केंद्र" विषय पर आयोजित किया गया। जिसके वक्ता प्रो. जे. एस. खड़कवाल विभागाध्यक्ष, पुरातत्व विभाग जनार्दन राय नागर राज. विद्यापीठ, उदयपुर थे। इस कार्यक्रम में उदयपुर सौर वेधशाला एवं भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद मुख्य परिसर से लगभग 50 सदस्य शामिल हुए एवं उक्त व्याख्यान से लाभान्वित हुए।

5. प्रतियोगिता का शीर्षक- काव्य पाठ एवं गीत गायन

आयोजन तिथि: 30 सितम्बर, 2022

काव्य पाठ एवं गीत गायन प्रतियोगिता में उदयपुर सौर वेधशाला के सदस्यों व उनके परिवार के सदस्यों को कविताओं एवं गीत गायन करने का अवसर प्रदान किया गया।

हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह में उदयपुर सौर वेधशाला/भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, उदयपुर के वरिष्ठ प्रोफेसर एवं उप प्रधान (प्रशासन) प्रो. नंदिता श्रीवास्तव ने अपना विचार एवं वक्तव्य दिया तथा हिंदी के उत्थान एवं विकास हेतु अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने का अनुरोध किया। इस उपलक्ष्य में उदयपुर सौर वेधशाला के हिंदी पखवाड़ा समिति के अध्यक्ष डॉ. ब्रजेश कुमार ने विभिन्न हिंदी पखवाड़ा के सफल संचालन हेतु समिति के सभी सदस्यों एवं प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।



उ.सौ.वे/पीआरएल, उदयपुर में हिंदी पखवाड़ा 2022 के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ

शुक्र ग्रह-विज्ञान सम्मेलन

सौजन्य: डॉ. जयेश पबारी

शोधकर्ता कई दशकों से ग्रहीय विज्ञान के क्षेत्र में काम कर रहे हैं और शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनि जैसे विभिन्न ग्रहों का पता लगा रहे हैं। हालांकि, शुक्र ग्रह, जिसे पृथ्वी की बहन कहा गया है, विभिन्न कारणों से अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के लिए रुचिकर रहा है। शुक्र ग्रह पर कुछ खुली शोध समस्याएं हैं जैसे शुक्र ग्रह की सतह का विकास, अज्ञात यूवी अवशोषक, बिजली, अति-घूर्णन और अंतरिक्ष मौसम। शुक्र ग्रहीय विज्ञान पर अवलोकन 1960 के दशक में वेनेरा के समय से किया जा रहा है और कई मिशन जैसे मेरिनर, पायनियर वीनस, वेगा, मैगलन, वीनस एक्सप्रेस, अकात्सुकी, इकारोस ने विज्ञान समुदाय को बहुत सारे डेटा प्रदान किए हैं। इसके अलावा, गैलीलियो, कैसिनी, मेसेंजर, पार्कर सोलर प्रोब, बेपीकोलंबो और सोलर ऑर्बिटर जैसे अन्य अनपेक्षित मिशनों ने भी शुक्र के नजदीकी अवलोकन प्रदान किए हैं। मिशनों के डेटा विश्लेषण से शुक्र ग्रह से संबंधित विभिन्न वैज्ञानिक परिणाम प्राप्त होते हैं और साहित्य में उपलब्ध होते हैं। दुनिया भर में कई सम्मेलन शुक्र ग्रह के विज्ञान पर चर्चा करने के लिए आयोजित किए जाते हैं, जिनमें से कई बड़े सम्मेलन का भाग होते हैं या इस विषय पर पूर्ण समर्पित सम्मेलन होते हैं।

हाल ही में, भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (पीआरएल) ने 29-30 सितंबर 2022 को शुक्र ग्रह पर द्वितीय शुक्र ग्रहीय विज्ञान सम्मेलन-2022 (ऑनलाइन) आयोजित किया था। यह शुक्र ग्रह के अन्वेषण के लिए मॉडलिंग, अवलोकन, डेटा विश्लेषण, वैचारिक उपकरण डिजाइन और वैज्ञानिक प्रयोगों पर केंद्रित था। इस सम्मेलन में शामिल किए गए प्रमुख अनुसंधान क्षेत्र थे सतह, वायुमंडल, बादल, जीसीएम, आकाशीय बिजली, वायु चमक, रहने की योग्यता, आयनमंडल, अंतरग्रहीय धूल और ग्रह के साथ सौर पवन अन्योन्यक्रिया। इस तरह का सम्मेलन दुनिया भर में समुदाय के बीच चर्चा करने का अवसर प्रदान करता है और समय के साथ इन्हीं क्षेत्रों में काम करने वाले लोगों के साथ सहयोग करने का भी अवसर प्रदान करता है।

इस सम्मेलन के लिए 172 से अधिक प्रतिनिधियों ने पंजीकरण कराया था, जिनमें मौखिक एवं लघु मौखिक प्रस्तुतियों के लिए वक्ता, और अन्य सदस्य उपस्थित थे। मौखिक प्रस्तुतियों में विदेशी विश्वविद्यालयों/संस्थानों से 24 वार्ताएं और भारतीय संस्थानों से 15 वार्ताएं थीं। लघु मौखिक प्रस्तुतियों में भारतीय संस्थानों से 18 वार्ताएं हुईं। वार्ता के कुछ उदाहरण ग्रेट क्लाइमेट ट्रांजिशन, क्लाउड पार्टिकल सैपल रिटर्न, बैलून एंड इन-सीटू मिशन, अकात्सुकी परिणाम, लाइटनिंग और व्हिसलर वेक्स, वीनसियन जीसीएम, एटमॉस्फेरिक एस्केप, रेडियो ऑकल्टेशन एक्सपेरिमेंट्स और इंटरप्लेनेटरी डस्ट इनसाइड 1 AU हैं। इस वर्ष, हमने उन सदस्यों के लिए शुक्र ग्रहीय डेटा विश्लेषण पर एक विशिष्ट सत्र शामिल किया था, जो भविष्य में डेटा विश्लेषण करने के इच्छुक हैं।



उद्घाटन सत्र की कुछ झलकियां

भारत के बाहर अमेरिका, ब्रिटेन, जापान, स्वीडन, दक्षिण कोरिया, ताइवान, जर्मनी, फ्रांस और नॉर्वे जैसे स्थानों के विश्वविद्यालय/संस्थान शामिल थे। भारत के भीतर के केंद्रों/संस्थानों में सैक, आईआईआरएस, एसपीएल, पीआरएल, चारूसैट, एमिटी यूनिवर्सिटी, एनएआरएल, सेंट जेवियर्स कॉलेज, आईआईटीबी, आईआईएसईआर, एनआईएसईआर, इलाहाबाद एवं पंजाब विश्वविद्यालय शामिल थे। वीनस विज्ञान सम्मेलन में 4 समय क्षेत्रों वाले वक्ताओं को शामिल किया गया था।

माननीय श्री ए.एस. किरण कुमार (अध्यक्ष, पीआरएल परिषद) और माननीय प्रो. अनिल भारद्वाज (निदेशक, पीआरएल) ने उद्घाटन सत्र में भाग लिया था। सभी उल्लिखित अनुसंधान क्षेत्रों को सम्मिलित करते हुए 7 सत्र थे। सत्र अध्यक्ष अपने-अपने क्षेत्र में अनुभवी थे और वे विभिन्न इसरो/अन्य केंद्रों से थे। सम्मेलन के अंत में समापन सत्र हुआ। प्रो. अनिल भारद्वाज (निदेशक, पीआरएल), प्रो. डी. पल्लमराजू (डीन, पीआरएल), एसओसी और एलओसी

सदस्य, विस्तारित एलओसी सदस्य, डॉ. भूषित वैष्णव (प्रधान, शैक्षणिक सेवाएं), श्री दिनेश मेहता, आईटी टीम, इलेक्ट्रिकल टीम और अन्य सदस्यों ने सम्मेलन के लिए आवश्यक सहयोग दिया था।



सहायता केंद्र की तस्वीर



पीआरएल परिसरों में स्वच्छता अभियान

सौजन्य: आ.का.अ.म. स.

गांधी जयंती प्रतिवर्ष 2 अक्टूबर को महात्मा गांधी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में मनाई जाती है। इसी के अंतर्गत मंगलवार, 4 अक्टूबर, 2022 को आजादी का अमृत महोत्सव के भाग के रूप में स्वच्छता अभियान चलाया गया।

पीआरएल मुख्य परिसर

स्वच्छता अभियान की शुरुआत पीआरएल मुख्य परिसर के नर्सरी से हुई। इस गतिविधि का नाम दिया गया था "हमारा स्वच्छ परिसर"।

प्रशिक्षुओं, शोधार्थियों और छात्रों सहित पीआरएल के स्टाफ सदस्यों ने उत्साहपूर्वक इस कार्यक्रम में भाग लिया। इस स्वच्छता अभियान के दौरान विशेष ध्यान परिसर से प्लास्टिक कचरे को उठाना और परिसर को साफ-सुथरा बनाना था।



इस अभियान में सक्रिय और उत्साही प्रतिभागिता देखी गई। स्टाफ सदस्यों ने कार्यालय के प्रत्येक तल पर अलग-अलग कूड़ेदान रखने के बारे में भी चर्चा की, ताकि अनुपयोगी रद्दी कागज को एकत्र किया जा सके, जिसे एकत्र कर बेचने या कतरने के लिए भंडार अनुभाग में स्थानांतरित किया जा सकता है। सह-अध्यक्ष ने दैनिक वेतन भोगियों को स्वच्छता के महत्व के बारे में जागरूक किया और उनसे परिसर के भीतर इसका पालन करने का आग्रह किया।

पीआरएल थलतेज परिसर

4 अक्टूबर, 2022 को पीआरएल थलतेज परिसर में भी स्वच्छता अभियान चलाया गया। स्वच्छता अभियान की शुरुआत पुराने बिल्डिंग प्रशासन फ़ोयर से हुई। वरिष्ठ प्रोफेसर, प्रशिक्षुओं, शोधार्थियों, छात्रों और संविदात्मक कर्मियों सहित पीआरएल स्टाफ सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सदस्यों की ओर से यह भी सुझाव आया कि पीआरएल स्टाफ क्वार्टरों के लिए भी इसी तरह का अभियान चलाया जाना चाहिए।



पीआरएल माउंट आबू परिसर

10 अक्टूबर, 2022 सोमवार को पीआरएल माउंट आबू परिसर में स्वच्छता अभियान चलाया गया। इस कार्यक्रम में प्रशिक्षुओं और संविदात्मक कर्मचारियों सहित पीआरएल स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया। इसका उद्देश्य हिल व्यू कैम्पस के मुख्य द्वार के बाहर से सभी कचरे को इकट्ठा करना था और उन्हें कूड़ेदान में फेंकना था। परिसर को साफ-सुथरा बनाने के लिए परिसर में झाड़ू लगाया गया।



पीआरएल उदयपुर सौर वेधशाला परिसर

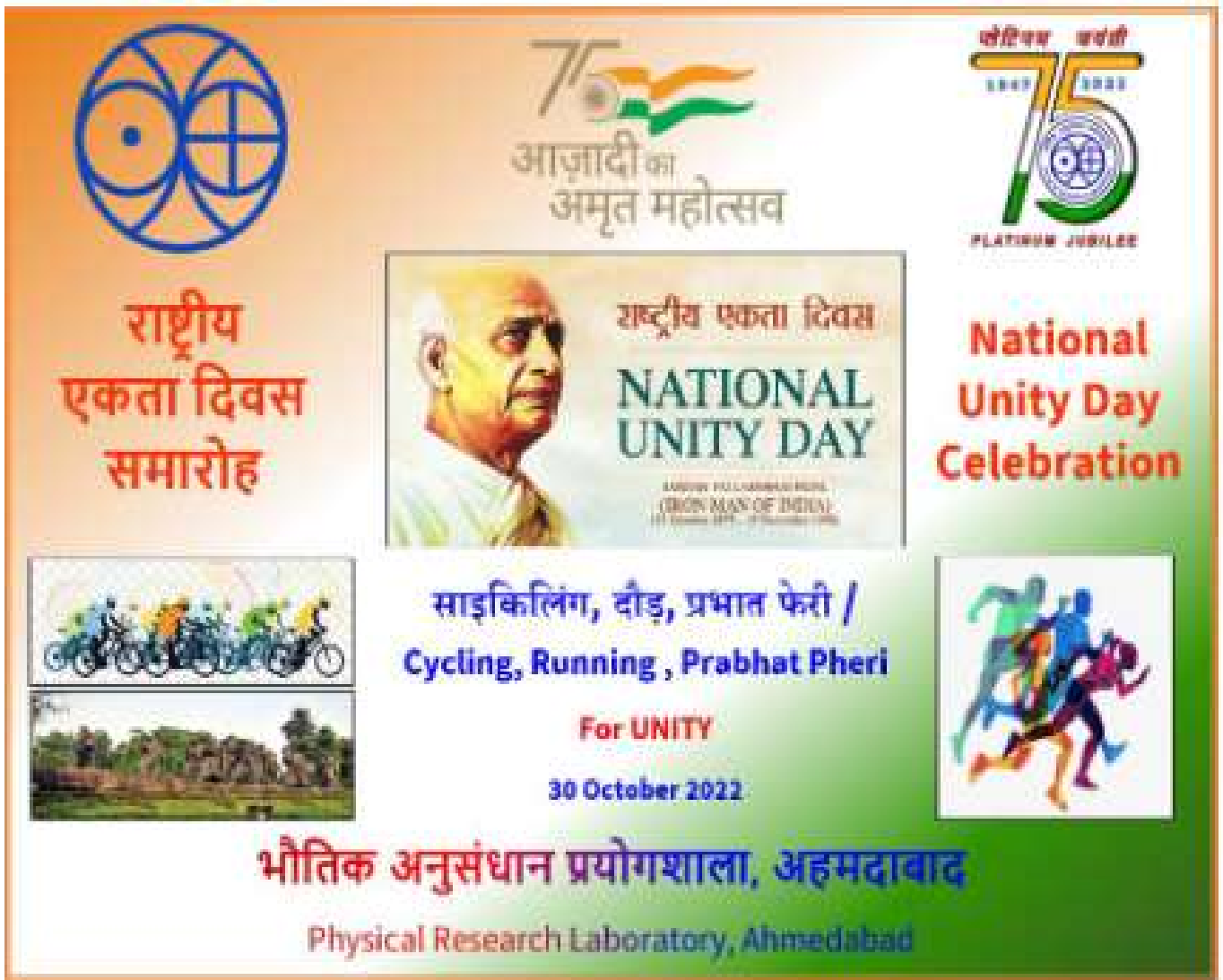
उ.सौ.वे / पी.आर.एल., उदयपुर में फतेहसागर झील के टापू पर स्थित वेधशाला के आस-पास जल स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए फतेहसागर झील में एक विशेष स्वच्छता अभियान किया गया। उ.सौ.वे के मुख्य कार्यालय परिसर में दिनांक 12/10/2022 को उ.सौ.वे के सभी स्टाफ सदस्यों, शोधार्थियों, पीडीएफ़ और प्रशिक्षुओं द्वारा स्वच्छता अभियान किया गया। स्वच्छता अभियान के हिस्से के रूप में उ.सौ.वे के आवासीय परिसर और छात्रावास परिसर में स्वच्छता अभियान किया गया, जिसमें कॉलोनी एवं छात्रावास निवासियों ने अपना बहुमूल्य योगदान दिया।



राष्ट्रीय एकता दिवस

सौजन्य: आ.का.अ.म. स.

भारत के लौह पुरुष- सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती को चिह्नित करने के लिए वर्ष 2014 से हर साल 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया जाता है। इस साल स्वतंत्रता सेनानी की 147वीं जयंती है। सरदार पटेल ने 560 से अधिक रियासतों को एक साथ लाकर भारत (एक भारत) के एकीकरण में एक प्रमुख भूमिका निभाई। राष्ट्र को एकजुट करने के उनके प्रयासों को स्मरण करने के लिए, भारत उनकी जयंती पर राष्ट्रीय एकता दिवस मनाता है।



The poster is a vibrant green and orange design. At the top left is a blue circular logo with a stylized 'U' and 'A'. In the center, there's a portrait of Sardar Vallabhbhai Patel with the text 'राष्ट्रीय एकता दिवस' and 'NATIONAL UNITY DAY'. To the right, there's a '75' logo for the Platinum Jubilee. Below the portrait, it lists activities: 'साइकिलिंग, दौड़, प्रभात फेरी / Cycling, Running, Prabhat Pheri'. At the bottom, it specifies the date '30 October 2022' and the location 'भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद / Physical Research Laboratory, Ahmedabad'. There are also small images of cyclists and runners.

राष्ट्रीय एकता दिवस समारोह

आज़ादी का अमृत महोत्सव

75 PLATINUM JUBILEE

राष्ट्रीय एकता दिवस
NATIONAL UNITY DAY
SARDAR VALLABHBHAI PATEL
(IRON MAN OF INDIA)
31 OCTOBER 1887 - 23 FEBRUARY 1964

National Unity Day Celebration

साइकिलिंग, दौड़, प्रभात फेरी /
Cycling, Running, Prabhat Pheri

For UNITY
30 October 2022

भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद
Physical Research Laboratory, Ahmedabad

सरदार पटेल की जयंती और राष्ट्रीय एकता दिवस मनाने के लिए, आजादी का अमृत महोत्सव समिति, पीआरएल ने 30 अक्टूबर 2022 (रविवार) को "एकता के लिए-साइक्लिंग, दौड़, प्रभात फेरी" का आयोजन किया। पीआरएल के सभी सदस्यों (स्थायी स्टाफ सदस्य, शोध छात्र-छात्रा, प्रोजेक्ट एसोसिएट, पोस्ट-डॉक्टरल फेलो, प्रशिक्षुओं, संविदात्मक जनबल) और परिवार के सदस्यों को उनकी सुविधा के अनुसार अभियान में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया था। आ.का.अ.म. के अंतर्गत पीआरएल के छात्र-छात्रा की टीम ने इस अभियान का नेतृत्व किया। साइक्लिंग (~ 10 किमी) और दौड़ (~ 5.5 किमी) पीआरएल थलतेज परिसर से लगभग प्रातः 06:45 बजे शुरू हुआ और पीआरएल मुख्य परिसर में समाप्त हुआ। उसके बाद वहां मौजूद सभी सदस्यों ने पीआरएल के मुख्य परिसर से गुजरात विश्वविद्यालय, पांजरापोल, आईआईएम और मुख्य परिसर (~3 किमी) की ओर पैदल यात्रा शुरू की। साइक्लिंग, दौड़ और पदयात्रा में प्रतिभागियों की कुल संख्या क्रमशः 25, 12 और 110 थी। इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम ने सभी प्रतिभागियों के बीच "एकता" की भावना का सृजन किया।



राष्ट्रीय एकता दिवस के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रमों की कुछ झलकियां

ASPEX पेलोड के प्रणालियों का प्रस्थान

सौजन्य: दिब्येंदु चक्रवर्ती

आदित्य L1 सूर्य का अध्ययन करने वाला भारत का पहला अंतरिक्ष आधारित समर्पित सौर अभियान है। अंतरिक्ष यान को सूर्य-पृथ्वी प्रणाली के प्रथम लग्रांजी बिंदु के चारों ओर एक प्रभामंडल कक्षा में डाला जाएगा, जो पृथ्वी से लगभग 1.5 मिलियन किमी दूर है। L1 बिंदु के आसपास प्रभामंडल कक्षा में स्थापित किसी उपग्रह को सूर्य को बिना किसी उपग्रहन/ग्रहण के लगातार अवलोकन का लाभ मिलता है। आदित्य-L1 अंतरिक्ष यान पर सात प्रयोग (चार सुदूर संवेदन और तीन स्वस्थाने) होंगे। इन स्वस्थाने प्रयोगों में से एक-आदित्य सोलर विंड पार्टिकल एक्सपेरिमेंट (ASPEX) की वैज्ञानिक परिकल्पना एवं विकास-कार्य पीआरएल में किया गया है, एवं इस कार्य में सैक, यूआरएससी, लिओस आदि जैसे इसरो केंद्रों ने सहायता प्रदान की है।

ASPEX की दो उप प्रणालियां हैं - SWIS (सोलर विंड आयन स्पेक्ट्रोमीटर) और STEPS (सुप्रा थर्मल एंड एनर्जेटिक पार्टिकल स्पेक्ट्रोमीटर)। SWIS, एक्लिप्टिक तल के पास एवं उसके चारों ओर सौर वायु (100 eV-20 keV) को मापेगा, एवं STEPS छह अलग-अलग दिशाओं से सुपरथर्मल और ऊर्जावान कणों (20 keV/n - 5 MeV/n) को मापेगा। सौर वायु में प्रोटॉन और अल्फा ASPEX के लिए मुख्य रूप से महत्वपूर्ण हैं और ये माप दिशा-विभेदित होंगे।

ASPEX प्रयोग के SWIS और STEPS उप-प्रणालियों के उड़ान मॉडलों को उपग्रह में एकीकरण के लिए और इसके पहले और बाद में सभी आवश्यक परीक्षण करने के लिए हाल ही में इन्हें यूआरएससी, बेंगलूरू को सौंपा गया है। ASPEX पेलोड के STEPS उप-प्रणाली को 23 नवंबर, 2022 को पीआरएल के मुख्य परिसर से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। श्री ए.एस. किरण कुमार, अध्यक्ष, पीआरएल प्रबंध परिषद ने STEPS उप-प्रणाली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

19 दिसंबर, 2022 को पीआरएल के थलतेज परिसर से SWIS उप-प्रणाली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। ASPEX के परीक्षण और अंशांकन गतिविधियों में सहायता प्रदान करने वाले सैक के कई वरिष्ठ सहयोगी इस अवसर पर उपस्थित थे। पीआरएल के निदेशक, प्रो. अनिल भारद्वाज ने SWIS उप-प्रणाली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

प्रक्षेपण के बाद L1 बिंदु के आसपास प्रभामंडल कक्षा की ओर ASPEX की लंबी यात्रा (अन्य पेलोड के साथ) जारी रहेगी और यह चौबीसों घंटे सौर वायु प्रोटॉन और अल्फा पर बहु-दिशिक जानकारी प्रदान करेगा।



श्री ए.एस. किरण कुमार, अध्यक्ष, पीआरएल प्रबंध परिषद ने STEPS उप-प्रणाली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया



पीआरएल के निदेशक, प्रो. अनिल भारद्वाज ने SWIS उप-प्रणाली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया

कंठस्थ अनुवाद टूल कार्यशाला

सौजन्य: रुमकी दत्ता

राजभाषा नियमों के अनुसार, प्रत्येक तिमाही में स्टाफ सदस्यों को राजभाषा संबंधी प्रशिक्षण देने के लिए एक हिंदी कार्यशाला की जाती है। इसके अंतर्गत अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में "कंठस्थ" अनुवाद टूल (जो राजभाषा विभाग एवं सी-डैक द्वारा मशीन साधित अनुवाद टूल है) का प्रशिक्षण दिया गया।

इसमें अनुवाद के अतिरिक्त भी अनूदित विषय-वस्तु को परिशुद्ध करने की विभिन्न सुविधाएं हैं। पीआरएल के सहायक निदेशक (रा.भा.) एवं यूएसओ के प्रशासनिक अधिकारी को इस टूल से संबंधित प्रशिक्षण अंतरिक्ष विभाग द्वारा दिया गया था, एवं उन्होंने गुरुवार, 24.11.2022 को इस संबंध में पीआरएल के सभी प्रशासनिक क्षेत्र में कार्यरत सदस्यों को प्रशिक्षण दिया। इस कार्यशाला में श्री अभिषेक, प्रशासनिक अधिकारी ने वक्ता के रूप में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया एवं इस कार्यशाला में संयुक्त रूप से श्रीमती रुमकी दत्ता, सहायक निदेशक (रा.भा.) द्वारा भी प्रशिक्षण दिया गया।

इसमें निम्नलिखित पीआरएल के सदस्य उपस्थित रहे:

1. श्री फेमिक्स जॉर्ज	2. श्री सौरभ सुमन
3. सुश्री श्रेया पांडेय	4. सुश्री हिरल धुविन मोदी
5. सुश्री ज्योति लिंबात	6. श्री संदीप भगवानदास मंगलानी
7. श्री केयूर डी पंचसरा	8. सुश्री जलधि तरुणकुमार मेहता
9. सुश्री जयश्री बालन अय्यर	10. सुश्री स्नेहा नायर
11. सुश्री हर्षबिन परमार	12. श्री मंटू महर
13. श्री कन्हव मुलासी	14. सुश्री टी. एस. नीतू
15. श्री सूरज कुमार	16. सुश्री सबा अब्बासी
17. श्री अभिषेक प्रसाद	18. सुश्री मनीषा मिश्रा
19. श्री शशि कांत	20. श्री लवजीत मीना

अंतर्राष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन दिवस

सौजन्य: नंदिनी राव

पीआरएल द्वारा 25 नवंबर 2022 को पीआरएल महिला कर्मचारियों और छात्राओं सहित पीआरएल कर्मचारियों के परिवार के महिला सदस्यों के लिए एक विशेष व्याख्यान की व्यवस्था करते हुए "अंतर्राष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन दिवस" मनाया गया। प्रो. श्रुबाबती गोस्वामी, सदस्य, आंतरिक शिकायत समिति और अध्यक्ष, महिला सेल ने महिलाओं के विरुद्ध हिंसा के वर्तमान परिदृश्य का संक्षिप्त परिचय दिया। डॉ. शीतल पटेल, अध्यक्ष, आंतरिक शिकायत समिति ने हमारे समाज के इस अत्यंत महत्वपूर्ण विषय के बारे में विस्तृत जानकारी दी। पीआरएल परिसर से बयासी महिला सदस्य और यूएसओ परिसर से चार महिला सदस्य ने कार्यक्रम में भाग लिया। इसके बाद महिला कर्मचारियों और छात्राओं के साथ सक्रिय संवादात्मक सत्र का आयोजन किया गया।

वर्ष 2022 के नवंबर माह में "महिलाओं का कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न: चुनौतियां और समाधान" विषय पर पीआरएल के सभी 4 परिसरों में निबंध प्रतियोगिता आयोजित करके PoSH अधिनियम, 2013 के ऐतिहासिक निर्णय का स्मरण किया गया। निबंध के लिए दस प्रविष्टियां प्राप्त हुईं जिनका मूल्यांकन किया गया और 9 दिसंबर को हिंदी और अंग्रेजी में निबंधों के लिए विजेताओं की घोषणा की गई।

इस कार्यक्रम के शुरुआत में, डॉ. निष्ठा अनिल कुमार, संयोजक आइसीसी ने उपस्थित कर्मचारियों का अभिवादन किया और आइसीसी का संक्षिप्त परिचय दिया। इस कार्यक्रम के दौरान आइसीसी पीआरएल की महिला सेल की अध्यक्ष और सदस्य प्रो. श्रुबाबती ने देश में यौन उत्पीड़न के वर्तमान परिदृश्य के बारे में बात की। इसके बाद पीआरएल में आयोजित निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं द्वारा प्रस्तुति दी गई। आइसीसी सदस्य प्रो. नंदिता द्वारा विजेताओं के नामों की घोषणा की गई। सुश्री हर्षा पारीक, श्री कुशाग्र उपाध्याय क्रमशः हिंदी और अंग्रेजी में प्रथम, उसके बाद श्रीमती रुमकी दत्ता, श्री हर्ष चोपड़ा (हिंदी) और सुश्री श्वेतपुष्पा और सुश्री दिव्या कुलकर्णी (अंग्रेजी) ने पुरस्कार प्राप्त किये। डॉ. शीतल पटेल, अध्यक्ष आइसीसी ने ऑफ़लाइन उपस्थित विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया। इसके बाद सभी विजेताओं (दो ऑफ़लाइन और चार ऑनलाइन) द्वारा संक्षिप्त प्रस्तुतियां दी गईं। इन प्रस्तुतियों के बाद, प्रो. रवि भूषण, सदस्य आइसीसी ने पीआरएल में यौन उत्पीड़न और आइसीसी के बारे में अपना वक्तव्य रखा। डॉ. मेघा भट्ट ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

सत्र में लगभग 150 कर्मचारी और छात्र-छात्रा थे- जिन्होंने इस कार्यक्रम में भाग लिया।



कार्यक्रम की कुछ झलकियां

संविधान दिवस

सौजन्य: हर्षा परमार

भारत सरकार ने हमारे संविधान को अपनाने के दिन को प्रत्येक वर्ष "संविधान दिवस" के रूप में मनाए जाने का निर्णय लिया है। तदनुसार, अंतरिक्ष विभाग, बेंगलूरु से प्राप्त निर्देशों के अनुसार, पी.आर.एल. में 26 नवंबर, 2022 को संविधान दिवस मनाया गया।

26 नवंबर, 2022 को शनिवार होने के कारण, सभी स्टाफ सदस्यों से अनुरोध किया गया कि वे 25.11.2022 (शुक्रवार) को 11:00 बजे अपने-अपने कार्यस्थल पर संविधान की "उद्देशिका" पढ़ें। इस तरह पीआरएल में "संविधान दिवस" मनाया गया।

हिंदी दिवस

सौजन्य: रुमकी दत्ता

इस वर्ष हिंदी दिवस की शुरुआत सूरत गुजरात से द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के माध्यम से हुई है, एवं इस सम्मेलन की अध्यक्षता स्वयं गृह एवं सहकारिता मंत्री महोदय ने की। देशभर के कार्यालयों से राजभाषा के प्रतिनिधियों ने सूरत के सम्मेलन में पहुंच कर कार्यालयों का प्रतिनिधित्व किया।

पीआरएल से निम्न सदस्यों ने द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में 14-15 सितम्बर 2022 के दौरान भाग लिया :

पीआरएल मुख्य परिसर: श्रीमती रुमकी दत्ता एवं श्रीमती हर्षा परमार।

माउंट आबू: श्री अभिषेक प्रसाद एवं श्री आशीर्बाद नायक।

उदयपुर सौर वेधशाला: श्री अभिषेक एवं श्री कुशाग्र उपाध्याय।

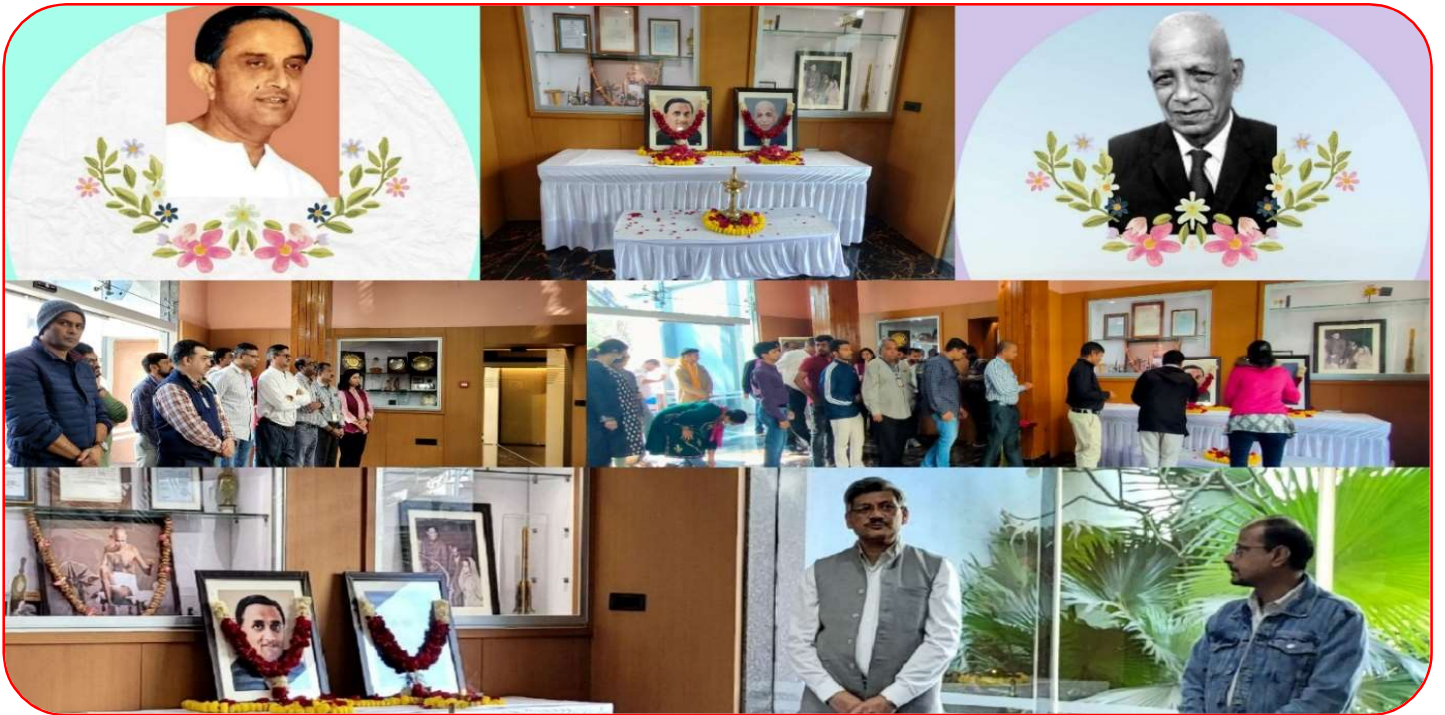


स्वर्गीय प्रो. विक्रम साराभाई और स्वर्गीय प्रो. के.आर. रामनाथन की पुण्यतिथि

सौजन्य: हर्षा परमार

भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला के संस्थापक स्वर्गीय प्रोफेसर विक्रम ए. साराभाई और पीआरएल के संस्थापक निदेशक स्वर्गीय प्रोफेसर के.आर. रामनाथन को शुक्रवार, दिनांक 30.12.2022 को के.आर. रामनाथन ऑडिटोरियम के फोयर क्षेत्र में श्रद्धासुमन अर्पित किया गया।

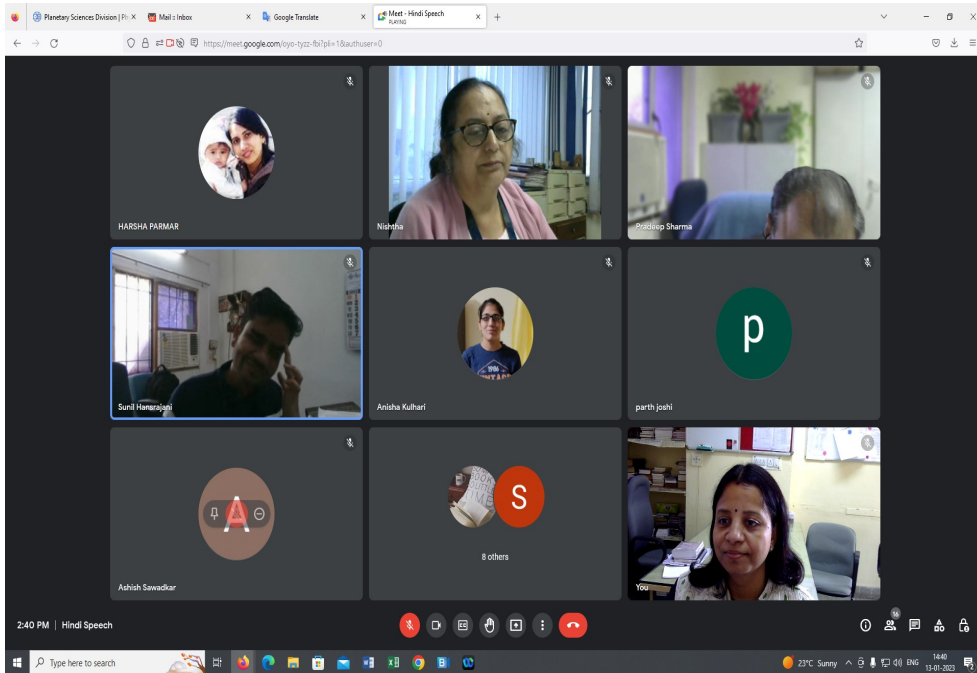
विज्ञान के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान देने वाले प्रो. साराभाई और प्रो. रामनाथन के स्मरण में दो मिनट का मौन रखा गया। तत्पश्चात डीन, पीआरएल प्रो. डी. पल्लम राजू ने पीआरएल सदस्यों को संबोधित किया और प्रो. विक्रम ए. साराभाई और प्रो. के.आर. रामनाथन द्वारा, विशेष रूप से पीआरएल में किये महत्वपूर्ण वैज्ञानिक योगदान पर अपने विचार साझा किए। इसके बाद, पीआरएल के सदस्यों ने प्रो. विक्रम ए. साराभाई और प्रो. के.आर. रामनाथन को श्रद्धांजलि अर्पित की।



विश्व हिंदी दिवस

सौजन्य: रुमकी दत्ता

विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 13 जनवरी 2023 को एक ऑनलाइन हिंदी भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें पीआरएल के मुख्य परिसर के साथ साथ उदयपुर एवं माउंट आबू परिसर के सदस्यों ने भाग लिया। कुल मिलाकर 17 सदस्यों की उपस्थिति दर्ज हुई एवं 6 प्रतिभागियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतियोगिता का विषय था 1. विश्वभाषा बनने में हिंदी के समक्ष चुनौतियां और 2. सामाजिक विकास में साहित्य का योगदान जिसमें से प्रतिभागियों को किसी एक विषय का चयन करना था। प्रतियोगिता में हिंदी साहित्य संबंधी व्यापकता का पता चला और हिंदी भाषा के वैश्विक स्तर और उसकी चुनौतियों के संबंध में भी बोध हुआ। इस कार्यक्रम में निर्णायक के रूप में श्री प्रदीप कुमार शर्मा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं डॉ. (श्रीमती) निष्ठा अनिल कुमार, पुस्तकालय अधिकारी-एफ उपस्थित रहे और इस कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन श्रीमती रुमकी दत्ता, सहायक निदेशक (रा. भा.) ने किया।



विश्व हिंदी दिवस की झलकियां

थलतेज परिसर में आज़ादी का अमृत महोत्सव समिति पुस्तक प्रदर्शनी

सौजन्य: आ.का.अ.म. स.

पीआरएल पुस्तकालय द्वारा 26-27 जनवरी 2023 को थलतेज परिसर के ओल्ड बिल्डिंग फ़ोयर में आ. का. अ. म. गतिविधि के भाग के रूप में एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। तीन पुस्तक विक्रेताओं द्वारा लगभग 600 वैज्ञानिक, सामान्य और हिंदी पुस्तकें प्रदर्शित की गई थीं।

परिसर में इस प्रकार की प्रदर्शनी, कर्मचारियों को उनकी रुचि के क्षेत्र में कई पुस्तकों को देखने/खरीदने में मदद करती है जो पुस्तकालय संग्रह बढ़ाने में उपयोगी हैं। इस प्रदर्शनी में पीआरएल के शोध छात्र/छात्राओं, कर्मचारियों और संकाय सदस्यों की सक्रिय भागीदारी देखने को मिली। उनके द्वारा पुस्तकालय के लिए अनुशंसित 194 पुस्तकें और निजी उपयोग के लिए 4 पुस्तकें थीं। पीआरएल के शोध छात्र/छात्राओं, कर्मचारियों और संकाय सदस्यों ने इस कार्यक्रम का स्वागत किया।



पुस्तक प्रदर्शनी की झलकियां

पीआरएल में आयोजित ट्रेज़र हंट प्रतियोगिता

सौजन्य: आ.का.अ.म. स.

74वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर और आजादी का अमृत महोत्सव (आ.का.अ.म.) के अंतर्गत 26 जनवरी 2023 को पीआरएल थलतेज परिसर में ट्रेज़र हंट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य, सभी प्रतिभागियों को पीआरएल के थलतेज परिसर की विभिन्न सुविधाओं, प्रयोगशालाओं, गलियारों और कोनों से अवगत कराना था। इस कार्यक्रम में स्थायी कर्मचारियों, शोध छात्र/छात्राओं, परियोजना एसोसिएट, पोस्ट-डॉक्टरल फेलो, प्रशिक्षुओं और उनके परिवार के सदस्यों- माता-पिता/पति/पत्नी/बच्चे (10 वर्ष और उससे अधिक आयु के बच्चे) सहित कुल 105 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों को 20 टीमों में विभाजित किया गया था और एक गूगल फॉर्म के माध्यम से संकेतों (क्लू) के लिंक प्रदान किए गए थे। प्रत्येक टीम को इस प्रकार से चिह्न ढूँढने के ले दिए गए थे ताकि वे पूरे परिसर को देख सकें। काफी मनन-चिंतन करते हुए सभी क्लू को विशिष्ट परिचय दिया गया था जिनमें तारामंडल और प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिकों के नाम शामिल थे। इस प्रतियोगिता के अनुसार प्रत्येक टीम को अपने निर्धारित स्थानों पर पहुंचना था और उस स्थान पर अपने समूह सदस्यों की एक सेल्फी अपलोड करनी थी। सेल्फी अपलोड होने के बाद, टीम को अगला क्लू गूगल फॉर्म द्वारा मिला। कम से कम समय में सही ढंग से इस हंट (प्रतियोगिता) को पूरा करने वाली टीमें विजेता रहीं। उत्साही सहयोगियों की मदद से यह कार्यक्रम बहुत सफल रहा।

कार्यक्रम के विजेता हैं:

स्थान	टीम क्रमांक	टीम के सदस्यों के नाम
1	8	निर्भय उपाध्याय, जूना, सुनील कुमार, शुभेंद्र एन. दास, कर्मन सिंह, विख्यात उपाध्याय
2	20	सना अहमद, दिब्येंद्र मिश्रा, अंकित, सोना पंचाल, उत्सव शर्मा
3	16	अनिल कुमार यादव, शशिकांत, पीना कोरी, शिवानी बलियान, स्मिता शाह, अक्षय प्रेरणा

आयोजक टीम Organizing Team, C-AKAM

आयोजक टीम के नेतृत्व में डॉ. निष्ठा अनिलकुमार और सदस्य - श्री वैभव दीक्षित, श्री विशाल एम. शाह, श्रीमती प्रीति के. पोद्दार, डॉ. विशाल जोशी, श्री जय कृष्ण मेका, श्री श्रीराग नारायणन नांबियार, डॉ. प्रज्ञा पांडे, श्री नीलम जे एस एस वी प्रसाद, श्री भाटिया विश्वेशराज, श्री विष्णुभाई आर. पटेल, डॉ. मो. नुरुल आलम, डॉ. लोकेश साहू, श्री प्रदीप कुमार शर्मा, श्री अतुल ए. मानके



ट्रेज़र हंट प्रतियोगिता की झलकियां

शहीद दिवस

सौजन्य: हर्षा परमार

भारत सरकार, अंतरिक्ष विभाग के निर्देश के अनुसार, 30 जनवरी को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले शहीदों की स्मृति में 'शहीद दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

पीआरएल सदस्यों ने सोमवार, 30 जनवरी, 2023 को अपने कार्यस्थल पर स्वतंत्रता सेनानियों की स्मृति में 2 (दो) मिनट का मौन रखा।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

सौजन्य: रुमकी दत्ता

सतर्कता जागरूकता सप्ताह जोकि 31 अक्टूबर से 6 नवंबर 2022 तक था उसमें पीआरएल के सदस्यों को ई-प्रतिज्ञा दर्ज करने की अपील की गई।

इस वर्ष सतर्कता जागरूकता का विषय " भ्रष्टाचार मुक्त भारत-विकसित भारत" रहा।

पीआरएल को एक ऐसे संगठन के रूप में विकसित करने और बनाए रखने के लिए आप सभी का धन्यवाद, जो अपने शानदार संस्थापक सदस्यों द्वारा निर्धारित समृद्ध परंपराओं के अनुसार पारदर्शिता, अखंडता और उच्च नैतिक मूल्यों में विश्वास करता है और वर्तमान व्यवस्था द्वारा जारी रखा गया है।



फुटबॉल टूर्नामेंट 2023

सौजन्य: चन्दन कुमार

वार्षिक पीआरएल फुटबॉल टूर्नामेंट 31.01.2023 को संक्षिप्त उद्घाटन के साथ शुरू हुआ। पिछले साल की तरह, छह टीमों ने जीत के लिए भाग लिया: ए & ए, एएमओपीएच, पीएसडीएन, जीएसडीएन, थ्योरी+एडमिन+सर्विसेज और एसपीएएससी। इंटर-एरिया फुटबॉल टूर्नामेंट 2023 का फाइनल रविवार सुबह (19 फरवरी 2023) को "ग्रहीय विज्ञान प्रभाग" और "खगोल विज्ञान एवं खगोल भौतिकी प्रभाग" के बीच आयोजित किया गया था। खगोल विज्ञान एवं खगोल भौतिकी प्रभाग ने फाइनल में 3-2 से जीत हासिल की। खिताब जीतने के लिए खगोल विज्ञान एवं खगोल भौतिकी प्रभाग और उपविजेता के लिए ग्रहीय विज्ञान प्रभाग को हार्दिक बधाई दी गई।



टूर्नामेंट की कुछ झलकियां

कार्यशाला "खगोल रसायन और सौर मंडल में गर्त" और एस्टेरॉयड डे

सौजन्य: डॉ. बालामुरुगन शिवरामन और डॉ. विजयन एस.

यह कार्यशाला अनुसंधान क्षेत्रों "खगोल रसायन" और "ग्रहीय सुदूर संवेदन" के अंतःविषय प्रकृति को दिखाने के लिए तथा विज्ञान कैरियर में अनुसंधान के इस क्षेत्र को चुनने के लिए अधिक युवाओं को आकर्षित करने का प्रयास करने की दृष्टि से 4-10 जुलाई 2022 को आयोजित की गई थी। लगभग 14 शोध/स्नातकोत्तर छात्रों ने भाग लिया, जिनके वर्तमान कार्य क्षेत्र भूविज्ञान/अनुप्रयुक्त भूविज्ञान, भूभौतिकी, भौतिकी, रसायन विज्ञान/खगोल रसायन से संबंधित हैं और वे देश के विभिन्न हिस्सों से हैं।

इस कार्यशाला में खगोल रसायन और ग्रहीय सुदूर संवेदन, परमाणु और आणविक भौतिकी, भूविज्ञान और जैवभौतिकी के क्षेत्र में विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान दिया गया था। साथ ही संक्षेप में जैवभौतिकी विषय पर भी चर्चा की गई क्योंकि यह खगोल रसायन से संबंधित विषय है। इसके अलावा, कार्यशाला के दौरान लगभग हर दिन प्रतिभागियों के लिए प्रायोगिक सत्र की व्यवस्था थी। उन्हें यह देखने का अवसर मिला कि प्रयोगशाला में गहन अंतरिक्ष और सौर प्रणाली की स्थितियों को कैसे उत्पन्न किया गया और आणविक आयनों की भौतिक-रासायनिक प्रकृति का अध्ययन किया गया। उन्हें हमारे अनोखे हाई टेम्परेचर शॉक ट्यूब फॉर एस्ट्रोकेमिस्ट्री (HISTA) में प्रयोग में भाग लेने का अवसर मिला। चंद्र और मंगल डेटासेट निष्कर्षण, डेटा विश्लेषण और व्याख्या पर प्रायोगिक सत्र सौर प्रणाली मॉड्यूल में क्रेटरिंग के भाग थे।

पहला दिन - कार्यशाला का उद्घाटन पीआरएल के निदेशक डॉ. अनिल भारद्वाज ने किया, इसके बाद डॉ. वरुण शील, प्रभागाध्यक्ष, पीएसडीएन और डॉ. आर.पी. सिंह, प्रभागाध्यक्ष, एएमओपीएच ने व्याख्यान दिया। पहला व्याख्यान "चंद्रमा का भूविज्ञान - सुदूर संवेदन परिप्रेक्ष्य" पर था। व्याख्याता ने उल्कापिंड प्रभाव और ज्वालामुखी प्रकृति के कारण हुए सौर मंडल की उत्पत्ति और विकास के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया। दिन का दूसरा व्याख्यान " एक विशाल प्रयोगशाला के रूप में ब्रह्मांड: परमाणुओं से जटिल अणुओं की संरचना" पर था। ये व्याख्यान खगोल रसायन, अंतरतारकीय माध्यम और इसके ऊर्जा स्रोतों और प्रयोगशाला में ऐसी चरम स्थितियों के पुनरुत्पत्ति के मूल सिद्धांतों पर था। पोस्टर मेकिंग, 3डी प्रिंटिंग और छात्रों की प्रस्तुति पर चर्चा के साथ दिन का समापन हुआ।

दूसरा दिन - "खगोलरसायन शोध करने में चुनौतियां" पर ऑनलाइन व्याख्यान के साथ शुरू हुआ, एवं खगोलजैविकी, अंतरिक्ष जीव विज्ञान, गगनयान, जैवअंतरिक्षयानिकी की अवधारणा, अंतरिक्ष में स्वस्थ मानव निवास की सुविधा के लिए इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी के उपयोग पर चर्चा की गई। दूसरी ऑनलाइन वार्ता "खगोलरसायन

- सरल से जटिल अणु; और ड्रेक समीकरण, केपलर मिशन, मर्चिसन उल्कापिंड, विभिन्न खगोल रासायनिक मॉडल और जैव अणुओं के बारे में विस्तारित बताया गया। तीसरी वार्ता "मंगल ग्रह को आकार देने में पानी की भूमिका" पर थी। व्याख्याता ने संक्षेप में मंगल ग्रह पर भूविज्ञान, वातावरण, भूवैज्ञानिक समय-काल, अतीत और वर्तमान स्थिति, भूजल रिसाव और सतह अपवाह के बारे में बताया। बाद में लूनर डेटासेट्स का प्रायोगिक सत्र। छात्रों की चर्चा के साथ दिन का समापन हुआ।

तीसरा दिन - पहला व्याख्यान "अंतरिक्ष विज्ञान में रासायनिक और जैविक क्रिस्टलोग्राफी" पर था, जहां उन्होंने एक्स-रे क्रिस्टलोग्राफी, एससीएक्सआरडी और स्वस्थाने-क्रायो क्रिस्टलीकरण आदि के बारे में चर्चा की। व्याख्यान के बाद, पीआरएल में स्थित HISTA और SALT एस्ट्रोकेमिस्ट्री प्रायोगिक सुविधा के साथ प्रायोगिक सत्र हुआ। दूसरा व्याख्यान "खगोलरासायनिक बर्फ का वीयूवी और आईआर स्पेक्ट्रोस्कोपी" पर था और चिकित्सा निदान, खाद्य प्रौद्योगिकी और कृषि और पर्यावरण रसायन विज्ञान में उनके अनुप्रयोग का विवरण बताया गया। बाद में "सित्तमपुंडी एनोर्थोसाइट की 3डी प्रिंटिंग : भारतीय चंद्र मिट्टी अनुरूपक" पर एक विशेष चर्चा हुई। इसके बाद मंगल डेटा सेट पर प्रायोगिक सत्र आयोजित की गई। पोस्टरों और 3डी प्रिंटिंग पर छात्रों की चर्चा के साथ दिन का समापन हुआ।

चौथा दिन - SALT, HISTA उपकरणों के प्रायोगिक सत्र से शुरू हुआ; इसके बाद "भारतीय उल्कापिंड" पर व्याख्यान दिया गया। वार्ता में संक्षेप में समझाया गया कि अन्य चट्टानों से उल्कापिंड की पहचान कैसे करें। फिर क्रमशः माइक्रोग्रेविटी और शॉक प्रोसेसिंग पर एक प्रस्तुति दी गई। बाद में "तकनीकी एनालॉग्स के लिए सुदूर संवेदन डेटासेट" पर एक ऑनलाइन व्याख्यान थी जिसमें सुदूर संवेदन के सभी पहलुओं को शामिल किया गया था।

पंचवा दिन - पहला व्याख्यान "टारगेटिंग क्रेटर्स" पर था जिसमें क्रेटर की पहचान करने के लिए विभिन्न मानदंडों को समझाया गया था। इसके बाद सित्तमपुंडी एनोर्थोसाइट और उल्कापिंडों पर प्रायोगिक सत्र आयोजित किया गया। दिन की दूसरी वार्ता "उल्कापिंडों के यांत्रिक व्यवहार" और उनके सहसंबंध के महत्व - उल्कापिंड के नमूनों के बहुस्तरीय व्यवहार पर थी। फिर "टाइटन के अणुओं के लिए इलेक्ट्रॉन प्रेरित प्रक्रिया" पर एक व्याख्यान रखी गई थी। वक्ता ने सूचित किया एक सुपठित वातावरण जिसे पूर्वजैविक पृथ्वी का समरूप माना जाता है, वह टाइटन है।

छठा दिन - पहला व्याख्यान मंगल और चंद्रमा के विशेष संदर्भ में "ग्रहीय अन्वेषण के लिए पार्थिव एनालॉग्स" पर था। दिन का बाकी भाग प्रतिभागी कम और उच्च तापमान खगोल रसायन पर प्रायोगिक सत्र और और 3डी प्रिंटिंग तथा ऐस्टेरॉयड दिवस से संबंधित पोस्टर तैयार करने में व्यस्त रहे।

सांतवा दिन (10 जुलाई)- यह दिन पीआरएल में ऐस्टेरॉयड दिवस के रूप में मनाया गया। पीआरएल थलतेज परिसर अभ्यागतों के लिए खुला था और बच्चों, उनके माता-पिता और परिवार के साथ पीआरएल कर्मचारियों सहित लगभग 600 लोग कार्यक्रम में आए। भूगर्भीय नमूनों के प्रदर्शन और वास्तविक ऐस्टेरॉयड के नमूनों (उल्कापिंडों) के प्रदर्शन के साथ पीआरएल थलतेज परिसर में मौजूद प्रयोगशालाओं का दौरा इस कार्यक्रम का एक भाग था।



व्याख्यान की झलकियां

राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक

सौजन्य: रुमकी दत्ता

प्रत्येक केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के गठन का उद्देश्य यह होता है कि कार्यालय में राजभाषा नियमों का कार्यान्वयन सशक्त एवं प्रभावी रूप से हो सके। भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक नियमानुसार प्रत्येक तिमाही में की गई। जुलाई – सितम्बर 2022 की बैठक में वार्षिक कार्यक्रम के विषय में विस्तार से चर्चा की गई। सभी सदस्यों को नियमों से पुनः अवगत कराया गया एवं कार्यालयाध्यक्ष द्वारा उन्हें, इन नियमों के सुचारू कार्यान्वयन एवं सुनिश्चित अनुपालन का ध्यान रखने का निर्देश दिया गया।



राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैठक की झलकियां

हिंदी में कार्य करने के लिए अंतरिक्ष राजभाषा कार्यान्वयन योजना (सोलिस) पुरस्कार

सौजन्य: रुमकी दत्ता

सोलिस प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत जिन सदस्यों ने दैनंदिन कार्यालय कार्य जैसे टिप्पण लेखन, मसौदा लेखन आदि मूल रूप से हिंदी में किया है, उन्हें पुरस्कृत किया गया है।

उनके कार्य की मात्रा, भाषा, एवं गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए पुरस्कार प्रदान किया गया है:

क्रमांक	नाम	पुरस्कार
1.	श्री सूरज कुमार	विशेष
2.	सुश्री जयश्री बालन अय्यर	विशेष

क्रमांक	नाम	पुरस्कार
1.	श्री हेमल डी. शाह	प्रथम
2.	श्री अभिषेक	द्वितीय
3.	श्री आशीष जी. सवड़कर	द्वितीय
4.	सुश्री सबा अब्बासी	द्वितीय
5.	श्रीमती नंदिनी रवि राव	द्वितीय
6.	श्री भगीरथ के. कुंतार	द्वितीय
7.	श्रीमती स्नेहा नायर	द्वितीय
8.	श्री शशि कांत	तृतीय
9.	श्रीमती हर्षा परमार	तृतीय
10.	श्री कार्तिक पटेल	तृतीय
11.	श्रीमती ऋचा प्रशांत कुमार	तृतीय



हम इन सदस्यों के प्रयासों की सराहना करते हैं। ये पुरस्कार गणतंत्र दिवस कार्यक्रम के दौरान प्रदान किये गए।



चित्र कला

वंदा रस्तोगी
पुत्री : डॉ. नीरज रस्तोगी



हिंदी साहित्य लेखन का एक महत्वपूर्ण भाग – अलंकार

सौजन्य: रुमकी दत्ता

अलंकार की परिभाषा - अलंकार, कविता के सौन्दर्य को बढ़ाने वाले तत्व होते हैं। साहित्य में अर्थगत चमत्कार को अर्थालंकार कहते हैं। प्रमुख अर्थालंकार मुख्य रूप से इस प्रकार होते हैं-

1. **उपमा अलंकार**- जब काव्य में किसी वस्तु या व्यक्ति की तुलना किसी अत्यंत प्रसिद्ध वस्तु या व्यक्ति से की जाती है तो

उसे उपमा अलंकार कहते हैं; जैसे-पीपर पात सरिस मन डोला।

यहाँ मन के डोलने की तुलना पीपल के पत्ते से की गई है। अतः यहाँ उपमा अलंकार है।

उपमा अलंकार के अंग-इस अलंकार के चार अंग होते हैं -

2. **रूपक अलंकार**-जब रूप-गुण की अत्यधिक समानता के कारण उपमेय पर उपमान का भेदरहित आरोप होता है तो उसे रूपक अलंकार कहते हैं।

रूपक अलंकार में उपमेय और उपमान में भिन्नता नहीं रह जाती है; जैसे-चरण कमल बंदौ हरि राइ।

यहाँ हरि के चरणों (उपमेय) में कमल(उपमान) का आरोप है। अतः रूपक अलंकार है।

3. **उत्प्रेक्षा अलंकार**-जब उपमेय में गुण-धर्म की समानता के कारण उपमान की संभावना कर ली जाए, तो उसे उत्प्रेक्षा अलंकार कहते हैं; जैसे -

कहती हुई यूँ उत्तरा के नेत्र जल से भर गए। हिम कणों से पूर्ण मानों हो गए पंकज नए।।

यहाँ उत्तरा के जल (आँसू) भरे नयनों (उपमेय) में हिमकणों से परिपूर्ण कमल (उपमान) की संभावना प्रकट की गई है। अतः उत्प्रेक्षा अलंकार है।

4. **अतिशयोक्ति अलंकार** - जहाँ किसी व्यक्ति, वस्तु आदि को गुण, रूप सौंदर्य आदि का वर्णन इतना बढ़ा-चढ़ाकर किया जाए कि जिस पर विश्वास करना कठिन हो, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है; जैसे - एक दिन राम पतंग उड़ाई। देवलोक में पहुँची जाई।।

यहाँ राम द्वारा पतंग उड़ाने का वर्णन तो ठीक है पर पतंग का उड़ते-उड़ते स्वर्ग में पहुँच जाने का वर्णन बहुत बढ़ाकर किया गया। इस पर विश्वास करना कठिन हो रहा है। अतः अतिशयोक्ति अलंकार।

5. **मानवीकरण अलंकार** - जब जड़ पदार्थों और प्रकृति के अंग (नदी, पर्वत, पेड़, लताएँ, झरने, हवा, पत्थर, पक्षी) आदि पर मानवीय क्रियाओं का आरोप लगाया जाता है अर्थात् मनुष्य जैसा कार्य व्यवहार करता हुआ दिखाया जाता है तब वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है; जैसे -

हरषाया ताल लाया पानी परात भरके।

यहाँ मेहमान के आने पर तालाब द्वारा खुश होकर पानी लाने का कार्य करते हुए दिखाया गया है। अतः यहाँ मानवीकरण अलंकार है।

सौजन्य - दसवीं कक्षा का हिंदी व्याकरण पुस्तक का भाग सीबीएसई (ऑनलाइन उपलब्ध)

लीला: हिंदी भाषा शिक्षण टूल

सौजन्य : राजभाषा वेबसाइट

ई-लर्निंग के इस उत्तर आधुनिक दौर में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा सी-डैक की सहायता से तैयार किए गए 'लीला' प्रशिक्षण टूल का उल्लेख किया जाना अप्रासंगिक न होगा। वर्षों से राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा देश की सरकारी संस्थाओं, बैंकों, उपक्रमों आदि के कर्मचारियों को हिंदी प्रशिक्षण दिया जाता रहा है। इन संस्थानों द्वारा चलाए गए कक्षा प्रशिक्षण के माध्यम से देश भर के लाखों कर्मचारियों ने प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त किया है। बदलते समय के साथ अब राजभाषा विभाग द्वारा "लीला प्रशिक्षण टूल" के माध्यम से ऑनलाइन हिंदी प्रशिक्षण का कार्यक्रम शुरू किया गया है। यह उन कर्मचारियों के लिए अत्यंत उपयोगी है जो पत्राचार अथवा पूर्णकालिक कक्षा प्रशिक्षण का लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। अब कर्मचारी अपने मोबाईल पर यह एप डाउनलोड कर जब चाहें, जहां चाहें हिंदी प्रशिक्षण प्राप्त कर सकता है।

इस श्रृंखला को आगे बढ़ते हुए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के मार्गदर्शन में केंद्रिय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा हिंदी प्रशिक्षण के लिए 'हिंदी प्रवाह' के अलग अलग विधाओं के कुल 20 पाठ संकलित किए गए हैं। प्रत्येक वर्ग के पाठक की रुचि के अनुरूप पाठों को 'हिंदी प्रवाह' में स्थान दिया गया है। 'हिंदी प्रवाह' का भाव पक्ष जितना सबल है, तकनीकी पक्ष उतना ही मजबूत है। इस पाठ्यक्रम को भी 'लीला पैकेज' प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ की भांति अंग्रेजी, बोड़ो, बंगला, गुजराती, कन्नड, कश्मीरी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाल, उड़िया, पंजाबी, तमिल एवं तेलुगु के माध्यम से ऑनलाइन वेबवर्जन एवं मोबाईल ऐप के रूप में उपलब्ध कराया गया है।

'लीला हिंदी प्रवाह' के वेबवर्जन एवं मोबाईल ऐप के लिए तैयार किए गए सभी पाठों को 'पाठ एवं शब्दावली' नामक दो भागों में विभाजित किया गया है। पाठ में ऑडियो-विडियो सुविधा के साथ-साथ चयनित भाषा में अनुवाद प्राप्त करने की सुविधा भी उपलब्ध है। शब्दावली भाग में पाठ के सभी शब्दों के अर्थ उपयोक्ता द्वारा चयनित भाषा में भी दिये गए हैं।

'लीला हिंदी प्रवाह' के वेबवर्जन एवं मोबाईल ऐप में पाठों से संबंधित शब्दों को समझने एवं समझाने के लिए बृहत शब्दावली में पाठों में सम्मिलित शब्दों के अर्थ उपयोक्ता द्वारा चयनित भाषा में वर्ण क्रमानुसार दिये गये हैं। इस भाग की विशेषता यह है कि इसमें शब्दों के उच्चारण के साथ-साथ रिकॉर्डिंग एवं कंपेयर सुविधा भी उपलब्ध कारवाई गई है। उपयोक्ता, पाठ में आए शब्दों का अर्थ अपनी भाषा में देखने एवं जानने के अलावा हिंदी में उनका उच्चारण सुनने के बाद स्वयं उस शब्द को बोलकर रिकार्ड कर सकते हैं और फिर मूल शब्द एवं स्वयं के द्वारा रिकार्ड किए हुए शब्द को एक के बाद एक सुनकर उच्चारण संबंधी अपनी कमियों को दूर कर सकते हैं। उपयोक्ता, अपनी सुविधा के अनुसार जब चाहें, जितना चाहें, इस पाठ्यक्रम को पढ़ सकते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'लीला हिंदी प्रवाह' प्रशिक्षण टूल नई पीढ़ी के हिंदी सीखने वालों के साथ-साथ उन लोगों के लिए भी वरदान है, जो अपने भाषाई ज्ञान का विस्तार करना चाहते हैं।

बधाई संदेश

सौजन्य: विविध

अंतरिक्ष विभाग के निर्देशानुसार सीबीएसई, आईसीएसई तथा राज्य बोर्ड की 10वीं और 12वीं की वर्ष 2022 की परीक्षा में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले पी.आर.एल. में कार्यरत स्टाफ सदस्यों के बच्चों को पुरस्कार दिये गए।

ये पुरस्कार **10वीं** तथा **12वीं** कक्षा के विद्यार्थियों को सीबीएसई, आईसीएसई तथा राज्य बोर्ड की श्रेणी में अलग अलग पुरस्कार प्रदान किए गए।

निम्नानुसार छात्र/ छात्राओं ने यह पुरस्कार प्राप्त किए:

क्रम सं.	बच्चे का नाम	कक्षा	अभिभावक का नाम	बोर्ड	हिंदी विषय में अंक	पुरस्कार
1.	अनिरुद्ध संजय वैरागड़े	दसवीं	श्री संजय सदाशिव राव वैरागड़े	सीबीएसई	92	प्रथम
2.	अजय भरत	दसवीं	श्रीमती ऐनी मटिल्डा बी.	सीबीएसई	78	द्वितीय

क्रम सं.	बच्चे का नाम	कक्षा	अभिभावक का नाम	बोर्ड	हिंदी विषय में अंक	पुरस्कार
1.	भावसार बिज मितेश	बारहवीं	श्री मितेश बिपिनचंद्र भावसार	सीबीएसई	72	प्रथम

हिंदी शिक्षण योजना/हिंदी टंकण

सौजन्य: रुमकी दत्ता

हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत पारंगत पाठ्यक्रम के जनवरी- मई 2022 सत्र में आयोजित हिंदी पारंगत परीक्षा में श्रीमती हर्षाबेन परमार ने प्रथम श्रेणी प्राप्त की है। श्रीमती हर्षाबेन परमार, भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला में वरिष्ठ परियोजना सहायक के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने 200 में से 157 अंक प्राप्त किए, एवं इन्हें नकद पुरस्कार के रूप में एकमुश्त प्रोत्साहन राशि प्रदान की गई।



हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत पारंगत पाठ्यक्रम के जनवरी- मई 2022 सत्र में आयोजित हिंदी पारंगत परीक्षा में श्रीमती जलधि मेहता ने प्रथम श्रेणी प्राप्त की है। श्रीमती जलधि मेहता, भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला में वरिष्ठ सहायक के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने 200 में से 134 अंक प्राप्त किए, एवं इन्हें नकद पुरस्कार के रूप में एकमुश्त प्रोत्साहन राशि प्रदान की गई।



हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत हिंदी टंकण पाठ्यक्रम के जुलाई- नवंबर 2022 सत्र में दिनांक 19 नवंबर 2022 को आयोजित हिंदी पारंगत परीक्षा में श्रीमती हिरल डी. मोदी ने प्रथम श्रेणी प्राप्त की है। श्रीमती हिरल डी. मोदी, भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला में वरिष्ठ सहायक के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने 200 में से 158 अंक प्राप्त किए, एवं इन्हें नकद पुरस्कार के रूप में एकमुश्त प्रोत्साहन राशि प्रदान की गई।



हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत हिंदी टंकण पाठ्यक्रम के जुलाई- नवंबर 2022 सत्र में दिनांक 20 नवंबर 2022 को आयोजित हिंदी प्रबोध परीक्षा में श्री फेमिक्स जॉर्ज ने प्रथम श्रेणी प्राप्त की है। श्री फेमिक्स जॉर्ज, भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला में सहायक के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने 200 में से 153 अंक प्राप्त किए, एवं इन्हें नकद पुरस्कार के साथ 12 माह की अवधि के लिए एक वेतन वृद्धि के बराबर की राशि प्रदान की गई।



ऑनलाइन हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी

सौजन्य: रुमकी दत्ता

राजभाषा के प्रचार-प्रसार की दिशा में हिंदी अनुभाग द्वारा पुस्तकालय एवं कंप्यूटर सेंटर के सहयोग से इंटरनेट मुख्य पृष्ठ पर प्रत्येक महीने कुछ चयनित हिंदी पुस्तकों की ऑनलाइन प्रदर्शनी की व्यवस्था की गई है। यह इंटरनेट पृष्ठ पर "ऑनलाइन हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी" शीर्षक पर उपलब्ध है।



स्मृति आधारित अनुवाद टूल (कंठस्थ) सॉफ्टवेयर

सौजन्य: रुमकी दत्ता

यह प्रशिक्षण इसरो मुख्यालय, बेंगलूरु में आयोजित किया गया था। इस प्रशिक्षण में सीडैक के आइटी विशेषज्ञ श्री शशिपाल सिंह प्रशिक्षक के रूप में उपस्थित हुए थे। प्रशिक्षण के प्रथम सत्र में "कंठस्थ" सॉफ्टवेयर टूल के विषय में बताया गया है। इसके नाम से यह स्पष्ट है कि यह दिए गए अनुवाद को कंठस्थ करेगा एवं उसे डेटाबेस में स्टोर करेगा। प्रत्येक कार्यालय में सदस्य अपना यूज़र आइ.डी बना सकते हैं। उसमें उन्हें अपने अनुवाद किए गए दस्तावेज अपलोड करना है। ऐसा करने से जब कोई इसी प्रकार के अन्य दस्तावेजों का अनुवाद करना चाहें तो कंठस्थ सॉफ्टवेयर पहले से स्टोर किए हुए समान तरह के अर्थात् इसी प्रकार के अनुवाद डेटा को दिखाता है, एवं अन्य विभिन्न सुविधाएं जैसे शत-प्रतिशत मेल खाने पर पूरा हरा, एवं कम मेल खाने पर बेमेल भाग को लाल रंग द्वारा हाइलाइट करते हैं। यदि किसी को दस्तावेज विभाजित करके अनुवाद के लिए भेजना है तो कंठस्थ सॉफ्टवेयर में विभाजित करने की सुविधा है एवं पुनः जब अनुवाद प्राप्त होता है तो उसका संकलन भी करता है। वह तब तक पूरा संकलन नहीं दर्शाएगा, जब तक उसे संपूर्ण अनुवाद प्राप्त न हो। कंठस्थ सॉफ्टवेयर को राजभाषा विभाग की वेबसाइट से डाउनलोड किया जा सकता है। कंठस्थ सॉफ्टवेयर का उन्नत संस्करण, सूरत में द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान जारी किया गया।

पंचम वर्ण लुप्त क्यों हो रहा है?

सौजन्य: रुमकी दत्ता

ब्राह्मी लिपि एवं उससे व्युत्पन्न अधिकांश लिपियों की वर्णमाला के प्रत्येक वर्ग के पांचवें वर्णों के समूह को **पंचमाक्षर** कहते हैं (पञ्चमाक्षर = पञ्चम अक्षर = पाँचवाँ अक्षर)। देवनागरी में **ड, ज, ण, न तथा म** पंचमाक्षर हैं।

विभिन्न भाषाओं में पंचमाक्षर का प्रयोग होता है। सभी भाषाओं में पंचमाक्षर के प्रयोग के अपने-अपने नियम या परिपाटी है।

हिन्दी में तकनीकी टंकण यन्त्रों की समस्याओं से निकालने के लिए तात्कालिक रूप से पञ्चमाक्षरों के अर्द्धस्वरूप के स्थान पर अनुस्वार का उपयोग करके काम चला लेने का उपाय सुझाया गया था जिसके फलस्वरूप समसामयिक हिन्दी लेखन में पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार को वरीयता दी जाने लगी है। सामान्यतया अनुस्वार की ध्वन्यात्मकता को स्पष्ट करने के लिए पंचम वर्ण - 'कवर्ग', 'चवर्ग', 'टवर्ग', 'तवर्ग' एवं 'पवर्ग' के ड्, ज्, ण्, न् एवं म्- का व्यवहार किया जाता है। जैसे- गङ्गा - गंगा, दिनाङ्क - दिनांक, पञ्चम - पंचम, चञ्चल - चंचल, कण्ठ - कंठ, कन्धा - कंधा, कम्पन - कंपनी आदि।

जहाँ तक हिन्दी का सम्बन्ध है, टंकण यन्त्रों पर देवनागरी के उपयोग को सुगम बनाने के लिए कुछ स्थितियों में पञ्चमाक्षरों के स्थान पर अनुस्वार लिखकर काम निकालने का सुझाव दिया गया था। किन्तु ऐसा नहीं है कि पंचमाक्षरों का प्रयोग वर्जित किया गया था, या पंचमाक्षरों के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग अधिक शुद्ध घोषित किया गया था।

हिन्दी शब्दानुशासन की रचना करने वाले किशोरी दास वाजपेयी का मानना है कि पंचमाक्षर अनुनासिक अल्पप्राण हैं। उनके अनुसार हिन्दी के रूप गठन में 'ड', 'ज' तथा 'ण' का कोई योग नहीं है। जो मिठास 'न' तथा 'म' में है, वह इन तीनों में नहीं है। इसीलिए हिन्दी ने 'न' तथा 'म' को ही अपनाया है। संस्कृत (तद्रूप) शब्द जो हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं, उन में ही ये (ड, ज, ण) आते हैं - 'वाङ्मय', 'चाञ्चल्य', 'पाण्डित्य' आदि। वाजपेयी जी का मानना है कि अनुस्वार का स्थान भी नासिका है। संस्कृत व्याकरण के अनुसार 'म्' प्रायः और 'न्'

कभी-कभी अनुस्वार हुआ करता है। यही (नासिका सहयोग) कारण है कि अनुस्वार लगने से भी स्वर-व्यंजन मधुर ध्वनि देने लगते हैं - 'कंकन किंकिनी नूपुर धुनि सुनि'। जैसा 'न' वैसा ही अनुस्वार मधुर।

हिन्दी भाषा में पञ्चमाक्षर के स्थान पर हर जगह अनुस्वार(बिन्दी) का प्रयोग मजबूरी में किया गया था और नाम दिया गया था सरलीकरण का। इसका कारण यह था कि मैनुअल टाइपराइटर(रेमिंगटन) पर ड और ज की कुँजी थी ही नहीं (विदित हो कि हिन्दी कीबोर्ड के लिए टाइपराइटर के रूप में रेमिंगटन कीबोर्ड ही पूरे देश में प्रचलित था और आज यह बन्द हो जाने के बाद भी लोग रेमिंगटन पर पहले से ही अभ्यस्त होने के कारण आज भी उसी लेआउट पर टाइप करना पसन्द करते हैं, जिस पर ड और ज कुँजी नहीं है) और उस वक्त अक्षर के नीचे अक्षर टाइप किया जाना सम्भव ही नहीं था जैसे गङ्गा आदि। इसलिए मानकीकरण में हर जगह बिन्दी का विधान कर दिया गया।

पञ्चमाक्षरों के नियम का सही ज्ञान न होने से बहुधा लोग इनके आधे अक्षरों की जगह अक्सर 'न्' का ही गलत प्रयोग करते हैं जैसे 'पण्डित' के स्थान पर 'पण्डित', 'विण्डीज़' के स्थान पर 'विन्डीज़', 'चञ्चल' के स्थान पर 'चन्चल' आदि। ये अधिकतर अशुद्धियाँ 'ज्' तथा 'ण्' के स्थान पर 'न्' के प्रयोग की होती हैं।

नियम: वर्णमाला के हर व्यञ्जन वर्ग के पहले चार वर्णों के पहले यदि अनुस्वार की ध्वनि हो तो उस वर्ग का पाँचवा वर्ण आधा (हलन्त) होकर लगता है। अर्थात् कवर्ग (क, ख, ग, घ, ङ) के पहले चार वर्णों से पहले आधा ङ (ङ), चवर्ग (च, छ, ज, झ, ञ) के पहले चार वर्णों से पहले आधा ञ (ञ), टवर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण) के पहले चार वर्णों से पहले आधा ण (ण), तवर्ग (त, थ, द, ध, न) के पहले चार वर्णों से पहले आधा न (न) तथा पवर्ग (प, फ, ब, भ, म) के पहले चार वर्णों से पहले आधा म (म) आता है। उदाहरण:

- कवर्ग - पङ्कज, गङ्गा
- चवर्ग - कुञ्जी, चञ्चल
- टवर्ग - विण्डोज, प्रिण्टर
- तवर्ग - कुन्ती, शान्ति
- पवर्ग - परम्परा, सम्भव

आधुनिक हिन्दी में पञ्चमाक्षरों के स्थान पर सुविधा हेतु केवल अनुस्वार का भी प्रयोग कर लिया जाता है यद्यपि यह देवनागरी की सुन्दरता को कम करता है। जैसे: पङ्कज - पंकज, शान्ति - शांति, परम्परा - परंपरा। विशेषकर ञ तथा ङ का प्रयोग काफी कम हो गया है।

प्राचीन परम्परा के अनुसार संस्कृत, धर्म तथा भारतीय संस्कृति सम्बंधी लेखों में पञ्चमाक्षरों का प्रयोग होना चाहिए जबकि विज्ञान, गणित, तकनीक आदि सम्बंधी लेखों में सरलता हेतु आधुनिक हिन्दी का प्रयोग किया जा सकता है। हाँ लेख के शीर्षक (नाम) को शुद्ध उच्चारण तथा वर्तनी की दृष्टि से पञ्चमाक्षर में रखा जाय, चाहे वह किसी भी विषय से सम्बंधित हो। खोज तथा पुनर्निर्देशन हेतु आधुनिक वर्तनी वाले नाम को पारम्परिक (शुद्ध) पञ्चमाक्षर वाले शीर्षक पर पुनर्निर्देशित कर देना चाहिए ताकि शुद्ध उच्चारण एवं वर्तनी रहे। उदाहरण के लिये पंडित को पण्डित पर पुनर्निर्देशित किया जाना चाहिये।

आगत ध्वनि "ऑ" अथवा इसकी मात्रा (ॉ) के बाद शुद्ध वर्तनी का प्रयोग ही उपयुक्त है क्योंकि उसमें अनुस्वार की बिन्दी दिखायी नहीं देती। उदाहरण - फॉट (बिन्दी दिखती नहीं, टैक्सट साइज काफी बड़ा करने पर दिखेगी) के स्थान पर फॉण्ट उपयुक्त है। इसी प्रकार दूसरी आगत ध्वनि "ँ" तथा इसकी मात्रा (ँ) के बाद भी अनुस्वार की बिन्दी या तो दिखती नहीं या चन्द्रबिन्दु का भ्रम होता है अतः इसके स्थान पर भी शुद्ध वर्तनी का प्रयोग ही उपयुक्त है। उदाहरण - ँड के स्थान पर ँण्ड उपयुक्त है।

पञ्चम वर्ण की सन्धि से बनने वाले संयुक्ताक्षरों में बाद वाला वर्ण "ङ" तथा "ञ" के नीचे लगता है। इस प्रकार बनने वाले संयुक्ताक्षरों को मंगल आदि अधिकतर यूनिकोड फॉण्ट सही प्रकार से नहीं दिखा पाते, बायीं तरफ दिखाते हैं। संस्कृत २००३ नामक यूनिकोड फॉण्ट ऐसे संयुक्ताक्षरों को सही प्रकार से प्रदर्शित करता है। उदाहरण - गङ्गा का सही रूप गङ्गा है।

इस विषय में यह लेखक के स्वयं के विचार हैं।



अनीशा कुल्हारी

किसान

धरती पर सभी जीवों का, पेट जो भरता है |
धरती को स्वर्ग समझता है, नाम उसका किसान है ||

आँधी, तूफान, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, ओलावृष्टि में अडिग जो रहता है |
सब कुछ वो सह लेता है, नाम उसका किसान है ||

सूर्य की किरणों में वो तपता है, हर संभव कोशिश करता है |
खेतों में मेहनत पूरी करता, पर मेहनताना ना पुरा पाता है |
अपना ना रखकर ख्याल, जो पालतू पशुवों का ख्याल रखता है |
सब कुछ वो सह लेता है, नाम उसका किसान है ||

बारम्बारता रूपी ऋण में डुबा, आत्मसम्मान बचाने की वो हरसंभव कोशिश करता है |
देनदाताओं के चंगुल में फंसकर, फंदे पर झूल जाता है |
सब कुछ वो सह लेता है, नाम उसका किसान है ||

खून पसीने से धरती को सींचता है, फिर भी सभी के द्वारा वो सिंचा जाता है |
सब कुछ वो सह लेता है, नाम उसका किसान है ||

प्रकृति का साथ भी वो न पाता है, सालभर कार्य करके भी वो किसी पैकेज का हकदार ना हो पाता है |
सब कुछ वो सह लेता है, नाम उसका किसान है ||

जिम्मेदारियों को भरपूर वह निभाता है, कभी - कभी भुखा ही सो जाता है |
सब कुछ वो सह लेता है, नाम उसका किसान है ||

देश की अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण जो आधार है, सरकारी योजनाएं भी जिस तक कभी ना पहुँच पाती है |
सब कुछ वो सह लेता है, नाम उसका किसान है ||



मेरा गाँव

ज्योति लिम्बात

आज एक अरसे बाद,
मुझे मेरे गाँव की याद आयी है ।
यह शाम का ढलता हुआ सूरज
और अँधेरे का बढ़ता हुआ साया
अपने संग उन यादों को ले आयी हैं ।

वो आँगन में दौड़ते हुए नन्हें पाँवों की किलकारियाँ,
आई के काली रोटी की बिसात संग ले कर आयी है ।

वो बाड़ी में चहकते हुए नीम पर बैठे हुए पंछी
आज यादों की सौगात संग ले कर आयी हैं
आज फिर से.. मुझे मेरे गाँव की याद आयी है ।

वो नवरात्री का उत्सव, जो महोत्सव हुआ करता था
वो भजन, वो कीर्तन, वो पूजा की थाली,
वो मेहमानों का स्वागत करना
ये सारी यादें, आज चेहरे पर मुस्कान ले आयी हैं
आज फिर से.. मुझे मेरे गाँव की याद आयी है ।

वो सबका यूँ साथ में बैठकर खाना
अपने से पहले दूसरों को अन्न खिलाना
वो संतोष का अनुभव, किसी भी मोह से ऊपर है ।
वो आँगन में आसमान की ओर देखते हुए सोना
और सुबह-सुबह वो चूल्हे पर बनी हुई चाय पीना
इतना याद आ रहा है, मानो अपनी और खींच रहा हो ।

ये यादें.. आज बरसों बाद याद आयी हैं
आज फिर से मुझे मेरे गाँव की याद आयी है ।

वो जामुन का पेड़, जहां घंटो बीत जाया करते थे
वो खेत जिनमें हम इधर – उधर दौड़ा करते थे
वो गर्मी में आम के लिए जो लड़ा करते थे

वो बारिश के भुट्टे, जो सबसे पहले भगवान के लिए रखा करते थे
आज कहाँ गए वह दिन, सोच- सोच कर दिल भर आया है
आज एक अरसे बाद... मुझे मेरे गाँव याद आया है ।

वो त्योहारों का जश्र, जहां मिलकर दीए जलाया करते थे
अपने ही घर को, रंग-बिरंगी पत्रियों से सजाया करते थे

वो बुआ – पुपाजी के आने पर,
तिलक लगा कर, उनका स्वागत करते थे
रह-रह कर याद आ रहे हैं वो दिन ।

वो पत्थर पर बनी आम की चटनी का स्वाद,
वो सर्दी में गरमा – गरम राब पीने का
मज़ा कुछ और ही है..!!

वो हैंडपंप पर मस्ती करना
सुबह उठते ही, कैलेंडर का वो पन्ना फाड़ना
वो बाड़ी में लगी ककड़ी को खाने की ज़िद
ना जाने आज कहाँ खो सी गयी है !!

आज यादों की फरयाद, यह शाम ले कर आयी है,

एक अरसे बाद, आज मुझे मेरे गाँव की याद आयी है ।
वो शहनाई की धुन, वो हरणी के बजते ही आँख में आँसू आना
वो माँ का पल्लू और आंटी का प्यार,
वो पापाजी का आशीर्वाद और अंकल का दुलार
वो सबका साथ में यूँ रहना
मानो.. कि कोई अटूट गढ़बंधन हो
ये सोच-सोच कर दिल मुस्कुरा जाता है ।
गाँव के आँगन का वो दृश्य
आज इतना क्यूँ याद आया है ?

इतने जल्दी बड़े हो गए हम
सब अपने काम- काज और नौकरी में व्यस्त हो गए
लेकिन, आज फिर भी मेरे काली-माँ का वो आँगन
मुझे बहुत याद आ रहा है ।
मेरे गाँव के आँगन का वो दृश्य
आज क्यों मुझे झकझोर के जा रहा है ?
शायद,...!!
आज एक अरसे बाद फिर,
मुझे मेरे गाँव याद आया है !!

उपरोक्त कविता को हिंदी माह समारोह में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ



हर्षा परमार

मेरी चिड़िया

नन्ही सी गुड़िया है, मेरी वो चिड़िया है।
छोटी सी, प्यारी सी, माँ की दुलारी सी,
खुशियों की पुडिया है।

है मेरी सहेली, है मेरी वो दुनिया,
मेरी हमराज, मेरी सजनिया,
आँखों की निंदिया है।

पाँव पसारे, छम छम छम चलती वो
मेरी इन आँखों में हर पल है बसती वो
आँगन में खेले वो, कलियों सी खिलती वो
बरखा के जैसे, हर पल बरसती वो, माथे की बिंदिया है।

तेरी ही पलकों के सपने सवारूँ मैं
तुझको लगे ना, नज़र ये उतारूँ मैं
तेरी बातें, तेरे वादे

तुझसे जुड़ी मेरे जीवन की यादें।

तू है मेरे कुल का गुमान
कैसे मैं कर दूँ, तेरा कन्या दान
दुनिया की रस्मे ना मेरी समझ में
बेटी पराया धन, है उनकी परख में,
क्यूँ ना करे हम, इस बात का मंथन
बेटी है ईश्वर के माथे का चंदन...

इन धड़कनों से लिखी,
तू यादों की चिट्ठियाँ है,
छोटी सी, प्यारी सी, माँ की दुलारी सी,
खुशियों की पुडिया है।





मेरा ईश्वर मेरे पास है

नम्रता हेमल शाह

(विवाहित : हेमल शाह)

मेरा ईश्वर मेरे पास है
कन कन में है, हर क्षण में है
मेरे अंदर भी है, मेरे बाहर भी है
मेरा ईश्वर मेरे पास है

वो मेरा कृष्ण है, मैं हूँ अर्जुन
वो मेरा सारथी है, मैं हूँ रथी
वो मुझे रास्ता दिखाए उस तरह में चलूँ
मेरा ईश्वर मेरे पास है

मैंने सौंप दिया है अपने आप को उन्हें
आगे वो ले जाये मुझे अपने जीवन कार्य की ओर
अपना कार्य वो मुझसे करवाएगा
मेरा ईश्वर मेरे पास है

कौन हूँ मै, यहाँ किस लिए हूँ, क्या है मेरे जीवन का लक्ष्य
अन्तः यात्रा मेरी चालु है, वो है मेरा मार्गदर्शक
रोज मै उनसे मिलती हूँ और कितनी सारी बातें करती हूँ
मेरा ईश्वर मेरे पास है

उनके सहारे मै धीरे धीरे आगे बढ़ रही हूँ
भय से अभय, अशांति से शांति की ओर मेरी यात्रा आगे बढ़ रही है
अंतर मन की गांठे खुल रही है
मेरा ईश्वर मेरे पास है



नीरज रस्तोगी

जीवनसंगिनी

मेरे जीवन की धुरी, मेरी गृहलक्ष्मी, मेरी अन्नपूर्णा, मेरी परी।

तेरे होने से घर मंदिर और जीवन सुंदर हो जाता है और,
तेरे ना होने से घर मकान और जीवन सुनसान हो जाता है।

तेरा प्यार होता है तेरे गुस्से और नखरों पे भारी,
तेरा दर्द कर देता मेरा मन भारी।

मेरे जीवन में तुमने ही भरे हैं कई रंग,
दी हैं मुझे खुशियां, आनंद और उमंग।

है तेरे साथ की आस आजीवन,
तुम ही हो मेरी सबसे खास हरदम।

देता हूँ ईश्वर को धन्यवाद तुमसे मिलाने को,
तुम्हें मेरी जीवनसंगिनी बनाने को।

मेरे जीवन की धुरी, मेरी गृहलक्ष्मी, मेरी अन्नपूर्णा, मेरी परी।

मेरे जीवन के रंगमंच में तुम कितने पात्र निभाती हो,
कभी मित्र, कभी मां, कभी बच्ची तो कभी प्रेयसी बन जाती हो।
आमोद-प्रमोद, राय-मशविरा, और सैर-सपाटे में मित्रता निभाती हो,
भोजन-पानी, सोने-जागने, और सेहत की देखभाल में मां बन जाती हो,
नखरे और जिद्द में तो कभी-कभी बच्चों को मात दे जाती हो,
तो कभी प्रेयसी बनकर मेरे मन को लुभाती हो।

मेरे जीवन की धुरी, मेरी गृहलक्ष्मी, मेरी अन्नपूर्णा, मेरी परी।



उन दिनों की बात

संदीप भगवानदास मंगलानी

नन्ही नन्ही सी आँखें और मोड़े हुए उंगलियां थे
चोट न लगे बाहों से, रेसम सा मुझे पकड़ते थे

नींद लगे तो पेट पर सुलाने वाले बिछौना थे
खुद ' नहीं ' बोलकर मांगी हुई खिलौना माँ के हाथों दिलवाते थे

एक छोटी सी आहट पर मेरे साया तक पहचानते थे
कितना सुहाना माँ के गोद से पापा के कंधे तक के सफर थे

खयालों में भी, बस मेरा ही खयाल रखा करते थे
मेरे हर चोट का अपनी बाहों में इलाज़ रखा करते थे

एक खरोच मेरी हो, जाने उन्हें कई रातें जगाते थे
अपने पास दिल, और धड़कन मेरी हंसी पर ही रखते थे

कभी मीठा कभी कड़वा कभी हौसले के लहजे से बोलते थे
जताते तो कभी नहीं, पर अचानक से गले मिलते थे

सख्त सी आवाज़ में कहीं प्यार छिपा सा रखते थे
उनके रगों में जैसे, हिम्मत के, कई दरियाँ बहते थे

मौन रहकर भी दुलार करना उनसे बेहतर कौन जाने ?
जीवन के तपती धूप में, ठंडी ठंडी सी साया थे

जब भी रोस में कहता था बहन से ज्यादा प्यार करते हो?
दो आंखे देखे एक समान, बस यही कहकर समझाते थे

जादूगर के खरगोस जैसे चिंता गायब कर देते थे
दिल में बच्चों के अरमान लिए दिन रात चलते रहते थे

उनका प्यार गूंगा और चिंता बेहरी जरूर होती थी
पर स्कूल के गणित और जीवन के गणित में अंतर वो बखूबी सिखाते थे

कैसा चल रहा है सब, कैसा गया दिन, वो हमेशा पूछते थे
पर वो कैसे हैं, उनका दिन कैसा गया वो कभी नहीं बताते थे

बड़े होते बात बात पर अक्सर बहस तन जाते थे
बारवीं तक आते आते हम दोनों दोस्त से बन गए थे

जब तक दाढ़ी आपके, थोड़ा सलेटी हो आया
तब जाकर कितने मेहनत से, अपनी दोस्ती गाढ़ी हुए थे

आपकी यादों की खुसबू से वही घर अब महकता है
जो आपके पसंद के आचार से अक्सर महका करते थे

आप अक्सर कहते थे, संसार सराया है यहाँ कुछ नहीं अपना है
ये ऐसे नहीं सिखाना था पापा, हम लोग तो अपने थे

इतनी जल्दी नहीं पापा इतनी जल्दी नहीं जाना चाहये था
कितनी बातें सीखनी थी, कई सौ बार गले मिलने थे



निर्भय उपाध्याय

भेद न हो नर-नारी का

१. मानवता निर्माण में, आधी आधी जब भागीदारी।
तो फिर आधे से कम क्यों स्थान में सीमित नारी?
२. मनु-श्रद्धा के मिलन में, नर है तो है भी नारी।
नर है और नारी भी है, तब ही है बनी ये सृष्टि सारी।।
३. सृष्टि का आरंभ हुआ, जब लिंग संतुलन के साथ।
नर-नारी दोनों चल पड़े, करने विकास ले हाथ में हाथ।।
४. सभ्यता-विकास पथ को दोनों ने, क्या हाथों में हाथ ले पार किया?
या नर की 'पिछलगू' होकर भी, नारी ने 'सृष्टा' का स्वप्न साकार किया।
५. फिर सामाजिक कुरीतियों ने, नारी को नर के पीछे धकेल दिया।
और समाज के बंधनों में बँधकर, नारी ने हालातों से मेल किया।।
६. फिर 'नवजनजागरण' हुआ समाज का, और 'नारी सशक्तिकरण' की
अलख जगी।
नारी उत्थान की बातों के साथ ही, नारी विकास की भी 'झलक' दिखी।।
७. पर क्या अब तक हमने, उत्तम समाज का निर्माण किया?
क्या कन्या भ्रूणहत्या, लिंगभेद, और नारी पर अपराधों को जड़ से उखाड़ दिया?
८. 'निर्भय' इस लोकतंत्र में, हम देते लोकतंत्र की दुहाई।
कितना प्रतिशत है नारी का, हमारी संसद में विचारो भाई।।
९. है ऐसी कल्पना मेरी, जहाँ 'भेद न हो नर-नारी का'।
हैं कौन हम? निर्माण किया, 'सृष्टा' ही ने नर-नारी का।।

हिंदी माह समारोह में तृतीय स्थान प्राप्त कविता

पीआरएल द्वारा आयोजित गुजरात राज्यस्तरीय निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं द्वारा दिया गया फीडबैक

सौजन्य: रुमकी दत्ता

क्रमांक	नाम	फीडबैक
1.	डॉ. बी. एन. शर्मा अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, (सैक) अहमदाबाद	डॉ. विक्रम साराभाई को उनके जन्म दिवस के अवसर पर शत-शत नमन। उनकी दूर दृष्टि ने हमारे देश को मूलभूत विज्ञान एवं अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व उपलब्धियां प्रदान की है। आज पीआरएल में हमारा आना, हमारे लिए गौरवशाली क्षण रहा। हम पीआरएल के निदेशक एवं सभी वैज्ञानिकों का बहुत बहुत आभार व्यक्त करते हैं। हमें डॉ विक्रम साराभाई की प्रतिमा पर माल्यार्पण करने का अवसर प्रदान करने के लिए तहे दिल से धन्यवाद। यह दिन मुझे जीवन पर्यंत याद रहेगा। हमने पीआरएल के विभिन्न लैब्स में हो रहे कार्यक्रमों को देखा और अभिभूत हुए। हमें इतना सम्मान मिला जिसके लिए हम कृतज्ञ हैं। विज्ञान के क्षेत्र में आपका प्रयास अभूतपूर्व है, साथ ही साथ हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए आप बधाई के पात्र हैं। सभी समिति सदस्यों का बहुत बहुत आभार जिन्होंने हमें यह अवसर प्रदान किया।
2.	धर्मेन्द्र कुमार भट्ट सहा. वित्त सलाहकार (का व मं) राजपत्रित पश्चिम रेल्वे साबरमती, अहमदाबाद	उपरोक्त विषयान्तर्गत दिनांक 12.08.2022 को श्री विक्रम साराभाई की जन्म जयंती तथा पी.आर.एल. अहमदाबाद के स्थापना दिवस की वर्षगाँठ पर आयोजित माल्यार्पण, निदेशक महोदय का सम्बोधन, वृक्षारोपण तथा मध्याह्न भोजन के लिए आपका तहे दिल से आभार प्रकट करता हूँ। ऐसे आयोजन हिन्दी के प्रचार- प्रसार में अति सराहनीय है। कार्यक्रम सुचारु व प्रबंधकीय व्यवस्था हेतु शब्द असीमित हैं।
3.	इंद्रनील मिश्रा वैज्ञानिक / इंजीनियर 'एसएफ' अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, इसरो, अहमदाबाद- 380015, गुजरात, भारत	कुल मिलाकर कार्यक्रम बहुत अच्छा है. गुजरात स्तरीय हिंदी निबंध प्रतियोगिता एक उत्कृष्ट पहल है। विक्रम साराभाई जयंती पर समारोह रखना आम तौर पर इस कार्यक्रम को एक शानदार सफलता बनाता है, पीआरएल की प्रयोगशालाओं का दौरा किया और मौलिक भौतिकी की एक झलक पाने के लिए वास्तव में अच्छा लगा जिस पर पीआरएल वैज्ञानिक काम कर रहे हैं। यह मेरे लिए एक बहुत अच्छा अनुभव रहा। उम्मीद करता हूँ कि पीआरएल, अहमदाबाद के वैज्ञानिक भविष्य में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित हों।
4.	जगदम्बा प्रसाद सिंह सैक, अहमदाबाद	आज 12.08.2022 को मुझे गुजरात राज्य हिन्दी निबंध प्रतियोगिता एवं विक्रम जयंती समारोह में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। इस अवसर पर हमें डॉ. विक्रम साराभाई की प्रतिमा पर माल्यार्पण करने का अवसर प्राप्त हुआ। साथ ही साथ पीआरएल की विभिन्न प्रयोगशालाओं की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त हुई। मैं उपर्युक्त कार्यक्रम के लिए आमंत्रित करने के लिए आपका आभारी हूँ। साथ ही साथ हिन्दी विभाग, समारोह समिति के सदस्यों एवं पीआरएल के अन्य सहकर्मियों का आभार प्रकट करता हूँ।
5.	राजदीप केन्द्रीय नमक एवं रसायन संस्थान, भावनगर	संस्थान द्वारा आयोजित गुजरात राज्य स्तरीय हिन्दी निबंध प्रतियोगिता जून, 2022 आयोजन और डॉ. विक्रम साराभाई की जन्म जयंती के अवसर पर पुरस्कार प्रदान करने का कार्यक्रम बहुत ही गर्व का क्षण रहा है। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु सर्व प्रथम मैं माननीय निदेशक महोदय को हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ। तत्पश्चात् प्रतियोगिता आयोजक समिति, श्री लोकेश कुमार साहू साहब, संस्थान के राजभाषा विभाग, श्रीमती रुमकी दत्ता और सभी कर्मचारी गण का आभार व्यक्त कर उनके द्वारा किये गये हिन्दी राजभाषा को प्रोत्साहन कार्य की प्रशंसा व्यक्त करता हूँ। आजादी की अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर आप सभी गणमान्य सज्जनों का हार्दिक आभार और बधाई संदेश।

6.	तनुश्री बेनर्जी कार्यालय- दि न्यू इंडिया एशोरेंस	दिनांक- 12.08.2022 को आयोजित विक्रम साराभाई की 103वीं जन्म जयंती के सुअवसर पर मुझे निमंत्रण करने के लिए मैं पीआरएल के प्रबंधन को हार्दिक धन्यवाद देना चाहती हूँ। पीआरएल के प्रांगण में अपने आप को देखकर मैं बहुत ही ज्यादा उत्साहित एवं भाग्यशाली बोध कर रही हूँ। राज्य स्तरीय आजादी का अमृत महोत्सव में मुझे तृतीय पुरस्कार की प्राप्ति ऐसे अच्छे अवसर पर हुई है कि यह मेरे जीवन के स्मरणीय दिनों में से एक रहेगा। मैं पीआरएल कर्मचारियों के कर्म निष्ठा एवं सेवाभाव से बेहद प्रभावित हुई हूँ और सभी को अपना धन्यवाद एवं आंतरिक शुभेच्छा ज्ञापन करती हूँ। आशा करती हूँ देश का 75वीं अमृत महोत्सव और पीआरएल का 75वीं वर्षगाँठ एक नए युग का प्रारंभ करें जिस तरह पीआरएल देश के प्रगति के लिए एक नींव का पत्थर साबित हुआ है। आशा करती हूँ आनेवाले दिनों में भी यह बहतरीन प्रयास जारी रहेगा। पीआरएल को आगामी भविष्य के लिए ढेरों शुभकामनाएं।
7.	वाघेला भावेशकुमार डी. आई. सी. एम. आर. राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान, अहमदाबाद	आजादी के अमृत महोत्सव, भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला के 75वें स्थापना वर्ष, और विक्रम साराभाई के जन्मजयंती के अनुसंधान में आयोजित राज्य स्तरीय हिन्दी निबंध प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण समारोह में मुझे आमंत्रित करने के लिए मैं भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला का आभार व्यक्त करता हूँ। इस अवसर पर मुझे भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला को गहराई से जानने का मौका मिला, संस्थान के कर्मचारी और अन्य संस्थान से आये सभी प्रतिभागियों से मिलने का मौका मिला इसके लिए मैं आभारी हूँ। पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन बहुत ही अच्छा था, भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला का परिसर भी बहुत अच्छा है। इस अवसर पर भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला को मेरी मुलाकात मेरे लिए हमेशा यादगार रहेगी।
8.	सुश्री विधि जटनीया अधिकारी, केनरा बैंक क्षेत्रीय कार्यालय राजकोट	श्री विक्रम साराभाई की 103वीं जन्म जयंती पर उनको हमारा शत शत नमन। पी आर एल संस्था में प्रवेशते ही एक सकारात्मक ऊर्जा, हरियाली, मोर के आवाज की मधुर गूंज और एक अपनापन का अहसास हुआ। श्री विक्रम साराभाई ने पद्मभूषण, पद्मविभूषण और कई अनेकानेक महान उपलब्धियां हासिल की है, उनकी संस्था में उनके जन्मदिवस पर आना, उन्हें माल्यार्पण और नमन करना मेरे लिए गर्व और खुशी की बात है। आगे हमने वृक्षारोपण किया जो भी बहुत अच्छा लगा। पी. आर. एल संस्था की लेबोरेटरी विजिट और स्टाफ सदस्यों का सहयोग काफी अच्छा लगा। हमारी राजभाषा हिन्दी के प्रयोग, प्रचार-प्रसार के लिए आज भारत भर में बहुत सारे कार्यक्रम हो रहे हैं। आपकी राजभाषा प्रतियोगिता काफी रोचक रही। राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह भी बहुत अच्छा लगा। आपकी राजभाषा की पूरी टीम को हार्दिक धन्यवाद और आगे भी राजभाषा को बढ़ावा देने अपना श्रेष्ठतम देते रहें ऐसी हार्दिक शुभकामनाएं। पी. आर. एल संस्था की आज की मुलाकात बहुत ही यादगार रही, इसके लिए पी आर एल के निदेशक माननीय श्री अनिल भारद्वाज, सभी डिपार्टमेंट हेडस, श्रीमती रुमकी मेम, राजभाषा टीम, लेब में उपस्थित स्टाफ सदस्य गण सभी का बहुत बहुत धन्यवाद। साथ ही मैं मेरी संस्था केनरा बैंक का यहाँ प्रतिनिधित्व कर रही हूँ तो आपसे निवेदन करूंगी कि बैंकिंग सेवाओं या कार्य के लिए पी. आर. एल संस्था और उनके स्टाफ हमारी उत्कृष्ट ग्राहक सेवाओं का लाभ लें और बैंकिंग के लिए हमारे साथ जुड़ें। आइए राजभाषा प्रयोग, प्रचार-प्रसार में हमारा श्रेष्ठतम देते रहें ताकि कवि इकबाल जी की तरह हम भी गर्व से कह सकें, हिन्दी है हम, वतन है हिंदुस्तान हमारा।

पी.आर.एल. परिवार

सौजन्य: प्रशासन अनुभाग

हार्दिक स्वागत

संख्या	नाम	पदनाम	कार्यग्रहण की तिथि
1	डॉ. श्रीमती योगिता कडलग 	असिस्टेंट प्रोफेसर	30 अगस्त 2022
2	डॉ. श्रीमती शुभा शर्मा 	असिस्टेंट प्रोफेसर	01 सितम्बर 2022
3	सुश्री सौम्या कोहली 	वैज्ञानिक/इंजीनियर-एस.सी	04 नवंबर 2022
4	श्री ऋतुज घराटे 	वैज्ञानिक/इंजीनियर-एस.सी	07 नवंबर 2022
5	श्री अनिकेत 	वैज्ञानिक/इंजीनियर-एस.सी	09 नवंबर 2022
6	श्री अभिषेक कुमार 	वैज्ञानिक/इंजीनियर-एस.सी	09 नवंबर 2022

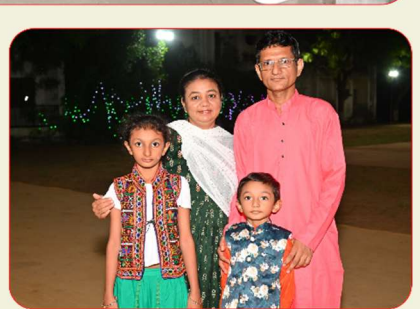
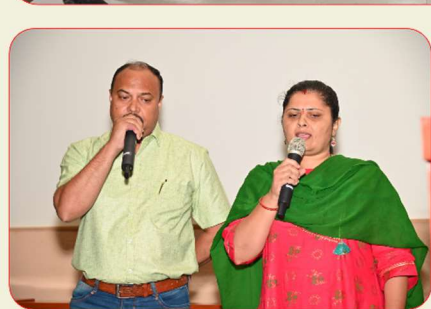
सेवानिवृत्त कर्मचारियों की सूची

संख्या	नाम	पदनाम	सेवानिवृत्त की तिथि
1	प्रो. हिरण्मय मिश्रा	वरिष्ठ प्रोफेसर	31 जुलाई 2022
2	विंग कमांडर (सेवानिवृत्त) विभास सिंह गुप्ता	रजिस्ट्रार	30 नवंबर 2022
3	श्री ए.बी. शाह	वैज्ञानिक/इंजीनियर-एस.जी.	31 दिसंबर 2022

शोक सन्देश

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

संख्या	नाम	पदनाम	देहावसान की तिथि
1	स्वर्गीय श्री के.के. उपाध्याय	कुक्-बी	16 जनवरी 2022
2	स्वर्गीय सुश्री रत्ना ए. पटेल	कंप्यूटर वैज्ञानिक-एस.डी.	24 जनवरी 2022
3	स्वर्गीय श्री ए.एम. पुथावाला	वरिष्ठ तकनीकी सहायक-सी	01 फ़रवरी 2022
4	स्वर्गीय श्री जे.डी. वसावड़ा	लेखा अधिकारी	25 अगस्त 2022
5	स्वर्गीय श्री पी.आर. पटेल	प्रशासनिक अधिकारी	20 दिसंबर 2022



विक्रम संपादक मंडल



संरक्षक

डॉ. अनिल भारद्वाज



संपादक

डॉ. सोम कुमार शर्मा



सह संपादक

श्री जिगर ए. रावल



सदस्य

डॉ. भूषित वैष्णव



सदस्य

डॉ. ऋशितोष कुमार सिन्हा



सदस्य

श्रीमती रुमकी दत्ता



सदस्य

डॉ. नरेन्द्र ओझा



सदस्य

श्री तेजस सरवैया



सदस्य

डॉ. गिरजेश आर. गुप्ता



सदस्य

श्री विवेक कुमार मिश्रा



सदस्य

श्रीमती प्रीति पोद्दार



सदस्य

श्री आशीष जी सवडकर



सहयोजित सदस्य

श्री अभिषेक



सहयोजित सदस्य

श्रीमती हर्षाबेन परमार



सहयोजित सदस्य

सुश्री सोनम जीतरवाल

अनुत्तरदायित्वता: पी.आर.एल. द्वारा प्रकाशित विक्रम पत्रिका के लेख, वक्तव्य, विचार एवं प्रस्तुत सामग्री लेखकों द्वारा प्रदान की गई है और इन सभी की वैधता एवं सत्त्वाधिकार (कॉपीराइट) से संबंधित वैधिक एवं अन्य उत्तरदायित्व लेखकों का है। किसी भी प्रकार के विवाद या वैधिक स्थिति के उल्लंघन में पी.आर.एल. एवं संपादक मंडल उत्तरदायी नहीं होंगे।

आप इस पत्रिका में मुद्रित सामग्री का उपयोग कर सकते हैं। कृपया सौजन्य का उल्लेख अवश्य करें।



पी.आर.एल. मुख्य परिसर, अहमदाबाद



पी.आर.एल. अवरक्त वेधशाला, गुरुशिखर, माउंट आबू



पी.आर.एल. थलतेज परिसर, अहमदाबाद



पी.आर.एल. सौर वेधशाला, उदयपुर

भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला
(भारत सरकार, अंतरिक्ष विभाग की यूनिट)
नवरंगपुरा, अहमदाबाद - 380009
दूरभाष: (079) 26314000
फैक्स: (079) 26314900
ई - मेल: director@prl.res.in
<https://www.prl.res.in>



website-hindi



website-english

Physical Research Laboratory

(A unit of Dept. of Space, Govt. of India)
Navrangpura, Ahmedabad - 380009
Phone: (079) 26314000
Fax: (079) 26314900
E-Mail: director@prl.res.in
<https://www.prl.res.in>

 <https://www.facebook.com/PhysicalResearchLaboratory>

 <https://twitter.com/PRLAhmedabad>

 https://www.youtube.com/c/PRLAhmedabad_webinars



prl-contact



<https://www.kooapp.com/profile/prlahmedabad>



<https://www.linkedin.com/in/prl-ahmedabad-89600122b/>



<https://www.instagram.com/prl1947/>